इटली के एक छोटे से ग्रामांचल के आठ बच्चों ने मिलकर यह पुस्तक लिखी है। इसमें जिन समस्याओं को उठाया गया है, वे समस्याएं विकासशील दुनिया के तमाम देशों के असंख्य अभिभावकों की भी हैं। इटली के गरीब मां-बाप पर इस पुस्तक का जबर्दस्त असर हुआ है। इस पुस्तक की विश्वव्यापी लोकप्रियता का कारण इसकी यही विषयवस्तु है जिसमें गरीब जनता के सरोकार व्यक्त हुए हैं। पुस्तक में इटली के 'मध्यवर्गोन्मुखी' शिक्षाव्यवस्था के नैतिक आधार को चुनौती दी गई है। उस व्यवस्था के अंतर्विरोधों को अत्यंत संयत और व्यवस्थित तरीके से यहां उद्घाटित किया गया है।

साथ ही इस पुस्तक के लेखकों ने वहां की शिक्षाव्यवस्था में सुधार के लिए अत्यंत उपयोगी और रचनात्मक सुझाव भी रखे हैं। इन सुझावों से उनकी गहरी अंतर्दृष्टि का आभास मिलता है।

यह पुस्तक दुनिया के प्रत्येक भाग में रहनेवाले गरीबों को अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति सचेत करती है। इसमें जिक संयत और शालीन क्रोध की अभिव्यक्ति हुई है, यह किसी भी देश या प्रदेश के मजदूर या किसान का क्रोध हो सकता है। उसको साफ दिखता है कि हर स्कूल में मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चे उपेक्षा का शिकार होते हैं। भारत के गरीब अभिभावकों को भी यह पुस्तक बेचैन करेगी। आज की भारतीय शिक्षाव्यवस्था भी क्रमशः उसी दिशा में बढ़ रही है।

पुस्तक आम शिक्षाकर्मियों, राजनीतिकर्मियों, अभिभावकों और प्रबुद्ध नागरिकों के लिए समान रूप से उपयोगी है। विश्व की अनेक भाषाओं में इस पुस्तक के अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं।

बारबियाना स्कूल के आठ बच्चे : बारबियाना किसी स्कूल अथवा कस्बे का नाम नहीं है। इटली के दूरदराज के मुगेलो (तुस्कैनी) इलाके में छोटी-छोटी पहाड़ियों के बीच लगभग बीस खेतिहर परिवारों का यह छोटा-सा गांव है और यहां चौदहवीं सदी का बना एक छोटा-सा चर्च भी है। यह स्थान इटली के प्रसिद्ध नगर फ्लोरेंस से लगभग पचास किलोमीटर की दूरी पर है। इसी गांव के बच्चों को यहां के चर्च के फादर डॉन लोरेंजो मिलानी ने एकत्र कर अपनी रात्रि पाठशाला का श्रीगणेश किया था जो बाद में इस पुस्तक के लेखक बने।

फादर मिलानी के इस स्कूल में वे बच्चे पढ़ने आए थे जिनको सरकारी स्कूलों में या तो अनुत्तीर्ण कर दिया गया था, अथवा वे बच्चे थे जिनकी सरकारी स्कूलों में पढ़ाए जाने वाले विषयों में कतई दिलचस्पी नहीं थी। इन बच्चों को प्रताड़ित और हतोत्साहित किया गया था। इन्हीं बच्चों में से आठ बच्चे इस पुस्तक के लेखक बने। इन बच्चों की उम्र 13 से 15 वर्ष के बीच थी। उनके लेखन में जगह-जगह 'मैं' सर्वनाम का प्रयोग हुआ है। यह इन सभी आठ बच्चों के समवेत 'मैं' का पर्याय है।

सरला मोहनलाल (अनुवादक) : आगरा (1929) में जन्म। आगरा विश्वविद्यालय से बी.ए. और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से इतिहास में एम.ए. की उपाधि पाई। प्रारंभ से ही अनुवाद कार्य में विशेष दिलचस्पी रही है और अनेक पुस्तकों का अंग्रजी से हिंदी में अनुवाद किया जिनमें कुछ उल्लेखनीय पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं : मांटेसरी की पुस्तक, 'दि ऑबजार्वेट माइंड', तथा गैरथ बी. मैथ्यूज की पुस्तक डायलाग विद द चिल्ड्रेन, जे.पी. नायक की पुस्तक 'इक्वालिटी क्वालिटी एंड क्वांटिटी : दि इल्यूसिव ट्रैंगिल इन इंडियन एजुकेशन' का हिंदी अनुवाद लोकजुंबिश परिषद (राजस्थान) के लिए किया है। विकास अध्ययन केंद्र जयपुर तथा समाज कार्य अनुसंधान केंद्र तिलोनिया से जुड़ी हैं।

आवरण : जे.एम.एस. रावत

मूल्य 50.00

ISBN 81-86684-40-9

ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड

G-82, विजय चौक, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092

शिक्षाशास्त्र के नए क्षितिज

अध्यापक के नाम पत्र

बारबियाना स्कूल के छात्र

अनुवादक

सरला मोहनलाल

अध्यापक के नाम पत्र

लेखक

बारबियाना स्कूल के आठ बच्चे जिनकी
औसत उम्र पंद्रह वर्ष है

अनुवादक
सरला मोहनलाल

ग्रंथ शिल्पी

© सरला मोहनलाल
प्रथम हिन्दी संस्करण 1996
पुनर्मुद्रण 1996, 1999, 2001
ISBN. 81-86684-42-5

लेखकों की ओर से

यह पुस्तक अध्यापकों के लिए नहीं अभिभावकों के लिए लिखी गई है। इसमें उनको संगठित होने का आह्वान किया गया है।

इसको देखने पर पहली नजर में पाठक को ऐसा लग सकता है कि इस पुस्तक का लेखक कोई एक बच्चा है लेकिन वास्तविकता यह है कि इस पुस्तक को बारबियाना के हम आठ बच्चों ने मिल कर लिखा है।

स्कूल के हमारे अन्य साथियों ने इस काम में हर इतवार को हमारी मदद की है क्योंकि अब वे शेष दिन काम पर जाते हैं।

सबसे पहले हम फादर मिलानी को धन्यवाद देना चाहेंगे जिन्होंने हम सबको प्रशिक्षित किया है और लेखन के नियमों से हमें परिचित कराया है। हम लोगों ने जब यह पुस्तक लिखी तो हमारा दिशानिर्देश भी उन्होंने किया है।

इसके अलावा इस काम में कई प्रकार से अनेक लोगों ने हमारी मदद की है :

कुछ अभिभावकों ने हमारे लेखन को सरल तरीके से प्रस्तुत करने में हमारी मदद की है।

इस पुस्तक के लिए आंकड़े एकत्र करने में बहुत से लोगों ने हमारी सहायता की है, ऐसे लोगों में कुछ सचिव (टाइपिस्ट), अध्यापक, निरीक्षक, विद्यालयों के प्राचार्य, शिक्षा मंत्रालय के अधिकारी और इटली के 'केंद्रीय सांख्यिकी संस्थान' (सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ स्टैटिस्टिक्स) में काम करने वाले लोग हैं।

ट्रेड यूनियनों के अधिकारीगण, समाचार पत्रों में काम करने वाले लोग, नागरिक प्रशासन से जुड़े अधिकारी, इतिहासकार, सांख्यिकी विशेषज्ञ, न्यायविद आदि लोगों से हमें इस काम के लिए कई तरह की सूचनाएं मिलीं हैं।

विषयानुक्रम

प्रस्तावना
कृष्ण कुमार
(ix)

भाग एक
अनिवार्य स्कूलों में विद्यार्थियों को फेल नहीं करना चाहिए
1

भाग दो
मजिस्ट्रेल में आप भी फेल करते हैं पर...
51

भाग तीन
दस्तावेजों का संकलन
107

प्रस्तावना

खेतों में काम करने वाले आठ इतालवी लड़कों की यह लंबी चिट्ठी शिक्षा के साहित्य में एक स्थायी जगह बना चुकी है। कोई तीन दशक पहले लिखी गई यह चिट्ठी इस बीच दुनिया के कई देशों में पढ़ी जा चुकी है। हमारे समाज के लिए इस चिट्ठी की प्रासंगिकता इतनी अधिक है कि यदि इसमें आए हुए इतावली संदर्भ हटा दिए जाएं और आंकड़े भी भारतीय कर दिए जाएं तो हमें इस चिट्ठी का स्रोत अपने ही किसी गांव में तलाशने और उन बच्चों से मिलने की इच्छा होगी जिन्होंने यह निराला और मार्मिक काम किया है। पर रूपांतरण के बगैर भी यह दस्तावेज हमें अपने शिक्षातंत्र को समझने के लिए ऐसी अंतर्दृष्टि देता है जो शिक्षा के समाजशास्त्र की अनेक पुस्तकें और रिपोर्टें पढ़ने से भी काफी मुश्किल से मिलेगी। बात यह है कि इन बच्चों ने जो कुछ लिखा है, अपने अनुभव से लिखा है और पाठक की समझ को पुष्ट करने के लिए जिन आंकड़ों का उपयोग किया है उन्हें जमा करने और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने का काम भी अपनी सूझबूझ से किया है। इन बच्चों की शैली और प्रस्तुति में ऐसी ताजगी और संप्रेषण की सामर्थ्य है जो शिक्षा संबंधी लेखन में मुश्किल से ही देखने को मिलती है।

जिस सवाल के इर्दगिर्द यह दस्तावेज घूमता है, वह सवाल सामाजिक स्पर्धा या चयन का है। हैसियत और ताकत से जुड़े कामों के लिए आधुनिक समाजों में निरंतर चलने वाली प्रतियोगिता सीधे-सीधे शिक्षा की व्यवस्था से जुड़ी है। प्रतियोगिता कितनी न्यायसंगत है, यह इस बात पर निर्भर है कि शिक्षा की प्रक्रिया स्वयं कितनी निष्पक्ष है। बारबियाना के बच्चों ने तमाम साक्ष्यों की मदद से सिद्ध किया है कि शिक्षा की प्रक्रिया निष्पक्ष नहीं है। उनके तर्क और प्रमाण दिखाते हैं कि शिक्षा का सामाजिक चरित्र संपन्न वर्गों की जीवन-शैली और ताकत द्वारा गढ़ा गया है। स्कूल का पाठ्यक्रम और कक्षा का दैनिक कार्यक्रम संपन्न वर्गों के स्वार्थों को अक्षुण्ण रखने की सूक्ष्म, लगभग अदृश्य भूमिका निभाता है। अध्यापक का स्वाभाविक

व्यवहार इस भूमिका में रचा-पचा रहता है। अध्यापकों को प्रायः मालूम ही नहीं होता कि वे सामाजिक अन्याय के औजार बने हुए हैं।

संयोग की बात है कि इटली के ही एक बड़े चिंतक ग्राम्शी ने अध्यापक की इस बेबसी को कठोर शब्दों में चित्रित करते हुए लिखा था कि अध्यापक तो राज्य का वेतनभोगी एजेंट है। ग्राम्शी की बात इस आशा के लिए जगह नहीं छोड़ती कि अध्यापक की भूमिका राज्य का सामाजिक चरित्र परिवर्तित किए बगैर नहीं बदली जा सकती। इस पुस्तक के लेखक बच्चे सोचते हैं कि अध्यापक की भूमिका बदल सकती है, बशर्ते कि अध्यापक स्वयं इस भूमिका को पहचान ले। इस निगाह से देखें तो यह किताब अध्यापकों को आत्मालोचन के लिए मजबूर करने के इरादे से लिखी गई है। अध्यापक बनने की प्रक्रिया में शामिल युवा लोग और बच्चे की मार्फत अध्यापक से रोज रूबरू होने वाले माता-पिता भी इसे पढ़कर शिक्षा की व्यवस्था को बहुत गहराई से समझ सकते हैं। लेकिन मुझे यह आशा भी है कि हिंदी में इस किताब के आ जाने का असर शिक्षा की नौकरशाही पर भी पड़ेगा। आखिर हमारी व्यवस्था में शिक्षातंत्र के अधिकारियों की भूमिका अध्यापक की भूमिका से कम नहीं है।

शिक्षा विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
17 जनवरी, 1996

कृष्ण कुमार

भाग एक

अनिवार्य स्कूलों में विद्यार्थियों को फेल नहीं करना चाहिए

आदरणीय गुरुजी,

आप मुझे या मेरे नाम को भूल गई होंगी। आपने मेरे जैसे न जाने कितनों को फेल किया है।

परंतु मैं अक्सर आपको, और दूसरी अध्यापिकाओं को, उस संस्था को जिसे आप स्कूल के नाम से पुकारते हैं, और उन लड़कों को जिन्हें आप फेल करती हैं, याद करता हूं।

आप फेल करके हम लोगों को सीधे खेतों में या फैक्ट्रियों में धकेल कर हमें बिलकुल भूल जाती हैं।

संकोच : दो वर्ष पहले जब मैं माध्यमिक कक्षा में था, तब आपको देखकर मुझे बहुत डर लगता था। सच पूछिए तो मैं शुरू से ही थोड़ा झेंपू किस्म का हूं। जब मैं बहुत छोटा था तो मैं अपनी नजर सदा जमीन की ओर रखता था। मैं दीवार के किनारे सटा हुआ चलता था, शायद यह मेरे या मेरे परिवार की, एक प्रकार की बीमारी है। मेरी मां भी इसी प्रकार की है कि तार देखते ही घबरा जाती है। मेरे पिता सब कुछ सुनते और समझते हैं, पर बोलते कम हैं।

बाद में मैंने सोचा कि झेंपना शायद हमारे पहाड़ी समुदाय का रोग है। मैदानी इलाकों के किसानों में कहीं अधिक आत्मविश्वास होता है। शहर के मजदूरों की तो बात ही छोड़िए।

ध्यान से देखने पर अब मुझे पता चला कि सारी महत्वपूर्ण नौकरियां तथा संसद की सारी सीटें, बड़े घर के लड़कों को मिलती हैं—मजदूर देखते ही रह जाते हैं।

अतः मजदूर भी हम लोगों की तरह हैं। गरीब लोगों का संकोच बहुत प्राचीन है और मैं उसके रहस्य को समझा नहीं सकता, यद्यपि मैं स्वयं गरीबी से घिरा हुआ हूं। शायद यह न तो किसी प्रकार की कायरता है और न किसी प्रकार की वीरता। यह केवल आत्माभिमान की कमी है।

पहाड़ के लोग

सबके लिए उपलब्ध स्कूल : प्रथम पांच वर्षों में राज्य द्वारा मुझे निम्न कोटि की शिक्षा दी गई। एक कमरे में पांच कक्षाएं लगती थीं। राज्य से प्राप्य मेरी शिक्षा का यह पांचवा भाग था।

यही प्रणाली अमेरिका में भी प्रयोग की जाती है, जिसके द्वारा गोरे और कालों का भेद उत्पन्न किया जाता है—शुरू से ही गरीबों के लिए घटिया किस्म के स्कूलों को उपलब्ध कराना।

अनिवार्य स्कूल : इन पांच वर्षों की प्राथमिक शिक्षा के बाद मुझे तीन वर्ष की और शिक्षा का अधिकार था। सच तो यह कि संविधान के अनुसार यह शिक्षा प्राप्त करना मेरे लिए बाध्यकारी था। परंतु मेरे गांव विकियों में अभी तक कोई माध्यमिक स्कूल नहीं था। बोरगो जाना काफी कठिन था। कुछ लोगों ने वहां जाने का प्रयास किया था और उसके लिए काफी धन भी खर्च किया था, परंतु उन्हें फेल करके कुत्तों की तरह दुत्कार दिया गया था।

मेरे परिवार को मेरी अध्यापक ने यही कहा कि मेरे ऊपर पैसा खर्च करना व्यर्थ है। 'इसे तो खेत में काम करने के लिए भेज दो। यह पढ़ नहीं सकता'—उसने मेरे पिता से कहा।

मेरे पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया। वे सोच रहे थे, 'यदि हम बारबियाना में रहते, तो यह अवश्य पढ़ाई में सफलता प्राप्त करता।'

बारबियाना : बारबियाना में सभी लड़के स्कूल जाते थे। यह पादरी का स्कूल था। प्रातः तड़के से अंधेरा होने तक—चाहे गरमी हो या जाड़ा। वहां कोई लड़का ऐसा नहीं था जो पढ़ाई के लिए 'अयोग्य' समझा गया हो।

परंतु हम तो दूसरे गांव में रहते थे जो बारबियाना से काफी दूर था। मेरे पिता तो सारी आशा छोड़ चुके थे। पर तभी उन्हें सान मारटिनो के एक लड़के का पता चला जो बारबियाना जाने वाला था। मेरे पिता ने हिम्मत दिखाई और वहां जाकर सब बातें पता करने का निश्चय किया।

जंगल : जब वे वापस लौटकर आए तो मैंने देखा कि वे मेरे लिए एक टार्च, एक खाना रखने का डिब्बा और बर्फ पर चलने के लिए जूते खरीद कर लाए हैं।

पहले दिन वे मुझे स्वयं अपने साथ लेकर गए। हमें दो घंटे रास्ते में लगे

क्योंकि हम लोग हंसिया से रास्ता साफ करते जा रहे थे। बाद में मैं एक घंटे से थोड़े ही अधिक समय में इस रास्ते को पार करना सीख गया।

इस पूरे रास्ते में मुझे केवल दो मकान मिलते थे। उनकी खिड़कियां टूटी हुई थीं और वे हाल ही में खाली करके छोड़ दिए गए थे। कभी-कभी रास्ते में सांप को देखकर मैं भागने लगता था या एक पागल आदमी के कारण भी जो एक पहाड़ी पर अकेला रहता था और दूर से मेरे ऊपर चिल्लाता था।

मैं तब ग्यारह वर्ष का था। आप होतीं तो डर के मारे आपके तो प्राण ही निकल जाते। आपने देखा—हम सब अपने-अपने ढंग से डरपोक हैं। अतः जहां तक डरने का संबंध है, हम बराबर ही हैं।

परंतु हम बराबर तभी हो सकते हैं जब हम दोनों अपने घर पर ही रहें। या आप हमारे घर पर आकर हमारी परीक्षा लें। परंतु आपको तो ऐसा करना नहीं पड़ता है।

मेज : जब मैं बारबियाना पहुंचा तो वह स्कूल की तरह नहीं लगता था। न तो कोई अध्यापक था, न कोई डेस्क था, न काली तख्ती थी और न कोई बेंच थी। बस बड़ी-बड़ी मेजें रखी थीं जिनके चारों ओर हम लोग पढ़ते थे और वहीं पर खाते भी थे।

प्रत्येक किताब की बस एक प्रति थी। सब लड़के उसे घेरकर खड़े हो जाते थे। इस पर ध्यान ही नहीं जाता था कि उन्हीं लड़कों में से एक थोड़ा आयु में बड़ा था और वही पढ़ा रहा था।

इन पढ़ाने वाले 'अध्यापकों' में से सबसे बड़ा सोलह वर्ष का था। सबसे छोटा बारह वर्ष का था और उसे देखकर मेरा मन प्रशंसा से भर उठा। मैंने शुरू से ही तय कर लिया कि मैं भी आगे चलकर पढ़ाऊंगा।

वहां पर भी कई प्रकार की कठिनाइयां थीं। अनुशासन और झगड़े भी थे। कभी-कभी लगता था कि यहां लौटकर न आया जाए।

प्रिय बालक : एक लड़का था जो अति साधारण परिवार का था। उसकी बुद्धि मंद थी और वह आलसी था। परंतु उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था मानो वही अध्यापकों का प्रिय पात्र हो। जैसे आप लोग अपनी कक्षा में सर्वोत्तम विद्यार्थी से व्यवहार करती हैं, वैसा उसके साथ किया जाता था। ऐसा प्रतीत होता था मानो स्कूल उसी के लिए बनाया गया है। जब तक वह नहीं समझ लेता था, दूसरे लड़के आगे नहीं पढ सकते थे।

छुट्टी : वहां कभी छुट्टी नहीं होती थी—इतवार को भी नहीं। परंतु इससे हमें कोई परेशानी नहीं थी। छुट्टी में हमें मज़दूरी करनी पड़ती थी जो स्कूल जाने से अधिक बुरा होता। परंतु यदि वहां पर कोई मध्य वर्ग के सज्जन आते थे तो वे इस बात का बतंगड़ बनाते थे।

एक बार एक बड़े प्रोफेसर बोले, 'फादर मिलानी, आपने कभी बच्चों को शिक्षित करने की कला का अध्ययन नहीं किया है। डाक्टर पोलियान्स्की ने लिखा है कि बच्चों के लिए खेलकूद का बहुत शारीरिक, मनोवैज्ञानिक...'

प्रोफेसर साहब हम लोगों की ओर देखकर नहीं बोल रहे थे। विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, जो शिक्षा का विषय पढ़ाते हैं, उन्हें स्कूल के बच्चों की ओर देखने की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें तो उसके बारे में सब कुछ रटा हुआ है, जैसे हमें पहाड़े रटे हुए हैं।

जब वे चले गए तो लूसियो ने, जिसके घर पर 36 गाएं हैं, कहा, 'गाय का गोबर उठाने से तो स्कूल आना कहीं अच्छा है।'

दुनिया के किसान : आपके स्कूलों के सामने वाले दरवाजों पर इस वाक्य को लिखवाया जा सकता है। लाखों किसानों के बच्चे इसका समर्थन करने को तैयार हैं। आप कहते हैं कि लड़कों को स्कूल बिलकुल अच्छा नहीं लगता है और उन्हें खेलने से प्रेम है। हम किसानों से आपने नहीं पूछा, लेकिन लाखों-करोड़ों हम जैसे हैं। संसार के प्रत्येक दस बच्चों में से छह लूसियो की ही तरह सोचते हैं। बाकी के चार क्या चाहते हैं, यह हम नहीं जानते।

आपकी सारी संस्कृति इसी पर आधारित है—मानो आप ही सारी दुनिया हैं।

बच्चे—अध्यापक के रूप में : एक वर्ष बाद मैं अध्यापक बन गया—हफ्ते में साढ़े तीन दिन के लिए। मैं माध्यमिक कक्षाओं के प्रथम वर्ष के विद्यार्थीयों को भूगोल, गणित और फ्रेंच भाषा पढ़ाता था। एटलस देखने के लिए, या सही-बटे के सवालों को समझाने के लिए किसी डिग्री की आवश्यकता नहीं होती।

यदि पढ़ाने में कभी मैंने कोई गलतियां कीं तो उससे कोई बहुत बड़ा नुकसान नहीं हुआ। लड़कों को तो उससे राहत ही मिली। हम लोग आपस में मिलकर उनका हल निकालते थे। बिना किसी चिंता और डर के घंटों निकल जाते थे। जिस ढंग से मैं अपनी कक्षा चलाता था, वैसे आप नहीं चला सकतीं।

राजनीति या स्वार्थ : अध्यापन के साथ-साथ मैं कई बातें भी सीख रहा था, जैसे—दूसरों की समस्याएं भी मेरे समान हैं। यदि उन समस्याओं से हम दोनों साथ-साथ पार पा लें तो यह अच्छी राजनीति कही जाएगी। परंतु केवल अपनी ही समस्याओं का निदान स्वार्थ होगा।

ऐसा नहीं है कि मेरे अंदर स्वार्थ नहीं था। परीक्षा के दिनों में मुझे इच्छा होती थी कि ये छोटे बच्चे भाड़ में जाएं और मैं अपनी पढ़ाई करूं। मैं भी आपके विद्यार्थियों की तरह एक लड़का था परंतु बारबियाना में ऐसी बात मैं सोच भी नहीं सकता था और न दूसरों से कह सकता था। मुझे इच्छा न होने पर भी उदार होना पड़ता था।

आपको शायद यह एक बहुत छोटी बात प्रतीत हो परंतु आप तो अपने विद्यार्थियों के लिए इतना भी नहीं करतीं। आप उनसे किसी चीज के लिए नहीं कहतीं। आप तो उन्हें केवल अपने बूते पर आगे बढ़ने को छोड़ देती हैं।

शहर के लड़के

विकृति : जब विकियो में माध्यमिक स्कूल प्रारंभ हुआ तो शहर के कुछ लड़के बारबियाना पढ़ने आए। ये वही लड़के थे जो वहां फेल हो गए थे। उनमें किसी प्रकार का संकोच नहीं था, परंतु उनमें दूसरी प्रकार की विकृतियां थीं।

जैसे उनके विचार से खेलकूद और छुट्टियां उनके अधिकार हैं और स्कूल जाना एक त्याग है। उन्होंने यह कभी नहीं सुना था कि स्कूल कुछ सीखने के लिए जाते हैं और स्कूल जाना एक सौभाग्य होता है।

उनके अनुसार अध्यापक उनसे मोर्चा लेने के लिए थे और अध्यापकों को बुद्धू बनाना ही उनका काम था। उन्होंने नकल करने का प्रयास भी किया। उन्हें इस बात पर विश्वास करने में बहुत समय लगा कि यहां नंबर नहीं दिए जाते।

यौन भाव : यौन शिक्षा का विषय आने पर भी उनका यही छल-कपट चलता था। वे सोचते थे कि उन्हें इस विषय पर फुसफुसा कर बात करनी चाहिए। यदि वे किसी मुर्गे और मुर्गी को साथ-साथ देख लेते तो एक-दूसरे को ऐसे इशारे करते थे मानो कोई व्यभिचार देख रहे हैं।

शुरू में तो यौन शिक्षा ही ऐसा विषय था जिससे उनकी रोचकता सजग हो उठती थी। स्कूल में शरीर विज्ञान की एक पुस्तक थी। वे कमरा बंद करके, कोने में जाकर उसे पढ़ते थे। उसके दो पन्ने तो बिलकुल ही जीर्ण-शीर्ण हो गए।

बाद में धीरे-धीरे उन्हें पता चला कि अन्य पृष्ठों में भी रोचक बातें लिखी हैं और कुछ समय बाद तो उन्हें इतिहास में भी मजा आने लगा।

कुछ तो आज भी नई-नई बातें सीख रहे हैं। अब उन्हें सभी विषयों में रुचि आने लगी है। अब वे छोटे बच्चों को पढ़ाते हैं और हमारी ही तरह बन गए हैं। परंतु कुछ अन्य को आपने फिर से जड़वत कर दिया है।

लड़कियां : शहर से लड़कियां कभी बारबियाना पढ़ने नहीं आईं। शायद इसका कारण यह हो कि रास्ता बहुत खतरनाक था। या हो सकता है कि वे अपने मां-बाप की मनोवृत्ति के कारण नहीं आती हों। मां-बाप का विश्वास था कि लड़कियों को अपने जीवन में दिमाग की क्या जरूरत है ? पुरुष वर्ग यह नहीं चाहता कि महिलाओं में भी अक्ल हो।

यह भी एक प्रकार का जातिवाद है। परंतु गुरुजी, इस विषय पर मैं आपको दोषी नहीं ठहरा सकता। आप अपनी छात्राओं को, उनके माता-पिता की अपेक्षा अधिक महत्व देती हैं।

सेंड्रों और गियात्री : सेंड्रों पंदरह वर्ष का, पांच फुट आठ इंच लंबा युवक था जो हीन भावना से ग्रस्त था। उसके अध्यापकों ने उसे बेवकूफ घोषित कर दिया था। वह माध्यमिक कक्षाओं के प्रथम वर्ष में दो बार फेल हो चुका था और यह उसका तीसरा वर्ष था।

गियात्री चौदह वर्ष का था। वह पढ़ने में ध्यान नहीं देता था और पढ़ाई से दूर भागता था। उसके अध्यापक कहते थे कि वह काम से जी चुराता है। शायद एक हद तक उनका ख्याल गलत नहीं था। परंतु इसका अर्थ यह तो नहीं कि उसे अपने रास्ते से हटा कर वे छुट्टी पा जाएं।

उन दोनों में से कोई भी तीसरी बार उसी कक्षा में फिर पढ़ने को तैयार नहीं था। वे पढ़ाई छोड़ कर नौकरी की खोज में जाने की स्थिति में थे। वे हम लोगों के पास आए क्योंकि हम इस बात पर कोई ध्यान नहीं देते कि कोई कितने नंबरों से फेल हुआ है और प्रत्येक लड़के को उसकी आयु के हिसाब से उपयुक्त कक्षा में लेते हैं।

सेंड्रों को माध्यमिक शिक्षा के तीसरे वर्ष में लिया गया और गियात्री को दूसरे वर्ष में। अपने संपूर्ण स्कूली जीवन में पहली बार उनके साथ ऐसा व्यवहार किया गया जिससे वे संतुष्ट थे। सेंड्रों इसे आजीवन नहीं भूलेगा। गियात्री इसे यदा-कदा याद कर लेता है।

छोटी लड़की की कहानी : जिस दूसरी बात से उन्हें संतोष मिला वह था स्कूल के पाठ्यक्रम में परिवर्तन।

आप उनसे यह प्रयास कराती रहीं कि वे आदर्श की पराकाष्ठा पर पहुंच जाएं। यह व्यर्थ का प्रयास था, क्योंकि लड़का एक ही बात बार-बार दोहरा कर ऊब जाता है और इस दौरान उसकी उम्र बढ़ती जाती है। परिस्थिति वहीं रहती है परंतु बढ़ती उम्र से उनमें बदलाव आ जाता है। अतः यह सब पढ़ाई उसे बचकानी मालूम पड़ने लगती है।

जैसे प्रथम वर्ष में आप विद्यार्थियों को दो या तीन बार 'छोटी लड़की की कहानी' पढ़कर सुनाती हैं। परंतु दूसरे और तीसरे वर्ष में आप उन्हें वयस्कों के लिए उपयुक्त किताबें पढ़ाती हैं।

गियात्री व्याकरण में बहुत साधारण गलतियां करता था। परंतु उसे वयस्क संसार के बारे में बहुत-सी बातें मालूम थीं। उसे नौकरियों के बारे में, परिवार के संबंधों के बारे में और अपने शहर के रहने वालों के जीवन के बारे में काफी जानकारी थी। कभी-कभी शाम को वह अपने पिता के साथ कम्युनिष्ट पार्टी की सभा में भी जाया करता था या शहर की सभाओं में भाग लेता था।

आप तो उसे ग्रीक और लैटिन पढ़ाती रहीं, जिससे वह इतिहास से नफरत करने लगा। लेकिन हमने उससे दूसरे महायुद्ध के बारे में बातचीत की और वह घंटों ध्यानपूर्वक सुनता रहा।

आप चाहते थे कि अभी एक वर्ष तक और वह इटली का भूगोल पढ़ता रहे। ऐसा हो सकता था कि वह अपनी स्कूली शिक्षा समाप्त कर देता और उसे संसार के अन्य देशों का नाम भी नहीं पता चलता। आप उसका कितना नुकसान करते ? आपने तो उसे अखबार पढ़ने के लायक भी नहीं रखा।

तुम ठीक से बोल भी नहीं सकते : कुछ ही समय में सेंड्रों सब बातों में रुचि लेने लगा। सवेरे के कई घंटे वह तीसरे वर्ष के पाठ्यक्रम पढ़ने में लगाता। (यदि वह फेल न होता तो वह इसी कक्षा में होता) वह जिन चीजों को नहीं जानता था उन्हें लिख लेता था। रात में वह प्रथम और द्वितीय वर्ष की पुस्तकें पढ़ता था। इस 'मंद बुद्धि' बालक ने जून में आपकी परीक्षाएं दीं और आपको उसे पास करना पड़ा।

गियात्री को अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। आपके पास से जब वह हम लोगों के पास आया था तब वह निरक्षर था और उसे किताबों से चिढ़ थी।

हमने उसके साथ बहुत मेहनत की। हम कम से कम कुछ विषयों में उसकी

रुचि जागृत करने में सफल हुए, यद्यपि सब विषयों में नहीं। आप अध्यापकों से हम इतना चाहते थे कि आप उसे तीसरे वर्ष की परीक्षा में पास कर दें और उसे प्रोत्साहित करें। शेष विषयों के प्रति भी उसकी रुचि जागृत करने की हम जिम्मेदारी ले सकते थे।

परंतु ऐसा नहीं हुआ। एक अध्यापक ने उससे मौखिक परीक्षा के समय कहा, 'तुम गैरसरकारी स्कूल में क्यों जाते हो ? तुम्हें ठीक से बोलना तक तो आता नहीं है ?''

हमें भी मालूम है कि गियात्री को ठीक से बोलना नहीं आता। तो क्या इसको डंके की चोट पर कहें और शोक मनाएं ? और गुरुजी, आपने तो पिछले वर्ष उसे स्कूल से ही बाहर कर दिया था। आपके इलाज भी कमाल के हैं!

भाषा के आधार पर भेद नहीं किया जाए : हम पहले यह निश्चय कर लें कि सही भाषा क्या है। भाषा का निर्माण गरीब लोग करते हैं और वे सदा नवीन बनाते रहते हैं। अमीर लोग उसे एक निश्चित ठोस रूप दे देते हैं ताकि उससे जरा भी भिन्न बोलने वाले को वे अपने से अलग कर सकें। या उसके कारण वे परीक्षा में बच्चों को फेल कर सकें।

आपका कहना है कि पियरीनो, जो बड़े बाप का बेटा है, बहुत अच्छा लिखना जानता है। निस्संदेह वह आपकी ही भाषा बोलता है। वह व्यवस्था का एक अंग है।

इसके विपरित गियात्री जो भाषा बोलता और लिखता है, वह वही भाषा है जो उसका बाप बोलता है। जब गियात्री छोटा बच्चा था तो वह रेडियो को 'राडा' बोलता था। उसका पिता उसे सिखाता था कि 'राडा' नहीं उसे रेडियो* बोलना चाहिए।

यदि गियात्री अब 'रेडियो' भी बोलना सीख ले तो अच्छा ही होगा पर यदि यह संभव हो तब। समय के साथ आपकी भाषा सीखने में उसे सुविधा हो सकती है। परंतु इस बीच इसके कारण उसे स्कूल से न निकाल दीजिए।

संविधान में लिखा है, 'भाषा की भिन्नता के आधार पर नागरिकों के मध्य भेदभाव नहीं किया जाएगा।' यह प्रावधान बनाते समय संविधान बनाने वालों का ध्यान गियात्री जैसे लोगों पर ही रहा होगा।

आज्ञाकारिणी कठपुतली : परंतु आपकी दृष्टि में व्याकरण का महत्व संविधान से भी अधिक है। गियात्री फिर लौट कर नहीं आया—हमारे पास भी नहीं।

* अरेडियो—वहां की ग्रामीण भाषा में रेडियो को अरेडियो बोलते हैं।

परंतु हम उसे भुला नहीं पाते। हम दूर से उसे देख रहे हैं। हमने सुना कि अब वह गिरजाघर नहीं जाता है और राजनीतिक सभाओं में भी अब नहीं जाता। वह एक फैक्ट्री में झाड़ू लगाता है। अपने खाली समय में वह जड़वत वहीं जाता है जिसका उस समय फैशन हो—शनिवार को नाचना और रविवार को खेलकूद के मैदान में।

परंतु गुरुजी, आप, जो उसकी अध्यापक रह चुकी हैं, उसका अस्तित्व ही भूल गई होंगी।

अस्पताल : हमारा आपसे पहला संपर्क यहीं पर हुआ—उन लड़कों के द्वारा जिन्हें आप अपने स्कूल में नहीं रखना चाहती थीं।

हमें भी यह जल्दी ही पता चल गया कि ऐसे लड़कों के साथ स्कूल चलाना कितना कठिन है। कई बार मन में बड़ी तीव्र इच्छा होती है कि इनसे पीछा छुड़ाओ। परंतु यदि हम उन्हें हटा दें तो फिर यह स्कूल स्कूल नहीं रह जाएगा। यह ऐसा अस्पताल बन जाएगा, जो स्वस्थ व्यक्तियों की तो देखभाल करता है और रोगियों की अवहेलना ! यह वर्तमान भिन्नताओं को और सुदृढ़ करने का साधन बन जाता है और उनके बीच की खाई इतनी गहरी बना देता है जिससे वे आपस में कभी नहीं मिल सकते।

क्या आप इसके लिए तैयार हैं ? यदि नहीं, तो उन्हें स्कूल में वापस ले लीजिए। आग्रहपूर्वक बुला कर एक बार फिर शुरू से प्रयास कीजिए। चाहे लोग आपको सनकी ही कहें।

जातिवाद को बढ़ाने में सहायक बनने से तो सनकी कहलाना ही अधिक अच्छा है।

परीक्षाएं

अच्छे लेखन के नियम : बारबियाना में तीन वर्ष पढ़ने के बाद, जून में मैंने माध्यमिक डिप्लोमा के लिए व्यक्तिगत छात्र के रूप में परीक्षा दी। निबंध का शीर्षक था—'रेल के डिब्बों के मुख से।'

बारबियाना में मैंने सीखा था कि अच्छे लेखन के नियम इस प्रकार हैं : 'विषय महत्वपूर्ण होना चाहिए जो अधिकांश के लिए किसी प्रकार से उपयोगी हो; और यह स्पष्ट होना चाहिए कि लेख किसके लिए है। पहले सारी उपयोगी सामग्री एकत्रित कर लो; विषय को विकसित करने के लिए एक तर्कसंगत रूपरेखा तैयार करो; व्यर्थ का एक भी शब्द उपयोग में न लाओ; केवल उन्हीं

शब्दों का प्रयोग करो जो बोलचाल की भाषा में प्रयोग किए जाते हैं। अपने ऊपर समय की पाबंदी न लगाओ।'

मैं और मेरे स्कूल के साथी इसी रीति से यह पत्र लिख रहे हैं। मुझे आशा है कि जब मैं एक अध्यापक बन जाऊंगा तो मेरे छात्र भी इसी रीति से अपने लेख लिखेंगे।

आपके हाथ में छूरी : परंतु मुझे जो निबंध का विषय मिला था, उसके लिए क्या मैं लेखन के इन सरल और विश्वस्त नियमों का उपयोग कर सकता था? यदि मैं ईमानदारी निभाना चाहता तो मुझे अपना कागज कोरा ही छोड़ देना चाहिए था। या फिर मैं विषय की या उसे सोचने वाले की आलोचना करता।

परंतु मैं चौदह वर्ष का था और पहाड़ी प्रदेश का रहने वाला था। शिक्षकों के स्कूल में जाने के लिए मुझे माध्यमिक शिक्षा के डिप्लोमा की आवश्यकता थी। मेरा यह निबंध ऐसे पांच या छह व्यक्तियों के हाथ में जाएगा जो मेरे जीवन से और उन चीजों से जिन्हें मैं प्यार करता और जानता हूं, नितांत अपरिचित हैं। ऐसे लापरवाह लोगों के हाथ में मेरा गला काटने की छुरी होगी।

मैंने कोशिश की कि मैं उसी तरह लिखूं जैसा आप चाहते हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि मुझे सफलता नहीं मिली। निस्संदेह आपके छात्रों ने कहीं अच्छा लिखा होगा क्योंकि वे शब्दों के आडंबर और नीरस बातों को लिखने में पारंगत हैं।

फंसाने की मनोवृत्ति : फ्रेंच की परीक्षा में कई बेतुकी बातें थीं। परीक्षाओं को समाप्त कर देना चाहिए। यदि आप परीक्षा लें भी, तो कम से कम वे निष्पक्ष तो होनी चाहिए। कठिन प्रश्नों का चुनाव उसी अनुपात में होना चाहिए जिसमें वे वास्तविक जीवन में सामने आते हैं। यदि आप बार-बार कठिन प्रश्न ही चुन कर देंगे तो इसके अर्थ हैं कि आप छात्रों को फंसाने के लिए जाल डाल रहे हैं। मानो आपका छात्रों से युद्ध हो रहा है।

आप ऐसा क्यों करते हैं ? क्या इससे विद्यार्थियों को लाभ होता है ?

उल्लू, पत्थर और पंखे : नहीं, इनसे विद्यार्थियों को कोई लाभ नहीं होता। आपने किसी लड़के को फ्रेंच में प्रथम श्रेणी के नंबर दिए होंगे—परंतु वह यदि फ्रांस में जाएगा तो वह फ्रेंच में किसी से शौचालय का रास्ता भी नहीं पूछ पाएगा। वह उल्लू, पत्थर और पंखों* की बात तो एक वचन और बहुवचन दोनों में

* उल्लू, पत्थर और पंखे—फ्रेंच में ये शब्द औरों से कठिन हैं। अतः पुराने ढंग के अध्यापक फ्रेंच की कक्षा में, शुरू में ऐसे शब्दों को रटवाते थे।

कर सकेगा। शायद उसने कुल जमा में, फ्रेंच के दो सौ शब्द सीखे होंगे जो असाधारण होने के कारण चुने गए हैं—साधारण उपयोग के नहीं हैं।

इसका परिणाम यह होता है कि उसे फ्रेंच भाषा से चिढ़ हो जाती है, जैसे कई बच्चों को गणित से हो जाती है।

उद्देश्य : इसके विपरीत, मैंने अपनी भाषाएं ग्रामोफोन के रिकार्डों से सीखीं। बिना किसी प्रयत्न के, मैंने सर्वप्रथम सबसे उपयोगी और सामान्य शब्दों को सीखा—ठीक वैसे—जैसे हम अपनी मातृभाषा सीखते हैं।

गरमी में मैं ग्रेनोबुल (फ्रांस का एक शहर) गया जहां मैं एक भोजनालय में बर्तन धोता था। मुझे भाषा के बारे में कोई परेशानी नहीं हुई। युवा आवासगृहों में यूरोप और अफ्रीका के कई युवकों से मेरा संपर्क हुआ।

वापस घर लौटने पर मैंने कई भाषाएं सीखने का निश्चय किया। एक भाषा को पूर्ण दक्षता से सीखने की अपेक्षा, अनेकों भाषाओं को कामचलाऊ रूप से सीखना मुझे उपयोगी लगा जिससे मेरा संचार विविध प्रकार के लोगों से हो सके, मैं नए व्यक्तियों से मिल सकूं, नई समस्याओं से परिचित हो सकूं और राष्ट्रीय सीमाओं में न बंधूं।

साधन : माध्यमिक शिक्षा के तीन वर्षों में हमने एक भाषा के स्थान पर दो भाषाएं लीं—फ्रेंच और अंगरेजी। हमने इतनी शब्दावली सीख ली थी कि हम लोग किसी भी विषय पर बहस कर सकते थे।

हम व्याकरण की गलतियों पर ध्यान नहीं देते थे। व्याकरण की आवश्यकता मुख्यतः लिखते समय आती है। पढ़ने और बोलने के लिए, उसके बिना भी काम चल सकता है। धीरे-धीरे सुन-सुनकर वह समझ में आने लगती है। बाद में उसका गहराई से अध्ययन किया जा सकता है।

हम अपनी भाषा भी इसी प्रकार सीखते हैं। जब हम आठ वर्ष के हो जाते हैं तो हमें व्याकरण का प्रथम पाठ सिखाया जाता है। उसके पहले हम तीन वर्ष से उसे पढ़ रहे थे और लिख रहे थे।

आपके स्कूलों में भी, नए पाठ्यक्रमों में ग्रामोफोन के रिकार्डों की सिफारिश की गई है। परंतु इन रिकार्डों की उपयोगिता उन स्कूलों में है जो पूर्णकालिक स्कूल हैं, और जहां लड़के दूसरे कामों से थक जाने पर, विश्राम के तौर पर रिकार्ड चलाकर भाषाएं सीखते हैं। वहां सप्ताह के प्रत्येक दिन, दो घंटे, इसके द्वारा भाषा सीखी जाती है। आपकी तरह नहीं, जहां हफ्ते में तीन घंटे के लिए इनका प्रयोग होता है।

आपकी जैसी स्थिति में तो इनका उपयोग न करना ही ठीक होगा।

लुआ के गढ़ : एक मौखिक परीक्षा में हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। आपके छात्रों को फ्रेंच संस्कृति का असीमित ज्ञान था। मसलन उनको लुआ के गढ़ों के बारे में बहुत जानकारी थी।

बाद में हमें पता चला कि पूरे वर्ष उन्होंने केवल इन्हीं के बारे में पढ़ा था। उन्होंने पाठ्यक्रम में से कुछ विषयों को चुन लिया था और उसी को वे पढ़ सकते थे तथा उन्हीं का अनुवाद कर सकते थे।

यदि कोई निरीक्षक आ जाए, तो उनका प्रदर्शन हमसे कहीं अधिक अच्छा होता था। निरीक्षक भी पाठ्यक्रम के बाहर का कोई सवाल नहीं करता था। यद्यपि वह अच्छी तरह जानता है, और आप भी जानते हैं कि इस प्रकार की फ्रेंच भाषा का ज्ञान बिलकुल व्यर्थ है। और आप किसके लिए ऐसा करते हैं? आप निरिक्षक को दिखाने के लिए इस ढंग से पढ़ाते हैं। निरीक्षक स्कूलों के अधीक्षक के लिए ऐसा करता है, और वह शिक्षा मंत्री के लिए।

आपके स्कूलों का यही पहलू सबसे चिंताजनक है। इनका उद्देश्य शिक्षा नहीं, ये स्वयमेव ही अपने उद्देश्य हैं।

बारह वर्ष की अवस्था में समाज में ऊपर चढ़ने की आकांक्षा : परंतु आपके छात्रों का उद्देश्य क्या है, यह भी एक रहस्य है। शायद उनका कोई उद्देश्य ही नहीं है, या शायद वह बहुत घटिया किस्म का है।

वे दिन रात नंबरों के लिए, अच्छी रिपोर्ट के लिए और डिप्लोमा के लिए पढ़ते रहते हैं और इस बीच इन विषयों में, जिन्हें वे पढ़ रहे हैं उनकी सारी रुचि खत्म हो जाती है। भाषाएं, विज्ञान, इतिहास में सब अच्छी चीजें केवल पास होने के नंबर बनकर रह जाती हैं।

इस सारी पढ़ाई के पीछे उन्हें केवल अपने वैयक्तिक लाभ की इच्छा है। डिप्लोमा का अर्थ है पैसा। कोई इसे स्पष्ट शब्दों में नहीं कहता परंतु इस व्यवस्था का परिमाण यही होता है।

आपके स्कूल में किसी विद्यार्थी को सुखी रहने के लिए उसे बारह वर्ष की अवस्था से ही समाज में ऊपर चढ़ने की महत्वाकांक्षा होनी चाहिए।

परंतु ऐसे बहुत कम विद्यार्थी हैं जिनमें बारह वर्ष की अवस्था में ऐसी महत्वाकांक्षा उत्पन्न हो जाती है। अतः अधिकांश विद्यार्थी स्कूल से घृणा करते हैं। आपका उनके प्रति जो घटिया व्यवहार है, उसकी और क्या प्रतिक्रिया हो सकती है ?

अंगरेजी की पढ़ाई : बगल की कक्षा में अंगरेजी की परीक्षा हो रही थी। वह बहुत ही विस्मयकारी थी।

मेरे विचार से अंगरेजी सब भाषाओं से अधिक उपयोगी भाषा है, परंतु जब आप उसको अच्छी तरह जानें। यह नहीं कि आप सरसरी तौर पर उसका ज्ञान प्राप्त करें। उल्लू और पत्थर ? उन छात्रों को ठीक से 'गुड नाइट' भी कहना नहीं आता था और उन्हें सदा के लिए विदेशी भाषा सीखने से हतोत्साहित कर दिया गया।

किसी युवक के जीवन में पहली विदेशी भाषा एक घटना होती है। उसमें सफलता अवश्य मिलनी चाहिए अन्यथा आगे परेशानी होगी।

हमने अनुभव से यह देखा है कि इटली के निवासियों को यह सफलता फ्रेंच भाषा सीखने से ही मिलती है। जितनी बार हमारे स्कूल में कोई फ्रेंच भाषी अतिथि आता है, तो कुछ लड़कों को यह सुखद अनुभव होता था कि वे उसकी कुछ बातें समझ पा रहे हैं। उसी रात को हम देखते थे कि वे लड़के एक तीसरी भाषा का रिकार्ड बजाने के लिए ले जा रहे हैं।

उनके पास सबसे महत्वपूर्ण उपकरण उपस्थित थे—प्रेरणा, सफलता प्राप्त करने का आत्मविश्वास और भाषा संबंधी समस्याओं से परिचित दिमाग।

गणित और परपीड़ा सुख : रेखागणित की परीक्षा में दिए गए एक सवाल से आधुनिक कला की प्रदर्शनी की एक मूर्तिकला का ध्यान आ जाता है। 'एक घनाकृति की रचना, एक अर्धगोलाकार के बेलन के ऊपर अध्यारोपण द्वारा की गई है जिसकी सतह 3/7... ।'

सतह को नापने के कोई उपकरण नहीं हैं। अतः वास्तविक जीवन में आयाम के बिना सतह का ज्ञान नहीं हो सकता। ऐसी समस्याएं रोगी मस्तिष्क की ही उपज हो सकती हैं।

नए नाम : माध्यमिक स्कूलों में, सुधार के बाद, इस प्रकार के सवाल समाप्त कर दिए गए। अब केवल व्यावहारिक आधारों के ही सवाल रखे जाएंगें।

अतः कार्ला को उसकी परीक्षाओं में, बायलर पर आधारित एक आधुनिक सवाल दिया गया, 'एक बायलर का आकार बेलन की तरह है जिस पर एक अर्धगोलाकार का अध्यारोपण किया गया है... ।' फिर से सतह की बात आ गई।

ऐसे अध्यापक से, जो नाम बदल देने से अपने को आधुनिक समझता है, पुराने ढंग का अध्यापक ही अच्छा है।

अल्पबुद्धि वालों की कक्षा : हमारी गुरुजी पुराने ढंग की थीं। मजे की बात यह है कि उनका कोई विद्यार्थी इस सवाल को हल नहीं कर पाया। परंतु हमारे चार विद्यार्थीयों में से दो ने इसका हल निकाल लिया। परिणाम यह हुआ कि 28 विद्यार्थीयों में से 26 फेल हो गए।

अध्यापक चारों ओर यह कहते फिरते थे कि उनकी कक्षा में तो मंद बुद्धि के ही लड़के हैं।

मां-बाप की यूनियन : ऐसे अध्यापकों पर कौन निगाह रखता ? प्रधानाचार्य यह कार्य कर सकते थे या अध्यापक संघ। परंतु उन्होंने ऐसा नहीं किया।

मां-बाप शायद इस काम में सफल हो सकते थे। परंतु जब तक आप लोगों के हाथों में लड़कों का गला काटने की छुरी है, वे यह काम नहीं करेंगे। अतः या तो हम लोग आपके हाथों में से सब छुरियां (नंबर, रिपोर्ट, परीक्षा) छीन लें या फिर माता-पिता को संगठित कर लें।

माता-पिताओं का एक अच्छा संगठन आपको याद दिलाता रहेगा कि आपका वेतन हम ही लोग देते हैं। हम आपको इसलिए वेतन नहीं देते कि आप हमें स्कूल के बाहर निकाल कर फेंक दें वरन इसलिए देते हैं कि आप हमारी सहायता करें।

शायद इससे आपका भी भला होगा। जिन व्यक्तियों की कभी आलोचना नहीं होती, उनका व्यक्तित्व ठीक से नहीं पनपता। उनका यथार्थ जीवन और घटनाओं के विकास से कोई संबंध नहीं रहता। वे आपकी तरह अपरिपक्व रह जाते हैं।

समाचारपत्र : वर्तमान अर्धशताब्दी का इतिहास मुझे सबसे अच्छी तरह विदित था। रूस की क्रांति, फासिस्टवाद, युद्ध, विद्रोह, अफ्रीका और एशिया के देशों की स्वतंत्रता यह इतिहास मेरे पिता ने और दादा ने स्वयं भोगा है।

मैं अपने वर्तमान समय का इतिहास भी अच्छी तरह जानता था। यह हमें दैनिक समाचारपत्रों से पता चलता है जिन्हें हम बारबियाना में, सदा जोर से पढ़ते हैं शुरू से आखिर तक ।

परीक्षाओं के लिए रटते समय, हम कुछ घंटे अखबार पढ़ने के लिए निकाल लेते थे, यद्यपि इसके लिए हमें अपनी परीक्षा की तैयारी के अमूल्य समय में कमी करनी पड़ती थी। क्योंकि अखबारों में ऐसा कुछ नहीं होता जो परीक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो ! इससे पुनः यह सिद्ध होता है कि आपके स्कूलों में जीवन के लिए उपयोगी बातें कितनी कम सिखाई जाती हैं।

हमें इसी कारण समाचार पढ़ने आवश्यक हैं। मानो हम आपके सामने चीखकर कह रहे हों कि आपके घिनौने प्रमाणपत्रों ने अभी हमें पूरी तरह से पशु नहीं बना दिया है। हमें अपने माता-पिता के संतोष के लिए प्रमाणपत्र चाहिए। परंतु रोज की राजनीति और समाचार—ये दूसरों की पीड़ा व्यक्त करते हैं और इनका मूल्य आपके या मेरे स्वार्थ से कहीं अधिक है।

संविधान : एक महिला अध्यापक ने प्रथम महायुद्ध तक का इतिहास पढ़ाया। उसने ठीक उस तिथि पर लाकर पढ़ाना बंद कर दिया, जहां से हम लोग जीवन से जुड़ते। पूरे वर्ष में उसने एक बार भी कक्षा में समाचारपत्र पढ़कर नहीं सुनाया।

उसकी आंख के आगे शायद अभी भी फासिस्टों के यह विज्ञापन घूम रहे होंगे: 'यहां राजनीति की चर्चा मत करो।'

गियान पियेत्रो की मां एक दिन अध्यापिका से बात कर रही थी, 'मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे बेटे ने जब से संध्याकालीन पाठशालाओं में जाना शुरू किया है, उसमें बहुत सुधार हुआ है। आजकल वह रात में घर में पढ़ता रहता है।'

'पढ़ता है ? आपको मालूम है वह क्या पढ़ता है ? वह 'संविधान' पढ़ता है। पिछले वर्ष तो उसका ध्यान लड़कियों पर था। इस वर्ष 'संविधान' के पीछे पड़ा है।'

बेचारी मां को ऐसा लगा मानो संविधान कोई बहुत अश्लील पुस्तक है। उसने घर आकर गियान पियेत्रो के पिता से कहा कि उसकी खूब पिटाई करें। विनसेंजी मोंटी: वही अध्यापिका अपनी कक्षा में, किसी न किसी प्रकार से होमर* की विचित्र कथाएं पढ़ाना चाहती थी। यदि वह होमर पढ़ाती तब भी ठीक था। पर नहीं, वह तो विनसेंजी मोंटी** का अनुवाद पढ़ा रही थी।

हमने बारबियाना में उसे नहीं पढ़ा था। एक बार मजाक में हमने ग्रीक में उसकी मूल पुस्तक को लिया और एक पद के सब शब्दों को गिना। होमर में 100 शब्द थे और उसके अनुवाद में 140 शब्द। प्रत्येक तीन शब्दों में दो तो वास्तव में होमर के हैं और एक शब्द मोंटी के अपने दिमाग की उपज है।

मोंटी कौन है ? क्या यह व्यक्ति हमसे कोई विशेष बात कहना चाहता है ? क्या वह वही भाषा बोलता है जिसे हम सीखना चाहते हैं ? नहीं स्थिति

---

* होमर—ग्रीस का कवि जिसने इलियड, ओडेसी महाकाव्य लिखे हैं।

** विनसेंजो मोंटी—उन्नीसवीं शताब्दी का इटली का कवि जिसने इलियड का अनुवाद इटैलियन भाषा में किया।

इससे भी बदतर है। इसने जिस भाषा में लिखा है, उसका प्रयोग तो उसके समय में भी नहीं होता था।

एक दिन मैं एक लड़के को भूगोल पढ़ा रहा था। यह लड़का आपके माध्यमिक स्कूल से उन्हीं दिनों फेल हुआ था। उसे कुछ नहीं आता था। परंतु वह जिबराल्टर को 'हरक्यूलीज के स्तंभ'* कहा करता करता था।

क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि स्पेन के रेलवे स्टेशन की टिकट देने की खिड़की पर खड़ा होकर वह टिकट खरीद पाएगा ?

प्राथमिकताओं का क्रम : चूंकि स्कूली शिक्षा के लिए इतना थोड़ा समय मिल पाता है, अतः हमें अत्यावश्यक चीजों पर पहले ध्यान देना चाहिए।

डाक्टर के बेटे पियरीनो के पास किस्से कहानी पढ़ने का काफी समय है। परंतु गियान्नी के पास नहीं है। आपने उसे पंदरह वर्ष की अवस्था में अपने स्कूल से निकाल दिया। वह एक फैक्ट्री में काम करता है।

उसको यह जानने की कोई आवश्यकता नहीं कि जूपिटर ने मिनर्वा को जन्म दिया था या मिनर्वा ने जूपिटर को।

यदि इटली के साहित्य के पाठ्यक्रम में धातुकारों की यूनियन का प्रतिबंध भी सम्मिलित किया जाता, तो उसके लिए अधिक लाभदायक होता। गुरुजी, क्या आपने उसे कभी पढ़ा है ? क्या आप इसके लिए लज्जित नहीं है ? इस पर लाखों कामगारों का जीवन निर्भर है।

आपको यह बड़ा अभिमान है कि आप कितनी सुशिक्षित हैं। पर आप सब एक ही प्रकार की पुस्तकें पढ़ती हैं। उनसे भिन्न प्रश्न आपसे कभी कोई नहीं पूछता।

दुःखी बच्चे : शारीरिक व्यायाम की परीक्षा में अध्यापक ने हम लोगों की ओर एक गेंद फेंकते हुए कहा, 'बास्केटबाल खेलो।' हमें यह खेल खेलना नहीं आता था। अध्यापक ने हम लोगों की ओर तिरस्कार भरी दृष्टि से देखा, मानो कह रहे हों, 'बेचारे बच्चे।'

वह अध्यापक भी आपमें से एक है। उसके लिए पारंपरिक व्यवहार का बहुत महत्व है। उसने प्रधानाचार्य से कहा कि हमें किसी प्रकार की 'शारीरिक शिक्षा' नहीं दी गई है। हमारी परीक्षा जाड़ों में फिर से होनी चाहिए।

* हरक्यूलीज के स्तंभ—प्राचीन कवि जिबराल्टर को इस नाम से पुकारते थे। यह अटलांटिक महासागर और मेडीटेरेनियन सागर के बीच का जल डमरूमध्य है।

उस अध्यापक के लिए यह बात कोई महत्व नहीं रखती कि हम सब शाहबलूत के पेड़ पर चढ़ सकते हैं। ऊपर चढ़ने पर हम दोनों हाथ छोड़कर ढाई मन की मोटी शाखा को कुल्हाड़ी से काट सकते हैं और उसे बर्फ में घसीटते हुए अपनी मां के दरवाजे तक ले जा सकते हैं।

मैंने सुना है कि फ्लोरेंस में एक व्यक्ति ऐसा है जो अपने मकान की ऊपर वाली मंजिल पर लिफ्ट द्वारा चढ़ता है। उसने अपने लिए एक बहुत मंहगा उपकरण खरीदा है और नाव चलाने का ढोंग रचता है। आप उसे शारीरिक शिक्षा में बहुत अच्छे नंबर देंगे।

मुगैलो में लैटिन : बारबियाना में हमने बहुत कम लैटिन सीखी। पार्लियामेंट ने नए कानून द्वारा इसे समाप्त कर दिया था। उसी वर्ष आक्सफोर्ड और कैंब्रिज में भी भरती होने के लिए लैटिन की आवश्यकता समाप्त कर दी गई थी।

परंतु मुगैलो के किसानों को अभी भी इसे पढ़ना पड़ता था। गंभीर अध्यापक छात्रों के बीच ऐसे घूमते थे मानो कोई बहुत बड़े पंडित हो। बुझे हुए दीपक के रखवाले। मैं इन विलक्षण व्यक्तियों को ताज्जुब से देखता था। मैंने अपने जीवन में उन जैसी और कोई चीज नहीं देखी थी।

नया माध्यमिक स्कूल : हमने नए कानून को, तथा नए माध्यमिक स्कूल के पाठ्यक्रमों की योजनाओं को पढ़ा।

हमने जो कुछ पढ़ा, उसमें से अधिकांश हमें अच्छा लगा। विशेषतः यह बात कि नए माध्यमिक स्कूल का वास्तव में अस्तित्व है, वह सबके लिए है और अनिवार्य है और उसे दक्षिणपंथी पसंद नहीं करते। ये बातें उसके पक्ष में थीं।

परंतु बड़े दुःख की बात है कि ये स्कूल फिर से आपके नियंत्रण में आ गए हैं। क्या पहले की भांति आप इनमें भी वर्गीय भेदभाव ले आएंगे ?

स्कूल की समय सारणी : पुराने माध्यमिक स्कूलों में, उनकी समय सारणी तथा उनके सत्र (पढ़ाई के लिए कम समय और लंबी छुट्टियां) वर्गों के बीच की खाई को और गहरा बना देते थे। नई प्रणाली में यह नहीं बदला है। स्कूल अभी भी अमीरों की सुविधा के लिए हैं--ऐसे लोगों के लिए जिन्हें संस्कृति तो उनके घर में ही प्राप्त हो जाती है और वे केवल प्रमाणपत्र लेने स्कूल जाते हैं।

नए कानून की धारा 3 में आशा की एक किरण दिखाई देती है। उसमें

एक डोपोस्क्यूला स्थापित करने की व्यवस्था है जो सप्ताह में कम से कम दस घंटे कार्य करेगी। परंतु उसी धारा में बचाव का एक रास्ता भी रखा है। डोपोस्क्यूला की स्थापना 'स्थानीय परिस्थितियों का पता लगाने' के बाद ही की जाएगी। अतः निर्णय पुनः आपके हाथ में आ जाता है।

परिणाम : नए माध्यमिक स्कूलों की स्थापना के प्रथम वर्ष में, फ्लोरेंस प्रांत के 51 में से 15 नगरों में डोपोस्क्यूला स्थापित किए गए।

दूसरे वर्ष में इन्होंने छह नगरों में कार्य किया और 7.1 प्रतिशत विद्यार्थियों तक इनका लाभ पहुंच सका। पिछले वर्ष इनका कार्य केवल पांच नगरों तक सीमित रहा और 2.9 प्रतिशत विद्यार्थी इससे लाभान्वित हुए।

आज राजकीय स्कूल प्रणाली में डोपोस्क्यूला का कोई स्थान नहीं है।

आप मां-बाप को दोष नहीं दे सकते। उन्हें यह प्रतीत हुआ कि आप इस कार्यक्रम को आरंभ ही नहीं करना चाहते हैं। अन्यथा वे तो यहां तक तैयार थे कि अपने बच्चों को डोपोस्क्यूला क्या, आपके घरों में भी भेज देते।

विरोध : विकियो के मेयर नें डोपोस्क्यूला आरंभ करने के पहले राजकीय स्कूलों के अध्यापकों से उनकी राय जाननी चाही। पंद्रह पत्र आए। तेरह तो उसके विरोध में थे और दो समर्थन में। उन्होंने इसी तर्क को बार-बार दोहराया था कि यदि डोपोस्क्यूला अच्छे ढंग से न चल पाए तो उससे अच्छा तो यही होगा कि वे न चलाए जाएं।

शहर के लड़के मदिरालयों में देखे जाते हैं या सड़कों पर आवारा घूमते हैं। गांव के लड़के खेत में काम करने वापस चले जाते हैं। डोपोस्क्यूला से इसकी अपेक्षा कुछ तो लाभ होगा ? कोई भी चीज, इस परिस्थिति से बेहतर ही होती—आपके निरर्थक स्कूल भी।

यदि आप डोपोस्क्यूला के विरोधी हैं, तो मेरी सलाह मानिए और इस विरोध का प्रचार न कीजिए। दूसरों के विचार विद्वेषपूर्ण होते हैं। शायद उनके मन में यह विचार आए कि आप डोपोस्क्यूला का विरोध इसलिए कर रहे हैं क्योंकि आप दोपहर के समय बच्चों के ट्यूशन करके कुछ अतिरिक्त धन कमाना चाहते हैं।

भेदभाव की बात : कुछ लोगों को समानता से घृणा है। फ्लोरेंस के एक स्कूल के प्रधानाचार्य ने एक मां से कहा, 'आप बिलकुल चिंता न करें और अपने बच्चे को हमारे स्कूल में भेजें। सारे इटली में हमारा स्कूल एक ऐसा स्कूल

है जहां केवल उच्च और बड़े घर के बच्चे ही आते हैं।'

लोकतंत्र की 'प्रभुसत्ता संपन्न जनता' को ठगना कितना सरल है। 'अच्छे' लड़कों के लिए एक विशेष कक्षा आरंभ करके भी ऐसा किया जा सकता है। उनको व्यक्तिगत रूप से और जानना आवश्यक नहीं है। केवल उनके परिणाम पत्र, उनकी आयु, पता (गांव या शहर), जन्म स्थान (उत्तर के या दक्षिण के), पिता का व्यवसाय और प्रभावशाली प्रमाणपत्रों और दबावों पर एक नजर डालना ही काफी है।

इस प्रकार, एक ही स्कूल में दो, तीन या चार प्रकार की माध्यमिक कक्षाएं चलाई जा सकती हैं। वर्ग 'ए' में 'पुरानी किस्म' की माध्यमिक कक्षा होगी जो निर्विघ्न चलती है। सबसे अच्छे अध्यापक इस प्रकार की कक्षा को पढ़ाने के लिए लालायित रहेंगे।

कुछ विशेष प्रकार के माता-पिता अथक प्रयास करके अपने बच्चों को इस कक्षा में डलवाने की कोशिश करेंगे। वर्ग 'बी' भी करीब-करीब उतनी ही अच्छी श्रेणी की कक्षा होगी। और इसी तरह अन्य कक्षाओं में कोटि निम्न होती जाएगी।

आगे बढ़ाने का कर्तव्य : ये सब प्रतिष्ठित लोग हैं—प्रधानाचार्य और अध्यापक। ये सब अपने हित के लिए नहीं करते, वरन संस्कृति के हित के लिए करते हैं। मां-बाप भी यह अपने लाभ के लिए नहीं करते। दूसरों को धक्का देकर स्वयं को आगे बढ़ाना उचित नहीं है। लेकिन बच्चे की खातिर यह पुनीत कर्तव्य बन जाता है। ऐसा न करना बड़ी लज्जा की बात होगी।

पराजित : निर्धनतम मां-बाप कुछ नहीं करते। जो कुछ हो रहा है उसके प्रति उन्हें कोई संदेह भी नहीं है। गांव में, अपने समय में उन्होंने नौ वर्ष की अवस्था में ही स्कूल छोड़ दिया था।

अगर सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है तो इसका अवश्य ही यह अर्थ है कि उनका लड़का पढ़ने के योग्य नहीं है। 'अध्यापक ने भी यही कहा था। वे बहुत ही सज्जन हैं। उन्होंने मुझे बिठाया और बच्चे की सब रिपोर्ट दिखाई। सारी परीक्षाओं में उसके आगे लाल निशान बने हुए थे। हमारे भाग्य में ही नहीं लिखा है कि हमारे बुद्धिमान संतान हो। वह भी हमारी तरह अब खेतों में काम करने जाएगा।'

आंकड़े

राष्ट्रीय स्तर पर : आप शायद इस पर आपत्ति करें कि हमने विशेष रूप से बुरे स्कूलों में परीक्षाएं दी होंगी। या हमें दूसरे स्थानों से भी जो रिपोर्ट मिली हैं, वे भी कोई अच्छी नहीं हैं। आप कह सकते हैं कि आप हमारी ही तरह के कई अन्य उदाहरण भी जानते हैं परंतु उनके परिणाम हमसे विपरीत हैं। अंतः हम यह भावनात्मक बातें छोड़ें और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं।

आइए, फिर से इसी विषय पर बातें करें--परंतु इस बार आंकड़े प्रस्तुत करें।

पढ़ने के अयोग्य : गियानकार्लो ने आंकड़े इकट्ठे करने का काम् शुरू कर दिया। वह पंदरह वर्ष का है। वह भी गांव के उन्हीं लड़कों में से एक है जिन्हें आप पढ़ाई के अयोग्य घोषित कर चुके हैं।

हमारे यहां वह ठीक काम कर रहा है। वह चार महीने से इन आंकड़ों में उलझा हुआ है। अब तो उसे गणित भी रोचक लगने लगा है। हमारे कारण शिक्षा से संबंधित यह चमत्कार जो उसके साथ हुआ है, उसका नुसखा बिल्कुल सरल है।

हमने उसे एक उत्तम उद्देश्य के लिए पढ़ने का अवसर दिया जिससे उसके अंदर यह भावना जाग्रत हो कि वह भी 10,31,000 छात्रों में से एक है जो उसी की तरह असफल घोषित कर दिए गए और वह अपनी तथा उन सब फेल होने वाले साथियों की ओर से बदला ले सके।

आश्वस्त अध्यापक : हमने अनेकों आंकड़ों का सार संग्रह किया। कई स्कूलों में गए, अनेकों स्कूलों से पत्रों द्वारा पूछताछ की, अतिरिक्त आंकड़े संकलित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय तथा केंद्रीय सांख्यिकी संस्थान गए और कई दिन केल्क्यूलेटिंग मशीन पर काम करते रहे।

औरों ने भी हमसे पहले ऐसे ही अनुसंधान किए होंगे। लेकिन वे इस प्रकार के लोग होंगे जो अपनी खोजों को साधारण भाषा में व्यक्त नहीं करते।

हमने उनके जांच परिणामों को कभी नहीं पढ़ा और आपने भी गुरुजी, नहीं पढ़ा होगा।

अतः आपमें से किसी की कोई स्पष्ट धारणा नहीं है कि वास्तव में स्कूलों के अंदर क्या होता है। हमारे यहां निरीक्षण को आए एक अध्यापक से हमने

यही बात की। वह बहुत ही नाराज हुए, 'मैं तेरह वर्ष से पढ़ा रहा हूं। मैं हजारों बच्चों के माता-पिताओं से मिला हूं। तुम सब चीजों का बाल-रूप देखते हो। स्कूल की भीतरी समस्याओं का तुम्हें पूरा ज्ञान नहीं है।'

तो स्कूल का गहन ज्ञान उन्हें है--वे, जिनका संपर्क केवल पहले से चुने हुए लड़कों से होता है। ऐसे जितने अधिक लड़कों को वे जानते हैं, उतना ही वे अपने उद्देश्य से हट जाते हैं।

गियान्नी जैसे अनेकों बच्चे हैं : सब स्कूलों की समस्या एक है--स्कूल छोड़ देने वाले बच्चों की समस्या--गियान्नी-जैसे बच्चे।

आपके अनिवार्य स्कूलों को प्रति वर्ष 4,62,000 बच्चे छोड़ कर चले जाते हैं। ऐसी स्थिति में स्कूलों से संबंधित व्यक्तियों में सबसे अयोग्य तो आप हैं जो इतने सारे बच्चों को खो देते हैं और यह भी पता लगाने का प्रयास नहीं करते कि उनका क्या हुआ ? परंतु हम खेतों और फैक्ट्रियों में उन्हें ढूंढने जाते हैं और उन्हें निकट से जानते हैं।

गियान्नी की मां को पढ़ना नहीं आता, परंतु वह स्कूल की समस्याओं को समझती है और वे सभी इनको समझ सकेंगे जो बच्चे के फेल हो जाने का दर्द अनुभव करते हों और जिनमें आंकड़ों का अध्ययन करने का धैर्य है।

तब ये आंकड़े सारी स्थिति आपके आगे स्पष्ट कर देंगे। आंकड़ों से पता चलता है कि गियान्नी जैसे बच्चे लाखों की संख्या में आपकी आंखों के सामने हैं, और आप या तो नासमझ हैं या ढीठ हैं कि आपको वे दिखाई नहीं देते हैं।

पिरामिड : चूंकि आंकड़ों के विवरण समझना शायद थोड़ा कठिन हो, अतः यहां हम उनको इस रूप में प्रस्तुत करेंगे जो सरलता से समझ में आ जाएं।

हमने इन आंकड़ों को पिरामिड के रूप में इसी स्थान पर प्रस्तुत किया है क्योंकि इससे सारी बात स्पष्ट आंखों के आगे आ जाएगी।

ऐसा प्रतीत होता है मानो प्राथमिक वर्षों से ही कुल्हाड़ी से काट-काट कर इसे ऊपर की ओर छोटा किया जा रहा है। कुल्हाड़ी के प्रत्येक प्रहार के अर्थ हैं कि एक बच्चे को समानता के अधिकार से वंचित करके काम पर भेजा गया।

1951 की कक्षा का अनुसरण : इस पिरामिड का एक अवगुण है। इसमें छह वर्ष से तीस वर्ष तक की आयु के विद्यार्थी एक ही स्थान पर दिखाए गए हैं--इनमें नए और पुराने दोनों असफल विद्यार्थी हैं।

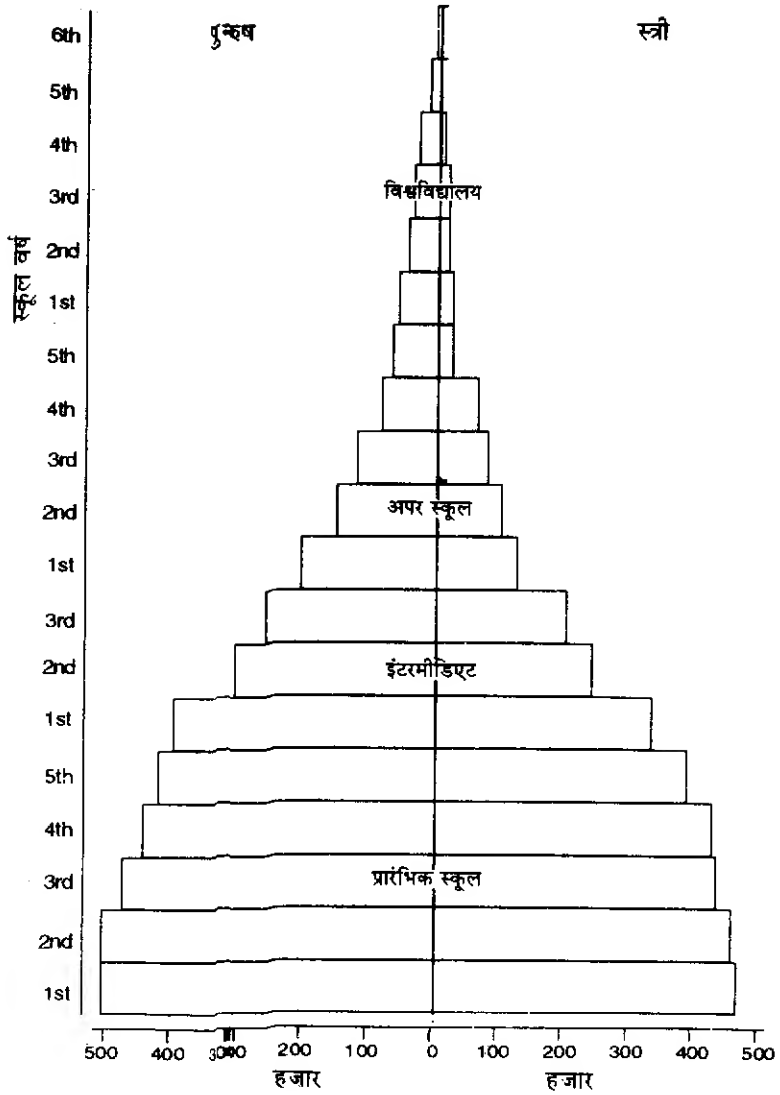

चित्र 1: वर्ष 1963-64 में नामांकित बच्चे

चूंकि हमारे पास हाल के आंकड़े नहीं हैं, अतः हम उन बच्चों का अनुसरण करेंगे जिनका जन्म 1951 में हुआ था।

प्रथम वर्ष : आइए, हम स्कूल के प्रथम दिन, अक्तूबर में प्रथम वर्ष की कक्षा में चलें। 32 विद्यार्थी बैठे हैं। सरसरी निगाह से देखने पर सब एक जैसे लगते हैं। वास्तव में इनमें से पांच बच्चे ऐसे हैं जो परीक्षा में बार-बार बैठेंगे।

जो सात साल के हो चुके हैं, उन पर अभी से पिछड़े होने का ठप्पा लग चुका है और इसका मूल्य उन्हें बाद में माध्यमिक कक्षाओं में चुकाना पड़ेगा।

खोए हुए आभूषण : स्कूल का सत्र प्रारंभ होने से पहले ही तीन-तीन बच्चे अनुपस्थित हैं। अध्यापिका को उनके बारे में मालूम नहीं है परंतु पिछले सत्र में वे स्कूल में थे। वे इस बार फेल हो गए और इस सत्र में वापस स्कूल नहीं आए।

यदि वे लौट कर आते तो वे इन्हीं अध्यापिका की कक्षा में होते। एक प्रकार से अध्यापिका उन्हें खो चुकी है। जैसे हम अपने खोए हुए आभूषण की बात करते हैं।

आगामी वर्षों में भी यही होता है। यदि हम चाहें, तो इन खो जाने वाले बच्चों की संख्या दोगुनी कर सकते हैं—एक तो वे, जो आपके व्यवहार से स्कूल छोड़कर चले गए और एक वे, जो फेल होने के कारण दोबारा वापस नहीं आए।

यदि आप सचमुच अच्छी शिक्षिका हैं तो यह गिनती आपको करनी चाहिए।

स्कूल न जाने वाले बच्चे : उक्त गणना में हमने उन बच्चों को सम्मिलित नहीं किया है जिन्होंने कभी स्कूल जाना आरंभ ही नहीं किया। उनके बारे में, हमें राष्ट्रीय स्तर पर कोई आंकड़े नहीं मिलते हैं। जहां तक हमारा विचार है, इनकी संख्या काफी कम है। मुगैलो प्रदेश में गियानकार्लो को ऐसा एक भी बच्चा नहीं मिला।

खैर, उसके लिए तो आपको किसी रूप में दोषी नहीं ठहराया जा सकता। उसका उत्तरदायित्व तो अन्य लोगों पर है। सबसे अधिक तो उन पादरियों पर है जो अपने क्षेत्र के सब लोगों को अच्छी तरह जानते हैं और जो मां-बाप से बात करके उन्हें राजी कर सकते थे कि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजें या वे उन बच्चों के नाम स्कूल अधिकारियों के पास भेज सकते थे।

फेल होने वाले बच्चे : जून में अध्यापिका ने छह बच्चों को फेल कर दिया। उन्होंने 24 दिसंबर 1957 के कानून का उल्लंघन किया जिसके अनुसार अध्यापकों को प्रत्येक बच्चे को दो वर्ष की शिक्षा देना अनिवार्य है।

परंतु हमारी अध्यापिका लोकसत्ता के आदेश का पालन नहीं करती। वह उनको फेल करके, स्वयं संतुष्ट रहती है।

अंधेरे में तीर : किसी को फेल करना ऐसा ही है जैसे अंधेरे में तीर मारना। तीर चाहे खरगोश के लगे या किसी बच्चे के, यह तो हमें समय ही बताएगा।

आपने क्या किया, इसका ज्ञान आपको अक्तूबर में होगा। क्या वह बच्चा काम करने चला गया या दोबारा स्कूल में पढ़ने आया ? यदि वह दोबारा स्कूल आता है तो क्या उसे स्कूल से कुछ फायदा होगा ? क्या उसे अपनी पढ़ाई जारी रखने से कोई विशेष लाभ होगा ? या ऐसे पाठ्यक्रमों को पढ़ना, जिनसे उसको कोई लाभ नहीं है, उसके समय की बरबादी नहीं है ?

दूसरा वर्ष : अगले वर्ष, अक्तूबर में सात-आठ वर्ष के बच्चों की अध्यापिका* की कक्षा में फिर से 32 विद्यार्थी उपस्थित हैं। इनमें से 26 बच्चों के चेहरे तो उसके परिचित हैं और इन्हीं बच्चों से वह प्रेम करती है तथा अपना समझती है।

कुछ समय बाद उसका ध्यान उन छह नए विद्यार्थियों पर जाता है। इनमें से पांच तो ऐसे हैं जो फेल होने के कारण दोबारा इसी कक्षा में बने रहे हैं। एक बच्चा तो दो बार फेल होने के बाद, तीसरे वर्ष भी इसी कक्षा में है। वह करीब नौ वर्ष का है। छठा नया चेहरा पियरीनो** का है। यह डाक्टर का बेटा है।

पियरीनो : डाक्टर का पुत्र होने के कारण उसे विरासत में पढ़ाई लिखाई मिली है। जब वह केवल पांच वर्ष का था तभी वह लिखना सीख गया था। उसको स्कूल में प्रथम वर्ष की आवश्यकता ही नहीं पड़ी। वह छह वर्ष की अवस्था में स्कूल में भरती हुआ और वह छपी हुई किताब की तरह फरटि से बोलता है।

---

* प्राथमिक स्कूलों में एक ही अध्यापिका अपनी कक्षा के साथ पांच वर्ष तक रहती है।

** पियरीनो उन 30,000 बच्चों का प्रतीक है जो स्कूल के प्रथम वर्ष में दाखिला न लेकर सीधे दूसरे वर्ष में भरती हुए हैं।

उस पर भी पहले से ठप्पा लगा हुआ है—पर वह ठप्पा विशिष्ट वर्ग का है।

कड़वी रोटी : प्रथम वर्ष में जो छह बच्चे फेल किए गए थे, उनमें से चार लौटकर फिर से प्रथम कक्षा में पढ़ने आए। स्कूल तो उन्होंने नहीं छोड़ा पर वे अपने सहपाठियों से बिछुड़ गए।

अध्यापिका को उनके लिए अधिक चिंता नहीं है क्योंकि वह जानती है कि वे अब दूसरी अध्यापिका की कक्षा में सुरक्षित हैं। शायद वह उनको भूल चुकी है।

उसके लिए तो 32 बच्चों में से एक लड़का बहुत कम महत्व रखता है परंतु बच्चे के लिए अध्यापिका का महत्व बहुत अधिक है। उसके एक ही अध्यापिका थी और उसने उसे फेल कर दिया। शेष दो बच्चे स्कूल लौट कर नहीं आए। वे खेतों में काम करते हैं। हम जो भी रोटी खाते हैं, उसमें उनकी निरक्षरता का पसीना मिला है।

माताएं : छह माताओं को इस बात की अनुभूति हो चुकी है कि आपका स्कूल कैसा है। चार ने तो देख लिया कि उनके बच्चों को उनकी कक्षा से तथा उनके मित्रों से अलग कर दिया गया। और उन्हें अपने से छोटे आयु के सहपाठियों के साथ बड़ा होने के लिए छोड़ दिया गया है।

दो माताओं ने देखा कि उनके बच्चों ने सदा के लिए स्कूल छोड़ दिया।

माताएं कोई भगवान का अवतार तो होतीं नहीं। उन्हें अपने घर के बाहर की दुनिया का कुछ ज्ञान नहीं होता। यह एक बहुत बड़ा दोष है। परंतु उनके बच्चे उसी घर में रहते हैं। माताएं अपने बच्चों को कभी नहीं भूल सकतीं।

पादरी और वेश्याएं : इसके विपरीत, अध्यापिकाएं सदा भूल जाने का बहाना ढूंढ़ लेती हैं। वे अर्धकालीन माताएं हैं। स्कूल छोड़ कर जाने वाला बच्चा सामने उपस्थित नहीं रहता। उसकी पुरानी बैठने की जगह पर कोई समाधि का प्रतीक रख देना चाहिए जो उसकी याद दिलाता रहे।

परंतु उसके स्थान पर एक नया विद्यार्थी आकर बैठता है। वह भी उसी की तरह एक अभागा बच्चा है। और अध्यापिका अभी से पुराने विद्यार्थियों को भूलकर, नए से प्रेम करने लगी है।

अध्यापिकाएं पादरियों और वेश्याओं की तरह होती हैं। उनकी कक्षा में जो बच्चा आता है, उसी को उन्हें अपनाना पड़ता है। उसके जाने के बाद

शोक करने का भी समय नहीं रहता। समस्त संसार एक विशाल परिवार है। उसमें केवल यही बच्चे तो नहीं हैं।

घर के बाहर की बातें सोचने की भावना अच्छी है। परंतु हम अपने को यह आश्वस्त कर लें कि किसी बच्चे को घर से बाहर निकालने का कारण हमीं तो नहीं हैं।

कैसी समानता : पांच वर्ष की प्राथमिक शिक्षा समाप्त होने तक ग्यारह बच्चे तो स्कूल छोड़कर पहले ही जा चुके हैं। इसके लिए अध्यापिका दोषी है।

'स्कूल सबके लिए है। प्रत्येक नागरिक को आठ वर्ष स्कूल में शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। सब नागरिक समान हैं।' परंतु उन ग्यारह बच्चों का क्या होगा ?

उनमें से दो को अपने हस्ताक्षर भी करने नहीं आते। वे उसकी जगह संकेत बनाते हैं। एक उनसे थोड़ा होशियार है। वह हस्ताक्षर कर सकता है। अन्य की योग्यता भी भिन्न-भिन्न स्तर की है। वे पढ़ तो लेते हैं पर अखबार नहीं समझ सकते। उनके लिए समानता का क्या अर्थ है ?

परिवार भत्ता : इनमें से कोई लड़का संपन्न परिवार का नहीं है। यह बात इतनी सुस्पष्ट है कि इसे कहना भी हास्यास्पद है।

हाल में परिवारों को सरकार से आर्थिक सहायता मिलने लगी है।* प्रत्येक बच्चे के लिए 54 लीरे प्रतिदिन और मजदूरों को 187 लीरे प्रतिदिन मिलते हैं।

अध्यापिका कानून नहीं बनाती है परंतु उसे कानूनों का ज्ञान है। वह जितनी बार किसी विद्यार्थी को फेल करती है, वह उसे स्कूल छोड़कर काम पर जाने के लिए प्रलोभित करती है। यह बात धनी परिवारों के लिए नहीं है।

किसान : गरीब किसानों और गरीब मजदूरों, दोनों ही के बच्चों को यह प्रलोभन होता है कि स्कूल छोड़कर काम पर चले जाएं। प्रत्येक बच्चे को अलग-अलग आयु में इस प्रकार का प्रलोभन आकर्षित करता है। उन ग्यारह बच्चों की आयु सात से चौदह के बीच थी, जो प्राथमिक शिक्षा को छोड़कर काम पर चले गए थे।

वे अधिकांशतः किसानों के बच्चे थे या ऐसे समुदायों के बच्चे थे जो अलग रहते हैं, और जिनके यहां प्रत्येक सदस्य को—चाहे वह कितना ही छोटा हो, कुछ न कुछ काम मिल ही जाता है।

* 1 जनवरी 1967 से।

समय से पूर्व वयस्क : सरकार इन बच्चों को भूल चुकी है। उनका नाम स्कूलों में नहीं लिखा है और वे श्रमिकों की सूची में भी पंजीकृत नहीं हैं।

परंतु वे काम कर रहे हैं। निम्नांकित दो कानूनों पर साथ-साथ दृष्टिपात करने से हमें चलता है कि वास्तव में स्थिति क्या है, यद्यपि उसे स्वीकारा नहीं जाता है।

20 जनवरी 1961 के 'बाल श्रमिकों की सुरक्षा' कानून के अनुसार पंदरह वर्ष से छोटे बच्चों को मजदूरी पर नहीं लगाया जा सकता। यह कानून खेतिहर मजदूरों पर लागू नहीं होता। ठीक ही तो है। इस गरीब वर्ग के बच्चे होते ही कहां हैं। वे तो बचपन से ही वयस्क बन जाते हैं।

परंतु श्रमिकों की बीमा के नियमों की धारा 205 के अनुसार खेतिहर मजदूरों को बारह वर्ष की अवस्था से दुर्घटना का मुआवजा मिलना शुरू हो जाता है। इससे यह प्रमाणित होता है कि बच्चे उस आयु से काम करना शुरू कर देते हैं—यह तथ्य सर्वविदित है।

रहस्य : चित्र 1 के पिरामिड को देखने से प्राथमिक वर्षों की अध्यापिका को श्रेय मिलना चाहिए, यद्यपि उसकी कक्षा से इतने बच्चे स्कूल छोड़कर चले जाते हैं। माध्यमिक शिक्षा के वर्षों में ही पिरामिड का आकार बनने लगता है।

प्राथमिक शिक्षा के प्रथम वर्ष में अध्यापिका के पास 32 विद्यार्थी थे। पांचवे वर्ष में उसके पास अभी भी 28 विद्यार्थी हैं। स्पष्ट है कि उसने केवल चार विद्यार्थी खोए हैं।

परंतु वास्तव में उसने बीस विद्यार्थी खोए हैं। यह कैसे हो सकता है कि 32 में से वह 20 को खो दे और फिर भी उसकी कक्षा में 28 विद्यार्थी बच जाएं। यह रहस्य है और उसका स्पष्टीकरण आवश्यक है।

झील : किसी नक्शे में एक झील को देखिए। देखने से लगता है कि उसमें बहुत सा पानी है। वास्तव में उसमें उतना ही पानी है जितना उसमें गिरने वाली नदी में है। केवल पानी का बहाव कम हो गया है। कम समय में अधिक क्षेत्र में वह पानी फैल गया है। झील से फिर बाहर निकलने वाली नदी में भी उतना ही पानी दिखाई देता है जितना पहले वाली नदी में था।

प्राथमिक शिक्षा के वर्ष यह झील है। जो लड़का नियमित रूप से ऊंची कक्षा में चढ़ता जाता है उसके लिए पांच डेक्स चाहिए। जब वह एक ही कक्षा में दोबारा पढ़ता है तो उसके लिए छह, सात, आठ डेक्स चाहिए। पियरीनो, जो डाक्टर का प्रिय पुत्र है और सबका प्यारा है—उसे केवल चार

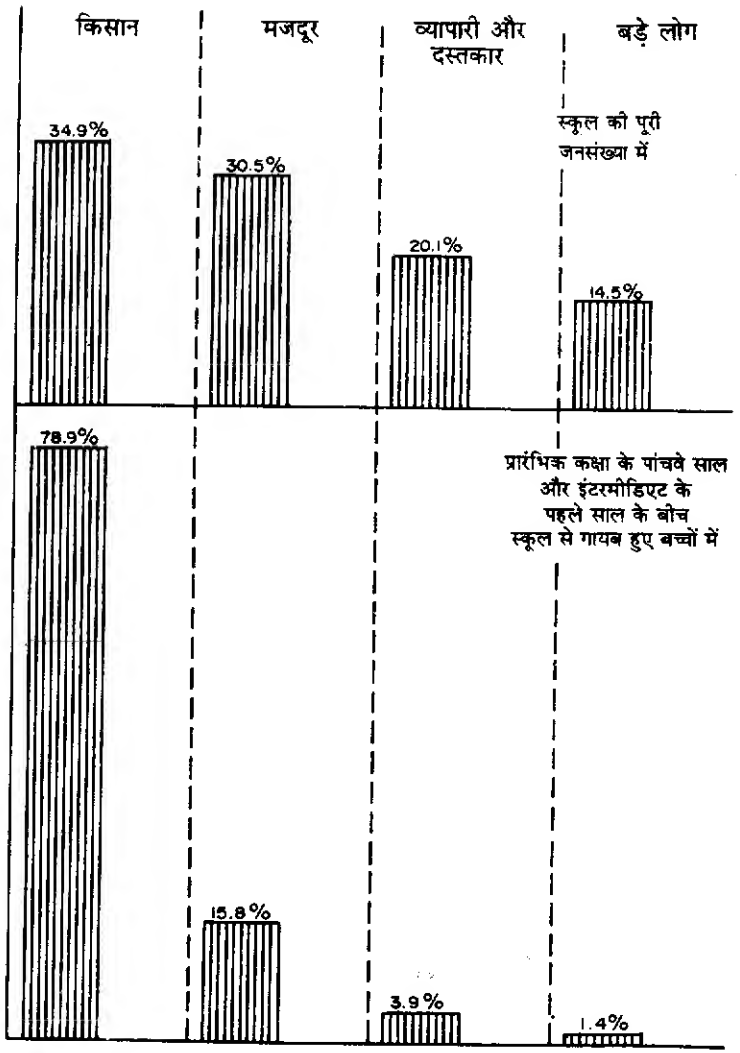

चित्र 2: पिता का पेशा

ही डेक्स चाहिए।

यदि आप विद्यार्थियों को फेल करना बंद कर दें, जो आप कक्षा में भीड़ की समस्या को स्वतः ही समाप्त कर देंगी।

खानाबदोश : अध्यापिका की दृष्टि में गियात्री जैसे बच्चे जो बार-बार कक्षा में फेल होते हैं, बिलकुल निकम्में हैं और उन्हें वह अन्य अध्यापिकाओं के जिम्मे पटक देती है। परंतु आप जैसा दूसरों के साथ करती हैं, वैसा ही दूसरे आपके साथ करते हैं। आपके बगल वाली अध्यापिका भी आपके जिम्मे अपने निकम्मे बच्चों को पटक देती है।

पूरे पांच वर्ष के काल म अध्यापिका की देखरेख में कुल 48 बच्चे रहे हैं और उसने उनमें से कुल 23 दूसरों के जिम्में कर दिए हैं। उसकी कक्षा में 29 गियात्री आकर चले गए। और अपना कोई चिह्न नहीं छोड़ गए। शुरू में जो 32 बच्चे उसके सुपुर्द किए गए थे, उनमें से केवल 19 बच गए।*

आयु बढ़ना दोष है : जिन 18 विद्यार्थियों को फेल करके गलत कक्षाओं में रोक दिया है, उनका नुकसान माध्यमिक कक्षाओं में आने पर पता चलता है। उनकी आयु अधिक हो चुकी है। और बड़ा होना मना है !

जब तक पांच वर्ष की अनिवार्य शिक्षा थी, तब तक परिस्थिति भिन्न थी। छह वर्ष की अवस्था में भरती होकर, पांच वर्ष की शिक्षा के बाद, छात्र 11 वर्ष का होता है। मजदूरी करने की वैध आयु तक पहुंचने में अभी समय रहता है और वह दो या तीन वर्ष कक्षा में दोबारा भी पढ़ सकता है।

परंतु अब आठ वर्ष की अनिवार्य शिक्षा होने से वह 6+8=14 वर्ष का हो जाता है और 15 वर्ष में काम करने का परमिट मिल जाता है।

फेल होने के लिए समय नहीं है : पहली निगाह डालने पर आपको प्रतीत होगा कि एक वर्ष फेल होने के लिए अभी भी मौका है। परंतु हम इन प्रथम वर्ष के बच्चों के जन्म के महीने पर दोबारा दृष्टि डालें। इस कक्षा में सबसे बड़ा बच्चा जनवरी में पैदा हुआ था। वह छह वर्ष नौ महिने का है। यदि आप सबकी जांच करें तो आपको पता चलेगा कि उनमें से तीन चौथाई बच्चे ऐसे

---

* 11 काम करने चले गए + 18 फेल हो गए = 29 कक्षा में खो गए
29 कक्षा में खो गए + 19 पहले वर्ष के बच्चे = 48 बच्चे उसकी कक्षा से गुजरे।

हैं जो स्कूल के प्रथम वर्ष में छह वर्ष से अधिक आयु के होते हैं।* अतः उनके पास एक बार भी फेल होने का समय नहीं रहता।

फेल करने की उत्कंठा : यदि अध्यापिका को फेल करने का शौक ही था तो वह धनी वर्ग के बच्चों पर अपनी भड़ास निकाल सकती थी।

मैं बच्चों के मां-बाप से इस प्रकार की बातचीत करना चाहूंगा। पियरीनो अभी बहुत छोटा है। बिना पूर्ण परिपक्व हुए उसे बहुत से निर्णय लेने पड़ेंगे। डाक्टर साहब, आपका क्या विचार है ? हम उसे एक वर्ष और इस कक्षा में रोक लें ?

अपरिपक्व बालक : परंतु अध्यापिका के विचार इससे भिन्न हैं। पियरीनो सदा ऊंची कक्षा में चढ़ा दिया जाता है। यह विचित्र बात है। पियरीनो की आयु अभी बहुत कम है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार उसे परेशानी होनी चाहिए। यह सब बुद्धि उसे पैदाइशी प्राप्त हुई होगी।

पियरीनो नौ वर्ष का है और वह 10-11 वर्ष के बच्चों की कक्षा में पहुंच गया है। उसने सदैव अपना समय अपने से अधिक आयु के बच्चों के बीच व्यतीत किया है। वह अधिक परिपक्व नहीं बना है, वरन वह अधिक आयु के लोगों का सामना करने का हुनर जान गया है। वह आप लोगों के सामने घबराता नहीं है।

चित्र 3

यह मान कर आंकड़ों का हमने सरलीकरण कर लिया कि हर महीने जन्म संख्या एक जैसी है तथा जिन बच्चों की आयु कानूनी तौर पर दाखिले लायक हो जाती है, वे पहले साल में दाखिले के लिए आवेदन पत्र भरते हैं। चूंकि हमारे पास राष्ट्रीय स्तर की कोई सर्वेक्षण रपट नहीं थी, हमने यह काम दो स्थानीय समुदायों को लेकर किया और उसके बाद हमने देखा कि जो संख्या बताई गई है, उससे वास्तविक संख्या 79% और 81% अधिक है।

इसके विपरीत, गियात्री सदा ऐसे बच्चों के बीच में रहा है जो उससे आयु में छोटे हैं। वह कभी-कभी उन पर धौंस जमाता है परंतु वयस्कों का सामना होते ही उसकी जबान बंद हो जाती है।

माध्यमिक कक्षाओं का प्रथम वर्ष : प्रथम वर्ष में 22 बच्चे हैं। अध्यापिका के लिए ये सब नए चेहरे हैं। उसे उन ग्यारह बच्चों के बारे में कुछ नहीं मालूम जो पहले ही स्कूल छोड़कर चले गए हैं। उसका तो वास्तव में यही विश्वास है कि सभी उपस्थित हैं—कोई लापता नहीं है।

कभी-कभी वह अपने आप बड़बड़ाती है, 'अब तो सभी तबकों के लोग स्कूल आने लगे हैं अतः पढ़ाना असंभव हो गया है। ऐसे विद्यार्थी आने लगे हैं जो प्रायः निरक्षर होते हैं।'

अध्यापिका ने लैटिन भाषा तो इतनी अधिक पढ़ी है परंतु उन्होंने सांख्यिकी के आंकड़े कभी नहीं देखे।

इश्तहार : लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तब उसे अपनी कक्षा के विद्यार्थियों की आयु पर भी ध्यान देना पड़ता। उसके विद्यार्थियों के बाल सुलभ चेहरे और सुकुमार शरीर भ्रम उत्पन्न कर सकते हैं।

जन्म पंजीकरण दफ्तर में कोई बच्चे का चेहरा नहीं देखता। जिसकी उपयुक्त आयु हो चुकी है, उसे मजदूरी करने का परमिट मिल सकता है। वह आपकी कक्षा किसी भी समय छोड़कर जा सकता है।

इन सब बच्चों को अपने साथ एक बड़ा सा इश्तहार लेकर चलना चाहिए, 'मैं 13 वर्ष का हूं। मुझे फेल न करिए।'

बड़ी आयु वालों का वध : परंतु ऐसा इश्तहार किसी के पास नहीं होता और अध्यापिका रजिस्टर में विद्यार्थियों के नंबर देखती है, उनकी जन्मतिथि नहीं। कई अध्यापकों की नीयत अच्छी होती है। वे बड़ी आयु वाले विद्यार्थियों की वास्तव में सहायता करना चाहते हैं। परंतु जब वे उस विद्यार्थी की परीक्षा की कापी देखते हैं जिसमें गलतियां भरी पड़ी हैं, तब वे अपनी अच्छी नीयत को भूल जाते हैं।

तथ्य ये प्रदर्शित करते हैं कि बड़ी आयु वाले ही अक्सर फेल होते हैं। इनको सरलता से मजदूरी उपलब्ध हो सकती है।

परंतु जो विद्यार्थी अध्यापक के कहे अनुसार चलते हैं वे ऊंची कक्षा में चढ़ते जाते हैं। वे पिछले वर्षों में भी फेल नहीं हुए और न इस वर्ष फेल होंगे।

सबके घर पियरीनो जैसे नहीं हैं परंतु उससे बहुत भिन्न भी नहीं हैं।

इस तरह कक्षा की छंटनी होती जाती है।

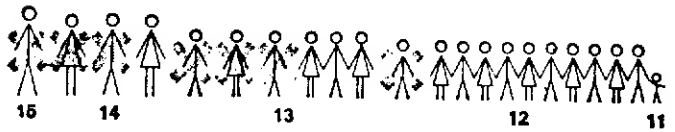

चित्र 4

गरीबों का वध : सबसे बड़ी आयु वालों को फेल करके, अध्यापिका सबसे गरीब छात्रों पर भी साथ-साथ प्रहार करती है।

हमने प्राथमिक कक्षाओं में बड़ी आयु वाले बच्चों के पिताओं के व्यवसायों का सर्वेक्षण किया है। आपको इसके परिणाम चित्र 3 में दिखाई देंगे।

मजदूरी कमा कर लाना : गियात्री की आयु चौदह वर्ष की हो चुकी है और उसे माध्यमिक कक्षाओं का प्रथम वर्ष दोबारा पढ़ना होगा। यदि वह प्रति वर्ष सफलता प्राप्त करता जाए, तब भी माध्यमिक कक्षाओं को पास करते करते वह सत्तरह वर्ष का हो जाएगा।

उसका दिल स्कूल की पढ़ाई से ऊब चुका है। काम आसानी से मिल सकता है। कुछ ही महीनों बाद वह मजदूरी करने की कानूनी आयु भी प्राप्त कर लेगा।

गियात्री को यह समझ में नहीं आता है कि काम पर जाना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। परंतु वह चाहता है कि वह भी घर में कुछ कमा कर लाए। उसे अच्छा नहीं लगता कि एक-एक पैसा खर्च करने पर उसे दुत्कारा जाता है।

मां-बाप का उसके काम पर जाने का विरोध भी अब कम होता जा रहा है। पढ़ाई के प्रति मां बाप की, या लड़के की अपूर्व लगन ही उसे इन असफलताओं के बावजूद स्कूल छोड़ने से रोक सकती है।

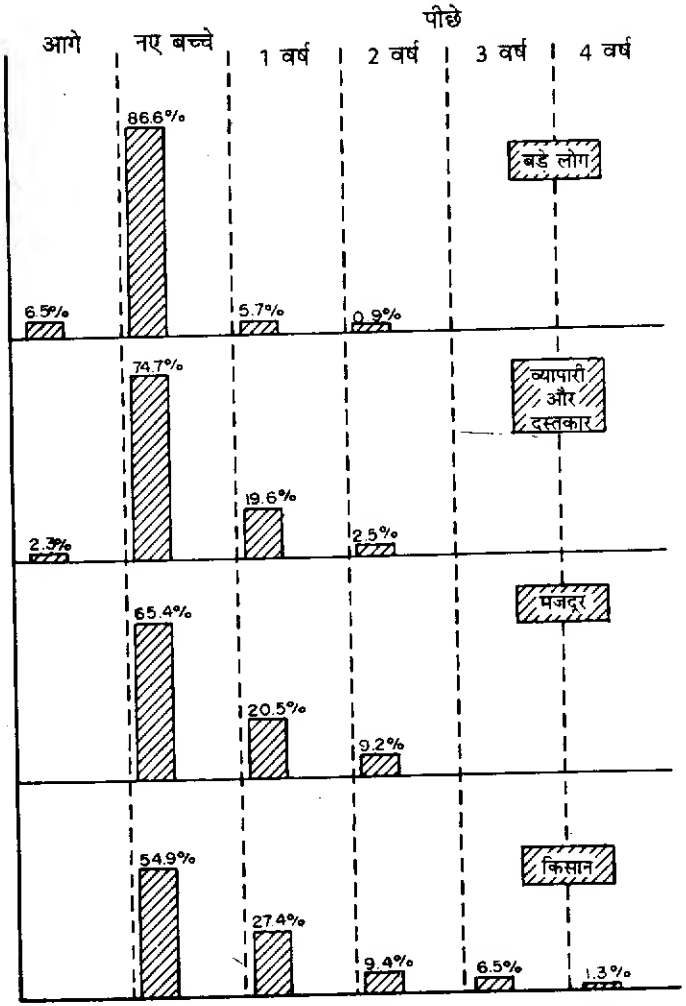

चित्र 5: गरीबों का वध

आपकी ओर से सहायता की चेष्टा शायद स्थिति में कुछ अंतर ला सकती थी। परंतु आपने तो प्रयास करके उसे सदा के लिए धराशायी कर दिया।

सब्जी वाला : शायद आपका अभिप्राय यह नहीं था। दोष उस अध्यापक का भी है जिसने आपकी कक्षा में ऐसे विद्यार्थी को फेल करके भेज दिया है, जिसकी आयु कक्षा के अन्य बच्चों से काफी अधिक है। सारा संसार भी इसके लिए दोषी माना जा सकता है और गियात्री स्वयं भी इसके लिए दोषी है।

परंतु जब आप एक छोटे लड़के को सब्जी बेचते हुए देखते हैं तब क्या आपके मन में यह विचार नहीं आता कि आपने ही उसे फेल किया था ?

काश, आप उससे यह कह पाते, 'तुम वापस स्कूल क्यों नहीं आ जाते? मैंने तुम्हें इसीलिए पास किया है जिससे तुम वापस स्कूल पढ़ने के लिए आओ। तुम्हारे बिना स्कूल में वह रौनक नहीं है।'

माध्यमिक शिक्षा का द्वितीय वर्ष : माध्यमिक स्कूल के द्वितीय वर्ष में, विद्यार्थियों की औसत आयु कुछ कम हो जाती है क्योंकि बड़ी आयु वाले बच्चे स्कूल में आना बंद कर देते हैं। अब पियरीनो तथा उसके अन्य सहपाठियों के मध्य अंतर कम हो जाता है।

यह कहा जा सकता है कि प्राथमिक स्कूलों में कक्षाओं की औसत आयु बढ़ती जाती है क्योंकि कई लड़के फेल होकर उसी कक्षा में बने रहते हैं। फिर माध्यमिक स्कूलों में औसत आयु कम हो जाती है क्योंकि अधिक आयु वाले बच्चे स्कूल छोड़कर काम करने लगते हैं।

घरों की भूमिका : स्कूल का सामाजिक ढांचा भी बदल जाता है। निकट शहर में हमारे एक मित्र ने एक अध्ययन किया। उन्होंने माध्यमिक स्कूलों के प्रथम और द्वितीय वर्ष में फेल होने वाले विद्यार्थियों को, सामाजिक वर्गों के आधार पर विभाजित किया है। उसके परिणाम चित्र संख्या चार में दिखाई देते हैं।

जब अध्यापिकाओं ने उक्त रेखाचित्र देखा तो उन्होंने कहा कि यह उनकी निष्पक्षता और ईमानदारी पर आक्षेप है।

उनमें से सबसे उग्र अध्यापिका ने प्रतिवाद किया कि उसने कभी विद्यार्थियों के परिवारों के बारे में न तो सूचना प्राप्त करने की कोशिश की और न उसे कभी ऐसी सूचना मिली। यदि उसका उत्तर कम नंबर के लायक है तो मैं कम नंबर ही दूंगी। उस बिचारी को नहीं मालूम कि यही तो हमारा भी उस पर आरोप है। असमान व्यक्तियों के साथ समानता का व्यवहार करना क्या न्यायसंगत है ?

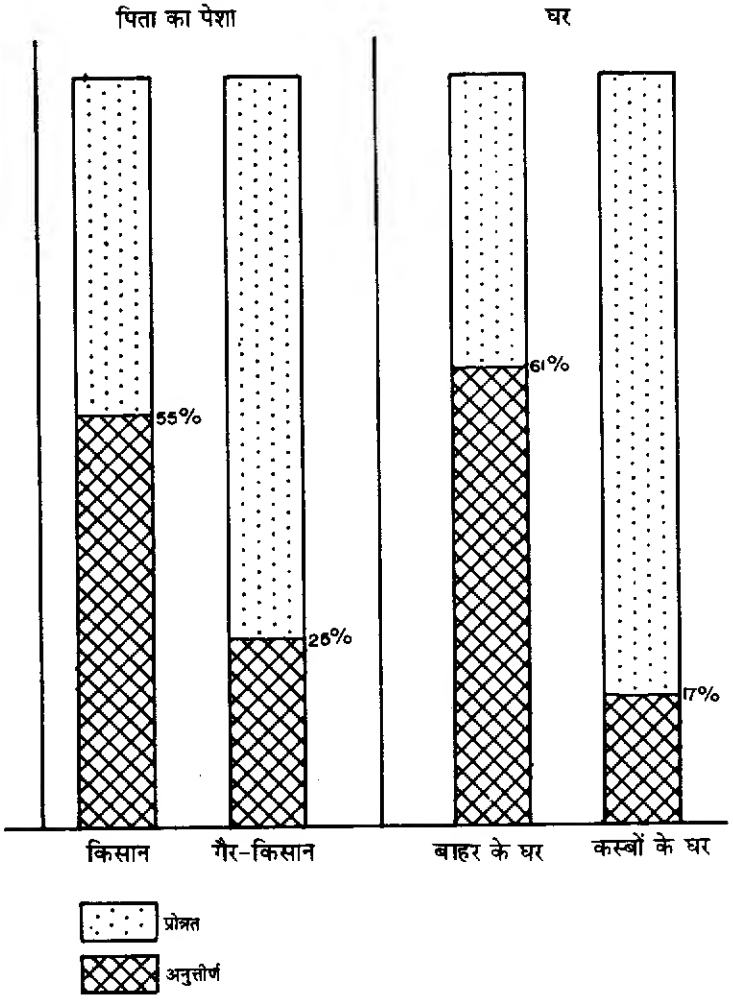

चित्र 6

वह किनके बारे में बात कर रही है : चाहे विद्यार्थियों की आयु का प्रश्न हो या उनकी सामाजिक स्थिति का, अध्यापिका को माध्यमिक स्कूल के दूसरे वर्ष में जाकर बड़ी राहत मिलती है। वह शेष पाठ्यक्रम बड़ी सरलता से पूरा करवा सकती है।

वह जून के आने की उत्सुकता से प्रतीक्षा करती है। तब उसके आखिरी चार काटे भी निकल जाएंगे और अब उसकी कक्षा उसकी शिक्षा के उपयुक्त रह जाएगी।

'जब वे माध्यमिक स्कूल के प्रथम वर्ष में आए थे तब वे सचमुच निरक्षर थे। परंतु अब उनके उत्तर बिलकुल सही होते हैं।'

वह किनके बारे में बात कर रही है ? उसके पास प्रथम वर्ष में जो बच्चे आए थे, वे कहां गए ? उसके पास अब लड़के जो बच गए हैं, वह तो शुरू से ही ठीक लिख सकते थे। वे प्राथमिक स्कूल के तीसरे वर्ष में भी इतना ही अच्छा लिख पाते थे। उन्होंने अपने घर पर लिखना सीखा था। जो प्रथम वर्ष में निरक्षर थे, वे अब भी निरक्षर हैं। उसने बस उन्हें फेल कर स्कूल से हटा दिया है। अतः वे दिखाई नहीं देते।

अनिवार्य : वह इस बात को अच्छी तरह जानती है। इतनी अच्छी तरह जानती है कि माध्यमिक शिक्षा के तृतीय वर्ष में वह बहुत कम विद्यार्थियों को फेल करती है। प्रथम वर्ष में सात फेल किए थे, द्वितीय वर्ष में चार और तृतीय वर्ष में केवल एक। जो करना चाहिए, उसका बिलकुल उलटा किया। अनिवार्य शिक्षा प्रणाली में, सभी विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से माध्यमिक स्कूल के तृतीय वर्ष तक पढ़ना चाहिए। उसके बाद अंतिम परीक्षा में अध्यापिका अच्छे और बुरे विद्यार्थी का चुनाव करे।

तब हम कुछ नहीं बोलेंगे। यदि लड़के ने उस समय तक लिखना नहीं सीखा, तो उसे फेल करना ठीक रहेगा।

सारांश : अनिवार्य शिक्षा के पूरे आठ वर्ष के काल में हम जिस कक्षा का आरंभ में अनुसरण कर रहे हैं उसने 40 बच्चों को खोया है। इनमें से 16 तो अनिवार्य शिक्षा काल समाप्त होने के पहले ही स्कूल छोड़ कर काम करने चले गए। 24 बच्चे फेल होने के कारण उसी कक्षा में फिर से पढ़ रहे हैं। कुल मिलाकर इस कक्षा से 54 बच्चे गुजर चुके हैं। माध्यमिक स्कूल के तृतीय वर्ष में, प्रथम वर्ष के 32 बच्चों में से केवल ग्यारह बच्चे अध्यापिका के पास शेष रह गए हैं।

अनिवार्य स्कूलों में विद्यार्थियों को फेल नहीं करना चाहिए

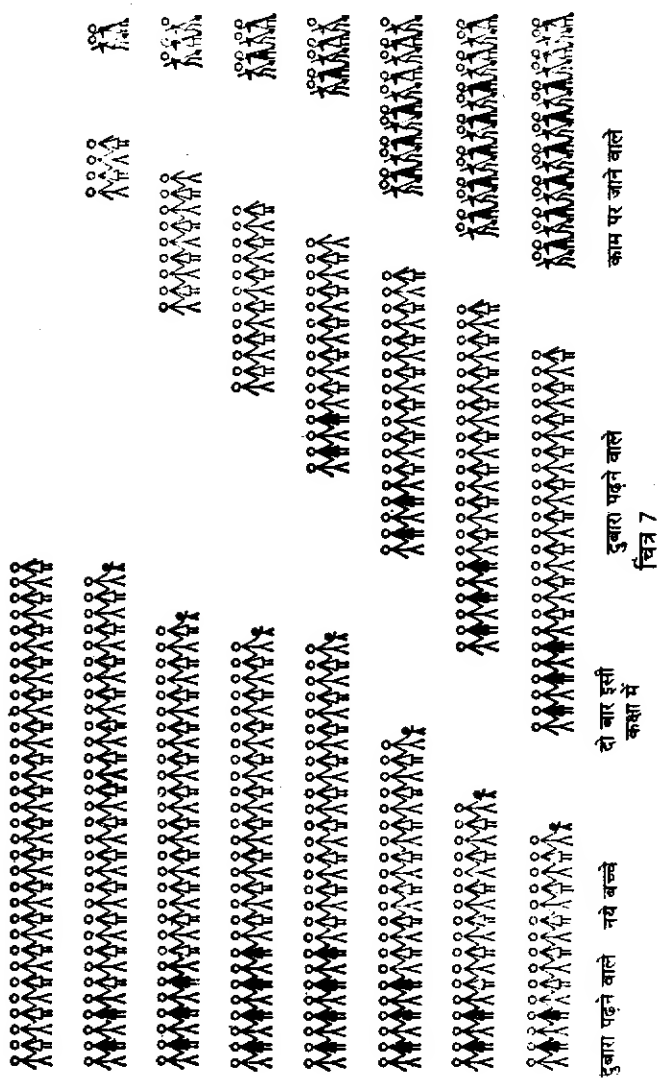

चित्र 7

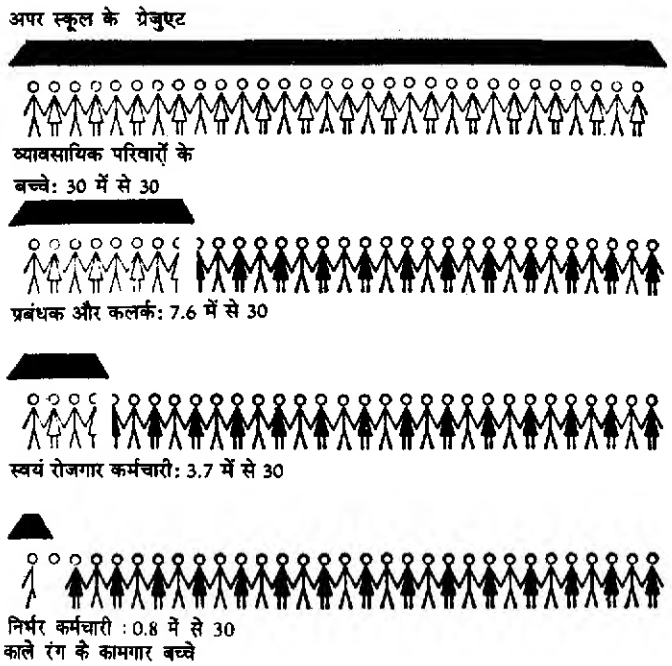

चित्र 8: पिता का पेशा

पिता का व्यवसाय : अब हम इस जगह उन बच्चों के पिताओं के व्यवसायों का सर्वेक्षण करें, जिन्हें माध्यमिक शिक्षा समाप्त होने का डिप्लोमा मिला है। केंद्रीय सांख्यिकी संस्थान ने ऐसा कोई सर्वेक्षण नहीं किया है। केंद्रीय सांख्यिकी संस्थान यह कैसे सोच सकता था कि अनिवार्य स्कूल प्रणाली में सामाजिक भेदभाव किया जाएगा ?

परंतु केंद्रीय सांख्यिकी संस्थान ने उन विद्यार्थियों के पिताओं के व्यवसायों का अध्ययन किया है, जिन्हें उच्च कक्षा का डिप्लोमा मिला है।

इन विद्यार्थियों ने आपके स्कूलों में बारह या तेरह वर्ष शिक्षा प्राप्त की है, जिसमें से आठ वर्ष अनिवार्य शिक्षा के थे। इस अध्ययन के परिणाम इस प्रकार हैं:

उच्च शिक्षा का डिप्लोमा प्राप्त करने वाले–

30 में से 0.8 मजदूरों के बच्चे
30 में से 3.7 अपना काम करने वाले कारीगरों के बच्चे
30 में से 7.6 प्रबंधकों के क्लर्कों के बच्चे
30 में से 30 व्यापारियों और व्यावसायिक पिताओं के बच्चे।

इसका कारण केवल धन नहीं है : हो सकता है कि कुछ बच्चों ने गरीबी के कारण स्कूल छोड़ दिया। इसमें आपका कोई दोष नहीं है। परंतु ऐसे कई श्रमिक थे जो अपने बच्चों को माध्यमिक शिक्षा के पूरे तीन वर्ष पूरे कराने के लिए दस ग्यारह वर्ष तक उन्हें स्कूल में पढ़ाने का खर्चा उठाने को तैयार थे।

उन्होंने भी पियरीनो के पिता के बराबर ही धन व्यय किया है, परंतु पियरीनो को इन बच्चों की आयु के बराबर होने तक उच्च शिक्षा का डिप्लोमा मिल चुका था।

पैदाइशी भेद

बुद्धि और आलसी : आपका कहना है कि आप केवल मंद बुद्धि वालों और आलसियों को ही फेल करते हैं।

फिर आपका यह भी दावा है कि भगवान मंद बुद्धि वालों को और आलसियों को निर्धन परिवार में जन्म देता है। परंतु भगवान गरीबों से द्वेष नहीं करता। अधिक संभावना तो यह है कि द्वेष आप करते हैं।

जातिगत भेद : संविधान सभा में एक फासिस्ट ने 'जन्मजात विभिन्नता' के सिद्धांत का समर्थन किया था। 'अनिवार्य' शब्द के प्रसंग में उन्होंने कहा कि कुछ बच्चों में जन्म से ही स्कूल जाने की क्षमता नहीं होती।

माध्यमिक शिक्षा के एक प्रधानाचार्य के अनुसार, 'दुःख है कि संविधान इसकी कोई गारंटी नहीं दे सकता है कि सब बच्चों का बौद्धिक विकास या अध्ययन के प्रति रुझान एक सा होगा।' परंतु वे अपने बच्चे के संबंध में इसे स्वीकार नहीं करेंगे। क्या वे अपने बच्चे को माध्यमिक शिक्षा समाप्त करने में असफल कर देंगे ? क्या वे उसे खेतों में जमीन खोदने के लिए भेज देंगे ? मैंने सुना है कि माओ के चीन में ऐसा ही होता है। पर क्या यह सच है ?

क्या अमीरों के बच्चों की समस्याएं नहीं होतीं ? परंतु उन्हें तो सहारा देकर आगे बढ़ाया जाता है।

दूसरों के बच्चे : दूसरों के बच्चे अक्सर हमें बेवकूफ प्रतीत होते हैं। परंतु अपने नहीं। चूंकि हम उनके निकट रहते हैं तो हमें यह अनुभव होता है कि वे बुद्धिहीन नहीं हैं। न वे आलसी हैं। कम से कम हमें ऐसा लगता है कि शायद कुछ समय बाद ये ठीक हो जाएंगे या इनका कोई उपचार ढूंढ़ना चाहिए।

ईमानदारी की बात शायद यह है कि सभी बच्चे जन्म के समय समान होते हैं यद्यपि बाद में वे समान नहीं रहते। इसमें दोष हमारा है और हमें इसका उपचार ढूंढ़ना चाहिए।

बाधाओं को दूर करना : गियात्री के संदर्भ में संविधान यही कहता है, 'कानून के समक्ष सब नागरिक समान हैं, चाहे वे किसी मूल वंश के हों, उनकी भाषा, वैयक्तिक या सामाजिक स्थिति चाहे जैसी हो।'

गणतंत्र का यह कर्तव्य है कि उन सब बाधाओं को दूर करे जो आर्थिक और सामाजिक स्थिति से उत्पन्न होती हैं, जो नागरिकों की स्वतंत्रता और समानता को सीमित करती हैं, मनुष्य के व्यक्तित्व का संपूर्ण विकास नहीं होने देतीं, तथा सब श्रमिकों को देश के आर्थिक और सामाजिक संगठन में पूरी तरह भागीदार बनने से रोकती हैं। (धारा 3)

आपका कर्तव्य

सफाई : आपकी एक सहकर्मी अध्यापिका ने, जो एक सुंदर नवविवाहिता युवती है, माध्यमिक शिक्षा के प्रथम वर्ष में 28 बच्चों में से 10 को फेल कर दिया।

वह और उसके पति दोनों कट्टर कम्युनिस्ट हैं। उन्होंने हमसे यह तर्क किया, 'मैंने उन्हें स्कूल से तो नहीं भगाया। मैंने तो उन्हें परीक्षा में फेल किया था। यदि उनके मां-बाप यह नहीं चाहते कि वे फिर से स्कूल पढ़ने जाएं, तो यह उनकी मरजी।'

गियात्री का पिता : गियात्री के पिता ने लोहार का काम करना बारह वर्ष की अवस्था से प्रारंभ कर दिया था। उसने स्कूल की चौथी कक्षा की पढ़ाई भी समाप्त नहीं की थी।

जब वह 19 वर्ष के थे तो वे फासिस्टों से लड़ने के लिए एक छापामार दल में शरीक हो गए थे। उनको ठीक से समझ नहीं थी कि वे क्या कर रहे हैं। परंतु फिर भी उन्हें आप सबसे अधिक समझ थी। वह ऐसे संसार की आशा कर रहे थे जहां न्याय होगा और जहां गियान्नी अन्य के समान रहेगा। गियात्री, जो उस समय तक पैदा भी नहीं हुआ था।

उसको धारा 3 में से शब्द सुनाई देते हैं, 'श्रीमती स्पेडोलीनी, (एक अध्यापिका) का यह कर्तव्य है कि वह रास्ते से सारी बाधाएं दूर करेगी...।' उसी के पैसे से यह प्रणाली चलती है। उसको प्रति घंटे 300 लीरा मिलते हैं और उसमें से वह आपको 4,300 दे देता है।

वह आपको इससे भी अधिक देने के लिए तैयार है यदि आप कुछ और अधिक कार्य करें। वह एक वर्ष में 2,150 घंटे काम करता है जबकि आप 522 घंटे काम करती हैं। (मैं परीक्षा का समय नहीं गिन रहा हूं क्योंकि वह शिक्षण कार्य का समय नहीं है।)

प्रतिस्थापन : गियात्री का पिता अपने जीवन की समस्याओं को स्वयं हल नहीं कर सकता। उसको नहीं मालूम कि माध्यमिक स्कूल के लड़के पर कैसे अनुशासन रखा जाए। बच्चे को कितनी देर अपनी मेज पर बैठकर पढ़ना चाहिए और क्या थोड़ी देर का मनोरंजन उसके लिए ठीक रहेगा या नहीं ? क्या यह सच है कि पढ़ने से सिर में दर्द हो जाता है और जैसा गियात्री कहता है, उसकी आंखे किरकिराने लगती हैं ? यदि गियात्री का पिता स्वयं ही सब प्रबंध कर पाता तो वह पढ़ने के लिए गियात्री को आपके पास नहीं भेजता। यह आपकी जिम्मेदारी है कि आप गियात्री को शिक्षा और प्रशिक्षण दोनों दें। यह दोनों एक ही समस्या के दो पहलू हैं।

यदि आप उसका मार्गदर्शन करें, तो गियात्री आपके साथ भिन्न तरीके से कार्य कर सकता है और आगे चल कर अधिक सुयोग्य पिता बन सकता है। गियात्री का पिता जैसा है, वह वही है, जैसा धनी लोगों ने उसे बनने दिया।

ट्यूशन का रोग : बेचारा गियात्री का पिता। यदि उसे पता होता कि क्या हो रहा है तो शायद वह फिर से अपने हथियार लेकर छापामारों के दल में सम्मिलित हो जाता। ऐसे कई अध्यापक हैं जो अपने अतिरिक्त समय में पैसा लेकर अलग से बच्चों की ट्यूशन करते हैं। अतः बाधाओं को दूर करने के बजाए वे छात्रों के मध्य भेद और बढ़ा देते हैं।

सवेरे के समय, स्कूल के नियमित समय में—वे सब विधार्थियों को एक सी शिक्षा देते हैं, जिसके लिए हम लोग उन्हें वेतन देते हैं। बाद में शाम को वे धनी लोगों से, उनके लड़कों को विभिन्न तरीके से पढ़ाने के लिए, अतिरिक्त धन लेते हैं। फिर जून में निर्णायक बनकर वे इस विभिन्नता पर फैसला देते हैं।

छोटा सरकारी अफसर : यदि कोई छोटा सरकारी अफसर अपने घर में तो पैसा लेकर अपनी सारी कागजी कार्यवाही यथाशीघ्र और उचित रूप से करे परंतु अपने दफ्तर में वही काम धीरे-धीरे और खराब ढंग से करे, तो आप उसे जेल में बंद कर देंगे ?

सोचिए, यदि वह अपने ग्राहकों से कहे कि 'इस दफ्तर में तो तुम्हें तुम्हारे कागजात देर से और अव्यवस्थित ढंग से दिए जाएंगे। तुम किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढ़ लो जो कुछ अतिरिक्त धन लेकर इसी काम को घर पर अधिक सुचारु रूप से कर ले।' तो उसे जेल हो जाएगी।

परंतु उस प्रधानाध्यापिका को कोई नहीं पकड़ता जिसे मैंने एक मां से कहते हुए सुना, 'यह लड़का अपने आप पास नहीं हो सकता। इसे ट्यूशन की आवश्यकता है।' उसने बिलकुल यही कहा था। एक-एक शब्द यही था। मेरे पास इसके साक्षी हैं। मैं न्यायालय में इसे प्रमाणित कर सकता हूं।

न्यायालय में ? शायद न्यायाधीश की पत्नी भी ट्यूशन करके अतिरिक्त धन कमाती हो और इटली की दंड संहिता में, किसी कारण से, इसे अपराध नहीं माना गया है।

प्याज : आप सब इसमें एकमत हैं। आप हम लोगों को कुचल देना चाहते हैं। ठीक है, कुचलिए। परंतु ईमानदारी का ढ़ोंग तो मत करिए। आपके लिए ईमानदार होने में क्या कठिनाई है जब दंड संहिता आपके ही द्वारा लिखी गई है और आपके की स्वार्थ के लिए बनाई गई है।

मेरे एक पुराने मित्र ने एक खेत से 40 प्याज चुरा लिए। उसे 13 महीने के लिए जेल की सजा हुई—किसी प्रकार की दया नहीं दिखाई गई। न्यायाधीश

महोदय तो निस्संदेह प्याज नहीं चुराते हैं। वह अपनी नौकरानी को बाजार भेजकर प्याज खरीद लेते हैं। नौकरानी के लिए तथा प्याज के लिए जो धन चाहिए वह उनकी पत्नी ट्यूशन करके अर्जित करती है।

पादरी अधिक ईमानदार हैं : कुछ स्थानीय स्कूल अपने इरादों में अधिक सुस्पष्ट हैं, यद्यपि वे भी वर्ग संघर्ष में अपनी भूमिका निबाह रहे हैं। परंतु कम से कम वे इसे छिपाने का प्रयास तो नहीं करते। फ्लोरेंस के बार्नाबीती संप्रदाय के स्कूल में छात्रावास में रहने वाले छात्र का शिक्षा शुल्क 40,000 लीरा प्रति मास है। स्कालोपी संप्रदाय के स्कूल में शिक्षा शुल्क 36,000 लीरा है।

वे दिन रात एक ही स्वामी की सेवा करते हैं। वे आपकी तरह दो स्वामियों की सेवा नहीं करते।

स्वतंत्रता : एक और दूसरी बाधा है जिसे आप हटाने का कोई प्रयास नहीं करते—वह है फैशन से प्रभावित होना।

एक दिन गियात्री ने हमसे टीवी के बारे में बात करते हुए कहा—हमें इसमें वे निरर्थक बातें बताते हैं। यदि वे इसके द्वारा हमें स्कूल जाने की ओर प्रेरित करते, तो हम उधर ही जाते।

उसने 'वे' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया ? शायद इससे उसका तात्पर्य चारों ओर के समाज से, संसार से या ऐसे अनचीन्हे लोगों से था जो गरीबों के विकल्पों का मार्गदर्शन करते हैं।

शहर में कई प्रकार के प्रचलित फैशन उस पर प्रभाव डालते हैं, यद्यपि उनमें से किसी का कोई विशेष महत्व नहीं होता। यदि लड़का उन फैशनों का अनुसरण नहीं करता तो अन्य लड़के उसे अपने से अलग और भिन्न मानते हैं, या उसमें इतनी हिम्मत हो कि वह उनकी परवाह न करे। गियात्री में उतनी हिम्मत नहीं है। अभी उसकी आयु बहुत कम है। किसी ने उसे ठीक से शिक्षा नहीं दी है और कोई उसकी सहायता नहीं करता। उसे अपने पिता से भी कोई समर्थन नहीं मिलता, क्योंकि पिता भी उसी व्यवस्था से प्रभावित हैं। उसके क्षेत्र के पादरी से भी उसे कोई सहायता नहीं मिलती और न कम्युनिस्टों से। सभी उसे इसी प्रचलित व्यवस्था में और अंदर घसीटते हैं।

मानो हमारी प्राकृतिक इच्छाएं हमे पहले ही काफी परेशान नहीं करती थीं।

फैशन : एक प्रचलित धारणा यह है कि 12 से 21 वर्ष तक की आयु मौज करने के लिए है और इन वर्षों में खेलना चाहिए तथा लड़कियों के साथ मौजमस्ती करना चाहिए और पढ़ाई से दूर भागना चाहिए।

12 से 15 वर्ष तक की आयु भाषा सीखने के लिए सर्वोत्तम आयु है। 15 से 21 वर्ष तक की आयु, भाषा को यूनियन या राजनीतिक सभाओं में प्रयोग करने के लिए सर्वोत्तम है। परंतु ये तथ्य गियात्री को किसी ने नहीं बताए हैं।

उसको यह भी किसी ने नहीं बताया कि समय बहुत मूल्यवान है, उसे खोना नहीं चाहिए। पंदरह वर्ष की अवस्था में स्कूल छूट जाएगा। 21 वर्ष की अवस्था में कई व्यक्तिगत समस्याएं घेर लेंगी—सगाई, शादी, बच्चे, नौकरी। उसे सभाओं में जाने का समय नहीं मिल पाएगा। अपने विचार प्रदर्शित करने में वह सकुचाएगा और घर के बाहर की गतिविधियों में पूर्ण रूप में सम्मिलित नहीं हो सकेगा।

गरीबों की सुरक्षा : गुरुजी, केवल आप अध्यापिकाएं ही फैशन के नियमों से गरीबों की रक्षा कर सकती थीं। सरकार आपको प्रति वर्ष 80,000 करोड़ लीरा इसी कार्य के लिए देती है।

लेकिन आप इतनी निकृष्ट शिक्षक हैं कि साल में 185 दिन की छुट्टी देती हैं और चार घंटे पढ़ाती हैं और शेष 12 घंटे बच्चे बाहर घूमते हैं। प्रधानाचार्य भी इतने जड़बुद्धि हैं कि वे कक्षा में आकर घोषणा करते हैं, 'शिक्षा अधिकारी ने 3 नवंबर की एक नई छुट्टी मंजूर की है,' इस पर बच्चे खुशी से चिल्लाते हैं और प्रधानाचार्य आत्मसंतुष्ट होकर मुसकराते हैं।

आपने स्कूल को उपद्रव का केंद्र बना दिया है। कैसे यह आशा की जा सकती है कि बच्चे इसे प्यार करेंगे।

हम एक दूसरे को प्यार करें : बोरगो शहर में प्रधानाचार्य ने माध्यमिक कक्षाओं के तीसरे वर्ष के लड़के और लड़कियों को नाचने के लिए स्कूल में एक कमरा दे दिया है। दूसरा स्थानीय स्कूल भी क्यों पीछे रहे। उसने अपने यहां नकली चेहरे पहनाकर परेड आयोजित की। एक अध्यापक, जिन्हें मैं जानता हूं, अपनी जेब में खेलकूद की पत्रिका रखकर घूमते हैं।

ये वे लोग हैं जो नवयुवकों की आवश्यकताओं को समझते हैं। संसार जिस रूप में है, उसी में उसे स्वीकार करना कितना सरल है।

जिस अध्यापक की जेब से खेलकूद की पत्रिका दिखाई दे रही है उसकी ऐसे श्रमिक पिता से अच्छी दोस्ती हो जाएगी जिसकी जेब में भी खेलकूद पत्रिका हो। वह अपने पुत्र की बात करेंगे जो सदा खेलता रहता है या पुत्री की बात करेंगे जो घंटों शृंगार की दुकान पर बैठी रहती है।

उसके बाद अध्यापक नंबर देते समय उसके नाम के आगे लाल रंग की लकीर बना देता है, और मजदूर का बेटा पढ़ाई छोड़कर काम पर चला जाता है। अभी उसने ठीक से पढ़ना भी नहीं सीखा है। परंतु अध्यापक का बेटा अपनी पढ़ाई पूरी करेगा, चाहे उसकी उसमें रुचि न हो या उसे वह ठीक से समझ में न आती हो।

यह चयन कुछ लोगों के लिए उपयोगी है

भाग्य या योजना : यहां कुछ लोग सारा दोष भाग्य को देना आरंभ कर देंगे। भाग्य को आधार मानकर इतिहास पढ़ना बड़ा शांतिपूर्ण है।

परंतु यदि राजनीति को आधार मानकर उसका अध्ययन किया जाए तो शांति भंग हो जाती है। तब पता चलता है कि प्रचलित प्रथाएं ऐसी सुविचारित योजनाएं हैं, जिनके द्वारा यह पक्का किया जाता है कि गियात्री जैसे बच्चे आगे नहीं बढ़ पाएं। राजनीति विमुख अध्यापक उन 4,11,000 उपयोगी मूढ़ मति अध्यापकों में एक हैं जिसका उपयोग शिक्षा प्रणाली कर रही है। उसके द्वारा रिपोर्ट कार्ड तथा नंबर रजिस्टर जैसे अस्त्रों को देकर 10,31,000 गियात्री जैसे बच्चों की स्कूल से छंटनी की जाती है जिससे जिन बच्चों पर प्रचलित फैशन का पर्याप्त प्रभाव न पड़ सके, वे इनके द्वारा आगे बढ़ने से रोग दिए जाएं।

एक वर्ष में 10 लाख 31 हजार बच्चे स्कूल से 'तिरस्कृत' किए जाते हैं। यह शब्द सेना में अनिवार्य भरती के समय भी प्रयोग किया जाता है। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि परीक्षा का आविष्कार प्रशिया में हुआ था।

कर प्रणाली : आश्चर्यजनक बात यह है कि हमको स्कूल से निकालने वालों को वेतन हम ही देते हैं—हम, जो स्कूल से तिरस्कृत किए जाते हैं।

जो व्यक्ति अपनी समस्त आय खर्च कर देता है, वह गरीब है। धनी व्यक्ति वह है जो अपनी आय का केवल कुछ भाग खर्च करता है। इटली में उपभोक्ता सामग्री पर बहुत अधिक कर लगाया जाता है—इसका कोई स्पष्ट तर्क नहीं है। परंतु आयकर तो हास्यास्पद है।

मुझे बताया गया है कि अर्थशास्त्र की पुस्तकों में ऐसी कर प्रणाली को 'पीड़ाहीन' कहा गया है। पीड़ाहीन का अर्थ है कि धनी वर्ग ऐसा प्रबंध करे जिससे गरीब आदमी को कर देते समय इसका आभास ही नहीं हो।

विश्वविद्यालयों में इन समस्याओं पर अक्सर चर्चा होती है। परंतु वहां केवल संभ्रांत वर्ग के व्यक्ति होते हैं। निम्न कक्षाओं में ऐसी चर्चा वर्जित है। स्कूलों

में राजनीति की बातें करना अच्छा नहीं समझा जाता। इसे व्यवस्थापक पसंद नहीं करते।

लाभ किसे : आइए, हम यह देखने का प्रयास करें कि स्कूल का समय कम करने में किसका लाभ होता है।

एक वर्ष में 720 घंटे स्कूल लगने के अर्थ हैं कि औसतन एक दिन में प्रायः दो घंटे पढ़ाई होती है। परंतु एक लड़का इसके अतिरिक्त 14 घंटे और जगता है। धनी परिवारों में इन 14 घंटों का उपयोग सांस्कृतिक विकास में किया जाता है।

परंतु किसानों के बच्चों के लिए ये 14 घंटे अकेलेपन और खामोशी के होते हैं जो उनके संकोची स्वभाव को और बढ़ाते हैं। मजदूरों के बच्चों पर, इन चौदह घंटों में, अप्रत्यक्ष प्रभावों को अपना जोर दिखाने का समय मिलता है।

गरमी की छुट्टियां तो विशेष रूप से मानो धनी वर्ग के लिए ही बनाई गई हैं। उनके बच्चे विदेशों में घूमने जाते हैं और जाड़े से अधिक ही नई बातें सीखते हैं। परंतु निर्धन बच्चे छुट्टियों में वह सब भूल जाते हैं जो उन्होंने छुट्टियां शुरू होने से पहले स्कूल में पढ़ा था। यदि उन्हें छुट्टियों के बाद किसी विषय पर परीक्षा देनी होती है, तो उसकी तैयारी करने के लिए उनके पास ट्यूटर को देने के लिए पैसे नहीं होते हैं। किसानों के लड़के अपने परिवार को आर्थिक सहायता देने के लिए गरमियों में खेत पर काम करते हैं।

स्पष्ट बात : जियोलिट्टी के समय सब बात स्पष्ट और साफ-साफ शब्दों में कही जाती थी। 'काल्टोजिरोने' में संपन्न व्यक्तियों का एक सम्मेलन हुआ जिसमें प्राथमिक शिक्षा को समाप्त कर देने का सुझाव रखा गया। इसका कारण यह था कि पढ़-लिखकर किसान और खान में काम करने वाले मजदूर नए विचारों को ग्रहण कर लेते हैं।

फर्डिनेंडो मार्टिनी भी इतना ही स्पष्टवादी था। इस पर दुःख प्रकट करते हुए कि अब निम्न वर्ग के लोग भी माध्यमिक स्कूलों में पढ़ने लगे हैं, उसने कहा, 'इसी कारण अब विशिष्ट वर्ग को अपने प्रयास बढ़ाने चाहिए अन्यथा उनके हाथ से सभी राजनीतिक और आर्थिक सुविधाएं निकल जाएंगी।'

फासिस्ट : फासिस्ट शासन में सब नियम सुस्पष्ट थे। शहरों और बड़े ग्रामीण केंद्रों के स्कूलों में प्राथमिक कक्षाओं में सामान्यतः निम्न और उच्च श्रेणियां (पांच

वर्ष) होंगी, परंतु छोटे ग्रामीण केंद्रों में सामान्यतः केवल निम्न श्रेणी ही होगी (तीन वर्ष)।

बाद में, संविधान सभा में, फासिस्टों ने ही स्कूल छोड़ने की आयु घटाकर तेरह वर्ष करने की सिफारिश की थी।

बेचारा पियरीनो : परंतु ऐसा बोलने वाले वे अकेले ही थे। अन्य राजनीतिक नेताओं ने अब यह सीख लिया है कि आजकल धूर्तता से बात करना ही लाभदायक होता है।

जब असेंबली में नए माध्यमिक स्कूलों पर विचार विमर्श हो रहा था, तब गरीबों के विरुद्ध कुछ भी बोलना निषिद्ध था। अतः बोलने को कुछ बचा ही नहीं। केवल 'बेचारे पियरीनो' पर तथा लैटिन भाषा की समाप्ति पर आंसू बहाए गए।

क्रिश्चियन डिमोक्रेटिक दल के एक सदस्य ने बहुत ही प्रभावशाली भाषण दिया, 'हम प्रतिभाशाली बच्चों को क्यों सजा दें ? हम क्यों उन्हें ऐसे स्कूलों से बांधे जहां उन्हें कम-बुद्धि वाले बच्चों के साथ चलना पड़ता है, जिससे उनकी प्रतिभा कुंठित हो जाती है ?'

मालिक

क्या उसका अस्तित्व है : आपको शायद ऐसा प्रतीत हो कि हम आपका परिचालन करने वाले स्वामी की ओर संकेत कर रहे हैं—कोई ऐसा व्यक्ति जिसने पूर्व योजना के अनुसार स्कूल प्रणाली का गठन किया है।

क्या ऐसा स्वामी वस्तुतः कोई है ? क्या ऐसा होता है कि चंद व्यक्ति एक मेज के चारों और बैठे हैं और सारी बागडोरें उन्हीं के हाथ में हैं ? बैंक, व्यापार, राजनीतिक तंत्र, प्रेस और फैशन की ?

हमें मालूम नहीं। यदि हम इसका दावा करें तो हमें लगता है हमारी पुस्तक की शैली किसी रहस्य-रोमांच की तरह हो जाएगी। यदि हम ऐसा नहीं कहते तो आप यह समझेंगे कि हम भोले बनने की कोशिश कर रहे हैं। यह तर्क तो इसी प्रकार का हुआ कि गाड़ी के सारे कल-पुरजे यथास्थान लग जाना संयोग मात्र है और यह भी संयोग ही है कि शस्त्र सुसज्जित वाहन बिना चालक के युद्ध कर रहा है।

पियरीनो का घर : शायद पियरीनो के जीवन का अध्ययन करने से हमें कोई

सुराग मिल जाए। अतः आइए, उसके परिवार पर एक नजर डालें।

समाज के शिखर पर डाक्टर तथा उसकी धर्मपत्नी विराजमान हैं। वे पढ़ते हैं, यात्रा करते हैं, अपने मित्रों से मिलते हैं, अपने बच्चे से खेलते हैं, समय निकाल कर उसकी गतिविधियों पर ध्यान देते हैं और यह काम अच्छी तरह करते हैं। घर, किताबों और संस्कृति से भरा है। जब मैं पांच वर्ष का था तो मुझे फावड़ा चलाना आ गया था। पियरीनो ने पांच वर्ष में पेंसिल चलाना सीख लिया था।

एक दिन उन्होंने मजाक-मजाक में कहा, 'इसे प्रथम वर्ष की कक्षा में क्यों भरती कराएं ? इसे सीधे द्वितीय वर्ष में भरती होना चाहिए।' उन्होंने उसे परीक्षा के लिए भेजा। इसमें उन्होंने तनिक भी सोच-विचार नहीं किया । यदि वह सफल न भी हुआ तो भी क्या बिगड़ता।

परंतु वह असफल नहीं हुआ। उसे सब में 90 प्रतिशत नंबर मिले। परिवार आनंद से भर गया। यदि मेरे साथ ऐसा होता तो मेरा परिवार भी ऐसे ही आनंद का अनुभव करता।

गीली धरती पर वर्षा : इस सब में एक विषमता यह है कि उस युवक दंपत्ति को एक कानून ऐसा मिलता जो मानो उसी के लिए बनाया गया हो। कानून के अनुसार पांच वर्ष का बालक स्कूल की प्रथम वर्ष की कक्षा में भरती नहीं हो सकता, परंतु छः वर्ष का बालक द्वितीय वर्ष में भरती हो सकता है या तो यह कानून बेवकूफी का है या इसमें बड़ी धूर्तता भरी हुई है।

पियरीनो के मां-बाप ने तो कानून बनाया ही नहीं था। उन्हें इसके अस्तित्व के बारे में पहले मालूम नहीं था। परंतु इसे किसने बनाया था ?

एक विशेष बालक : जिस प्रकार पियरीनो की शिक्षा आरंभ हुई, उसी प्रकार वह आगे भी जारी रही। प्रति वर्ष वह कक्षा चढ़ता गया और वह कोई विशेष परिश्रम से पढ़ता नहीं है।

मैं दिल तोड़कर मेहनत करता हूं परंतु फिर भी फेल हो जाता हूं। उसके पास खेलकूद का भी समय है, विभिन्न क्लबों में जाने का समय है। तरुण अवस्था में प्रवेश करने पर वह संकटकाल से गुजरा, उस कुछ उदासी छाई रही, कुछ समय उसने विद्रोह किया।

अठारह वर्ष का होने पर भी अभी उसमें उतनी परिपक्वता नहीं आई है, जितनी मुझमें बारह वर्ष की अवस्था में आ गई थी। वह बड़े अच्छे नंबरों से पास होगा और स्नातक बन जाएगा और घर पर कोई वेतन अर्जित करके नहीं लाएगा।

बिना पारिश्रमिक काम करना : जी हां, बिना पारिश्रमिक लिए कार्य। इसका कौन विश्वास करेगा ? स्नातक छात्र बिना कुछ अर्जित किए पढ़ाई करते हैं।

यहां हमारे सामने एक और विचित्र कानून आता है, जिसके पीछे गौरवमय कानूनी परंपरा है। कालोर्ट एलबर्टो अधिनियम में घोषित किया गया है, 'संसद सदस्यों को अपने कार्यों के लिए कोई पारिश्रमिक नहीं मिलेगा।'

यह इसलिए नहीं क्योंकि उन्हें भौतिक वस्तुओं के प्रति कोई भावनात्मक विरक्ति है। यह निम्न वर्गों को बिना उनके मुंह पर स्पष्ट कहे हुए संसद से अलग करने का बड़ा सुसंस्कृत तरीका है।

संभ्रांत वर्ग में वर्ग संघर्ष बड़ी भद्रता से चलता है। न तो चर्च के पादरी और न बुद्धिजीवी ही इसमें कोई दोष देखते हैं।

पियरीनो की मां : पियरीनो अंत में प्रोफेसर बन जाएगा। उसे अपने ही वर्ग की पत्नी भी मिल जाएगी। उनका पुत्र भी पियरीनो के अनुरूप ही होगा। प्रतिवर्ष ऐसी ही स्थिति की तीस हजार घटनाएं होती हैं।

यदि हम पियरीनो की मां के बारे में विचार करें, तो वह कोई जंगली जानवर नहीं थी। वह तनिक स्वार्थी थी। दूसरे बच्चों के अस्तित्व पर उसका ध्यान कभी गया ही नहीं। यद्यपि वह पियरीनो को दो अन्य पियरीनो जैसे बच्चों से मिलने को मना नहीं करती थी। वह तथा उसके पति बुद्धिजीवियों से घिरे रहते थे। स्पष्ट है कि उन्हें परिवर्तन की इच्छा नहीं थी।

पियरीनो के 31 सहपाठियों की माताओं के पास या तो समय नहीं है या उन्हें अपनी स्थिति से बेहतर स्थिति का ज्ञान नहीं है। वे काम पर जाती हैं, जिससे मुश्किल से घर का खर्च चलाने भर का पैसा मिलता है। उन्हें बचपन से वृद्धावस्था तक, सवेरे से शाम तक, काम करना पड़ता है।

परंतु पियरीनो की मां, 24 वर्ष की अवस्था तक स्कूल जाती थी। इसके अतिरिक्त उसे घर के काम के लिए भी उन 31 माताओं में से एक की सहायता मिलती है—यह मां किसी गियात्री की मां होगी जो पियरीनो की मां के घर का काम करने के लिए अपने पुत्र की उपेक्षा करती है।

उसे अपनी रुचि को विकसित करने के लिए तमाम समय मिलता है। यह गरीब लोगों की उसे दी गई भेंट है या यह धनी वर्ग की चोरी है ?

मुख्य हिस्सेदार : पियरीनो की मां के विषय में यह निष्कर्ष निकलता है कि वह न तो कोई पशु है और न इतनी भोली है। यदि हम उसकी तरह के हजार छोटे-मोटे स्वार्थी दृष्टिकोणों को जोड़ दें, तो हमें एक संपूर्ण वर्ग का कुल स्वार्थ मिलता है, जो अपने लिए सबसे बड़े हिस्से का दावा करता है।

यह वर्ग वह है जिसने फासिज्म, जातिवाद, युद्ध और बेकारी को जन्म दिया है। यदि यथास्थिति को बनाए रखने के लिए सब कुछ बदल देने की आवश्यकता पड़े तो ये साम्यवाद अपनाने में भी नहीं हिचकेंगे।

उनके सूक्ष्म तरीके कोई नहीं जान सकता परंतु प्रत्येक कानून ऐसा प्रतीत होता है कि पियरीनो के लाभ के लिए और हमें दबाए रखने के लिए बना है। हमें यह विश्वास करना कठिन है कि यह महज संयोग है।

चयन का उद्देश्य पूरा हो गया

विश्वविद्यालय में : विश्वविद्यालयों के छात्रों में 86.5 प्रतिशत बड़े बाप के बेटे हैं—श्रमिकों के लड़के 13.5 प्रतिशत हैं। जिनको डिग्री मिलती है, उनमें से 91.9 प्रतिशत लड़के भद्र परिवारों के हैं तथा 8.1 प्रतिशत मजदूर परिवारों के हैं।

यदि विश्वविद्यालय के सभी गरीब छात्र एकजुट होकर रहते तो शायद वे कुछ सार्थक कार्य कर पाते। पर नहीं, धनी छात्र उनका अपने भाइयों की तरह स्वागत करते हैं और अपनी बुरी आदत उनमें भी डाल देते हैं।

अंतिम परिणाम : शत प्रतिशत बड़े बाप के बेटे।

राजनीतिक दलों में : विभिन्न राजनीतिक दलों में सभी स्तरों पर जितने भी सक्रिय नेता हैं—सभी विश्वविद्यालयों के स्नातक हैं।

श्रमिक दलों में भी यही स्थिति है। मजदूरों के दल बड़े बाप के बेटों का तिरस्कार नहीं करते और बड़े बाप के बेटे भी, जब तक उन्हें प्रमुख स्थान मिलता रहे, मजदूरों के दल की अवहेलना नहीं करते।

सच तो यह है कि आजकल 'धनी' लोगों का गरीबों के साथ काम करने का फैशन हो गया है। यह वास्तव में 'गरीबों के साथ' काम करना इतना नहीं है, जितना 'गरीबों का नेतृत्व करना' है।

उम्मीदवार : राजनीतिक नेता उम्मीदवारों की सूचियां बनाते हैं। उसमें कुछ श्रमिकों के नाम भी सम्मिलित होते हैं—यह दिखावा मात्र है अपनी कैफियत देने के लिए। परंतु बाद में वे केवल विश्वविद्यालयों के स्नातकों को ही वरीयता देते हैं। 'आप ऐसे लोगों पर अपनी समस्याओं को छोड़ दीजिए जो इन पद्धतियों से परिचित हैं। मजदूर तो संसद में भटक जाएगा। और डाक्टर 'क' हमीं में से एक है।'

विधानसभा : निष्कर्ष में यह कहा जा सकता है कि नए कानून बनाने के लिए जिनका चुनाव किया जाता है, वे वही लोग हैं, जो पुराने कानूनों से भी काफी प्रसन्न थे। ये वही लोग हैं जिन्हें उन चीजों का कोई व्यक्तिगत अनुभव नहीं है जिनमें परिवर्तन की आवश्यकता है। ये वही लोग हैं जिन्हें राजनीति में भाग नहीं लेना चाहिए।

विधान सभा में 77 प्रतिशत सदस्य विश्वविद्यालय के स्नातक हैं। लेकिन वोट देने वालों में केवल 1.8 प्रतिशत ऐसे हैं जिनके पास विश्वविद्यालय की डिग्री है। विधान सभा के सदस्यों में मजदूरों और यूनियन के सदस्यों की संख्या 8.4 प्रतिशत है और वोट देने वालों में इनकी संख्या 51.1 प्रतिशत है। विधान सभा में किसानों की संख्या 0.1 प्रतिशत है जबकि वोट देने वालों में उनका अनुपात 28.8 प्रतिशत है।

काली सत्ता : स्टोकले कार्माइकिल* 27 बार जेल जा चुका है। उसने अपने अंतिम मुकदमे में कहा, 'एक भी ऐसा श्वेत आदमी नहीं है जिसका मैं विश्वास कर सकूं।'

एक श्वेत युवक, जिसने अपना सारा जीवन, काले लोगों के निमित्त समर्पित कर दिया था, बोला, 'स्टोकले, क्या एक भी नहीं ?' कार्माइकिल ने जनता की ओर देखा, फिर अपने श्वेत मित्र की ओर देखा और कहा, 'नहीं, एक भी नहीं।'

यदि इस पर उस श्वेत युवक ने बुरा माना तो कार्माइकिल का कहना ठीक ही था। यदि श्वेत युवक सचमुच में काले लोगों की ओर है, तो वह इसे भी बरदाश्त करेगा और सामने से हटकर काले लोगों से प्रेम करता रहेगा। कार्माइकिल शायद इसी घड़ी का इंतजार कर रहा था।

वामपंथी और मध्यमार्गी समाचारपत्रों ने, बारबियाना के स्कूल के समस्त प्रकाशनों की सदा से प्रशंसा की है। इस पुस्तक के बाद शायद वे दक्षिणपंथियों से मिल जाएं और हमसे घृणा करने लगें। तब तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि एक दल ऐसा है जो अन्य सब दलों से महान है—इटली के स्नातकों का दल।

आपकी पढ़ाई से किसे लाभ

नेकनीयती : अध्यापकों की नेकनीयती एक अलग बात है।

आप अध्यापिकाओं को सरकार वेतन देती है। बच्चे आपके सामने हैं।

* स्टोकले कार्माइकिल—अमेरिका के काली सत्ता आंदोलन के नेता हैं।

आपने जो इतिहास पढ़ा है वही आप बच्चों को पढ़ाती हैं। परंतु आप में भी कुछ सूझ-बूझ होनी चाहिए। निस्संदेह आपको कुछ चुने हुए बच्चे ही दिखाई पड़ते हैं। आपको अपनी संस्कृति पुस्तकों से मिली है और पुस्तकें स्थापित सत्ता के व्यक्तियों ने लिखी हैं। केवल वही तो है जो लिख सकते हैं। परंतु आपको इनके निहित अर्थों को समझने का प्रयास करना चाहिए था। आप यह कैसे कह सकती हैं कि आपके उद्देश्य नेक हैं।

भाजी : मैं आपको समझने का प्रयास करता हूं। आप इतनी सुसंस्कृत लगती हैं। आपके अंदर अपराधी का तो लेश मात्र अंश भी दिखाई नहीं देता। शायद आप कुछ अंश में नाजी अपराधी की तरह हैं—जो अति निष्ठावान और राजभक्त नागरिक थे। साबुन की डिब्बी गिनते समय वे बहुत सावधान रहते थे कि कहीं गिनने में कोई चूक न हो जाए परंतु उन्होंने कभी इस पर आपत्ति नहीं की कि साबुन मानव चरबी से बनाया गया है।

मुझसे भी अधिक डरपोक : आपकी पढ़ाई से किसे लाभ हो रहा है ? स्कूलों को इतना अरुचिकर बनाने से, गियात्री जैसे बच्चों को स्कूल से तिरस्कृत करने से, आपको क्या मिल जाता है ?

मैं प्रमाणित कर सकता हूं कि आप मुझसे भी अधिक डरपोक हैं। क्या आपको पियरीनो के मां बाप का डर लगता है ? या आप उच्च विद्यालयों के अपने सहयोगियों से डरती हैं ? या आपको शिक्षा अधिकारियों का भय है ?

यदि आपको अपनी जीविका की चिंता है, तो उसका तो समाधान है। परीक्षा के समय, इधर-उधर टहलते हुए आप अपने विद्यार्थियों की कुछ गलतियों को चुपचाप ठीक कर दिया करें।

स्कूल की प्रतिष्ठा और बच्चे के हित के लिए : शायद आप इतनी सरल और सीधी बात से नहीं डरती। शायद आप अपने अंतःकरण से डरती हैं। तब तो आपके अंतःकरण का निर्माण ही गलत हुआ है।

एक प्रधानाचार्य ने अपनी रिपोर्ट में लिखा, 'इस बच्चे को कक्षा चढ़ाने से स्कूल की प्रतिष्ठा में धब्बा लगता है।' लेकिन स्कूल कौन है ? हम ही तो स्कूल हैं ? स्कूल की सेवा करने का अर्थ है, हमारी सेवा करना।

बच्चे के हित के लिए : यह सब स्वयं बच्चे के हित के लिए है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि यही बच्चे अब हाई स्कूल में पदार्पण करेंगे।' गांव के एक छोटे स्कूल में हेडमास्टर ने बड़ी आत्म महत्ता दरशाते हुए कहा।

शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि तीस बच्चों में से केवल तीन ही हाई स्कूल तक जा सकेंगे। एक तो मारिया, जो समृद्ध व्यापारी की बेटी है, दूसरी अन्ना, जो अध्यापिका की पुत्री है और तीसरा पियरीनो है ही। परंतु यदि इससे अधिक बच्चे भी उच्च स्कूलों में चले जाएं तो उससे क्या फर्क पड़ेगा ?

हेडमास्टर साहब तो अभी वही पुराना राग अलाप रहे हैं। उन्होंने अभी तक इस पर ध्यान ही नहीं दिया है कि स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या कितनी बढ़ गई है। प्रथम वर्ष में 6,80,000 बच्चे हैं जिनमें अधिकांश गरीब हैं। धनी वर्ग के बच्चे तो बहुत थोड़े से हैं।

प्रश्न वर्गहीन स्कूल का नहीं है जैसा वह कहते हैं। उनका स्कूल तो एक ही वर्ग का स्कूल है और वह केवल उन्हीं की सेवा करता है जिनके पास आगे बढ़ने के लिए धन है।

न्याय के लिए : अध्यापिका ने कहा, 'अयोग्य विद्यार्थी को उत्तीर्ण कर देना अच्छे विद्यार्थियों के प्रति अन्याय होगा।'

आप पियरीनो को अलग बुलाकर उससे यह क्यों नहीं कहतीं जैसा प्रभु यीशु ने अंगूर की लतर की छटाई करने वाले से कहा था, 'मैं तुमको इसलिए पास कर रही हूं क्योंकि तुमने पढ़ा है। तुम दो बार धन्य हो। तुम पास भी हो गए और तुमने सीखा भी। मैं गियात्री को प्रोत्साहित करने के लिए पास कर रही हूं। परंतु यह उसका दुर्भाग्य है कि उसने कुछ सीखा नहीं है।'

एक और अध्यापिका आश्वस्त है कि समाज के प्रति उनका कुछ उत्तरदायित्व है—'आज मैं उसे 14 वर्ष की आयु वाली कक्षा में पास कर दूंगी और कल यही डाक्टर बन जाएगा।'

समानता : जीविका, संस्कृति, परिवार, स्कूल की प्रतिष्ठा, आप मापदंड के इन क्षुद्र पैमानों से अपने छात्रों का वर्गीकरण कर रही हैं। ये पैमाने वास्तव में बहुत तुच्छ हैं। अध्यापक के जीवन को सार्थक बनाने के लिए बहुत नगण्य हैं।

आपमें से कुछ की स्थिति समझ में आ गई है, परंतु उन्हें कोई उपचार नहीं सूझता। स्थापित सत्ता के भय से आप सदा आतंकित रहती हैं। परंतु और कोई रास्ता नहीं है। आजकल मनुष्य का एक मात्र सहारा राजनीति है।

अफ्रीका में, एशिया में, लैटिन अमेरिका में, दक्षिण इटली में, पहाड़ी क्षेत्र में, खेतों में और शहरों में ऐसे करोड़ों बच्चे हैं जो बराबरी का दर्जा पाने की प्रतीक्षा में हैं। वे मेरी तरह संकोची हैं, सेंड्रो की तरह बुद्धिहीन हैं और गियात्री की तरह आलसी हैं। इन्हीं से मानव जाति बनी है।

हमारे प्रस्तावित सुधार

1. छात्रों को फेल मत कीजिए।
2. जो बच्चे अल्पबुद्धि के प्रतीत हों, उनके लिए पूर्णकालिक स्कूलों की व्यवस्था कीजिए।
3. आलसियों को जीवन में कोई उद्देश्य दीजिए।

फेल मत कीजिए

खरादी : खरादी ऐसा तो नहीं करता कि अपनी मशीनों से निकले हुए केवल बढ़िया टुकड़ों को ग्राहकों को दे और शेष को अस्वीकार कर दे। यदि ऐसा होता तो वह इतनी कोशिश ही नहीं करता कि सब टुकड़े बढ़िया ही निकलें।

परंतु आप जिसे पसंद नहीं करतीं, उसे अपनी इच्छानुसार जब चाहें स्कूल से बाहर कर सकती हैं। अतः आप केवल उन्हीं की देखभाल करने में प्रसन्न हैं जो हर हालत में सफल होते, और जिनकी सफलता का श्रेय स्कूल को नहीं वरन बाहर के लोगों को है।

निम्नतम सामान्यता : यह व्यवस्था आजकल गैरकानूनी है। संविधान की धारा 34 के अनुसार प्रत्येक को आठ वर्ष तक स्कूल में शिक्षा पाने का अधिकार है। आठ वर्ष के अर्थ हैं—आठ विभिन्न कक्षाओं में पढ़ने का अधिकार। चार कक्षा दो-दो बार नहीं। अन्यथा तो संविधान की धारा, शब्दों का तुच्छ आडंबर मात्र और संविधान सभा के अयोग्य मानी जाएगी।

आज, माध्यमिक शिक्षा के अंतिम वर्ष तक पढ़ना कोई बड़ी बात नहीं है। यह न्यूनतम सांस्कृतिक आवश्यकता है और सबका अधिकार है। जो वहां तक नहीं पहुंचा उसे 'समान' नहीं माना जाएगा।

अभिरुचि परीक्षण : अब आप सब जातिवाद पर आधारित अभिरुचि परीक्षण (एप्टीच्यूड टेस्ट) का और सहारा नहीं ले सकतीं।

प्रत्येक बच्चे में इतनी योग्यता तो होती है कि वह माध्यमिक स्कूल के अंतिम वर्ष तक पढ़ ले और सब विषयों में उत्तीर्ण हो जाए।

किसी भी लड़के से यह कहना कितना सुविधाजनक है, 'तुम्हारे अंदर इस विषय को पढ़ने की योग्यता नहीं है।' लड़का इस पर विश्वास कर लेगा। वह भी तो अपने अध्यापक की तरह, उतना ही आलसी है। परंतु वह यह भी जानता है कि अध्यापक उसे और बच्चों के 'समान' नहीं समझती।

दूसरे बच्चे से यह कहना भी अच्छी नीति नहीं है कि 'तुम तो इसी विषय को पढ़ने के उपयुक्त हो।' यदि उसे किसी एक विषय से बहुत अधिक प्रेम है तो उसे उस विषय को पढ़ने का निषेध कर देना चाहिए। आप उसे चाहे 'विशेषज्ञता' का नाम दें या 'असंतुलन' का। एक विशेष क्षेत्र में अपने को सीमित कर लेने के लिए बाद में बहुत समय मिलेगा।

कार्य के आधार पर : अगर आप यह जानतीं कि किसी न किसी तरीके से आपको प्रत्येक बच्चे को, प्रत्येक विषय में आगे बढ़ाना है तो आप अपनी बुद्धि का थोड़ा और प्रयोग करके, कोई न कोई तरीका ढूंढ ही लेतीं जिससे सब बच्चे अच्छा कार्य करें।

मेरी तो इच्छा है कि आपको काम के आधार पर वेतन दिया जाए। प्रत्येक बच्चे को एक विषय सिखाने का इतना पारिश्रमिक, या इससे भी अच्छा यह होगा कि प्रत्येक बच्चे को एक विषय नहीं सिखा पाने का इतना जुर्माना।

तब आपका ध्यान सदा गियात्री पर ही रहेगा। आप उसकी भावशून्य दृष्टि में वह बौद्धिक चमक ढूंढने का प्रयास करेंगी जो भगवान ने प्रत्येक बच्चे को दी है। आप कोशिश करके उसी बच्चे पर मेहनत करेंगी, जिसे आपकी सबसे अधिक आवश्यकता है। होनहार बच्चों की आप अवहेलना करेंगी, जैसा परिवारों में किया जाता है। आप रात में सोते-सोते, उसी की बात सोचेंगी और उसे सिखाने के नए तरीके ढूंढ निकालेंगी—ऐसे तरीके जो उसकी जरूरतों के लिए उपयुक्त हों। यदि वह कक्षा में न आए तो आप उसके घर जाकर उसे बुलाका लाएंगी।

आप मध्य युग की हैं : 'बहुत मजबूर होने पर हम अपने स्कूल में बेंत का भी प्रयोग करते हैं।' अब आप ज्यादा तुनकमिजाज न बनें। शिक्षाशास्त्र के सब सिद्धांत भूल जाइए। आपको बेंत की आवश्यकता है तो मैं उसे आपको दे सकता हूं। परंतु अपने रिकार्ड के रजिस्टर पर लिखने वाले उस कलम को फेंक दीजिए। उस कलम का लिखा निशान सारे वर्ष बना रहता है। परंतु बेंत की चोट दूसरे

दिन ही ठीक हो जाती है। और आपके इस 'आधुनिक' बढ़िया कलम के कारण गियात्री अपने जीवन में कभी कोई पुस्तक नहीं पढ़ सकेगा। वह ठीक से पत्र नहीं लिख सकता। यह बड़ी क्रूर सजा है जो अपराध के अनुपात से कहीं अधिक है।

गणित : गणित का अध्यापक छात्र को फेल न कर सकने पर यदि आपत्ति करे, तो उसमें शायद कोई तर्क हो। यदि किसी छात्र ने, प्रथम वर्ष का पाठ ठीक से नहीं समझा है, तो द्वितीय और तृतीय वर्ष की पढ़ाई उसके लिए सर्वथा निरर्थक सिद्ध होगी।

परंतु गणित अनेकों विषयों में से एक है। यदि हफ्ते में तीन घंटे की गणित को वह ठीक से नहीं समझ पाता है, तो क्या उसके पीछे वह शेष 23 घंटे की पढ़ाई से भी वंचित कर दिया जाए। जिसमें वह काफी कुशल है।

थोड़ा ही काफी : यहां हम गणित के ऊपर एक उसी तरह की बहस प्रारंभ कर सकते हैं जैसे असेंबली में लैटिन पर हुई थी।

घर की ओर अपने काम की तात्कालिक आवश्कताओं के लिए कितनी गणित जाननी जरूरी है ? या अखबार पढ़ने के लिए कितनी गणित की आवश्यकता है। दूसरे शब्दों में साधारण सुसंस्कृत व्यक्ति, जो विशेषज्ञ न हो, कितनी गणित बाद में याद रखता है ?

आठ वर्ष के शिक्षा काल की साधारण गणित ही याद रहती है, बीजगणित और संख्या विषयक संकेत नहीं।

पूर्णकालिक शिक्षा

आप इस बात से अच्छी तरह अवगत हैं कि प्रत्येक विषय पर एक हफ्ते में दो घंटे की पढ़ाई, हर एक विद्यार्थी के लिए पूरा पाठ्यक्रम समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है।

अभी तक हमने इसका जो समाधान निकाला था, वह ठेठ उच्च वर्ग के लिए था। गरीब उसी कक्षा में एक वर्ष और पढ़े। मध्य वर्ग के बच्चों को आप ट्यूशन स्कूल के बाद देते हैं—पैसा लेकर और उसमें सारे पाठ्यक्रम को दोहरा देते हैं। उच्च वर्ग के बच्चों की तो कोई समस्या नहीं है। जिसे वे पहले से ही जानते थे, उसी को वे कक्षा में दोहरा रहे हैं। पियरीनो सब कुछ पहले से ही घर में सीख चुका था।

डोपोस्क्यूला की स्थापना, इसका कहीं अच्छा समाधान है। इसमें लड़के ने जो कुछ स्कूल में पढ़ा है, तीसरे पहर उसे फिर से दोहराएगा। इससे उसका भी साल बरबाद नहीं होगा, पैसा भी खर्च नहीं होगा, और आप उसके इस प्रयास में साथ रहेंगे।

वर्गहीन स्कूल : हम सब अपना मुखौटा हटा दें। जब तक आपका स्कूल एक वर्ग विशेष के हित के लिए बिना रहेगा और निर्धनों को तिरस्कृत करता रहेगा, तब तक ऐसी व्यवस्था को तोड़ने का एक ही मार्ग है—डोपोस्क्यूला की स्थापना जिसमें अमीर बच्चे आएंगे ही नहीं। जो लोग हमारे इस हल से तो घबराते हैं परंतु इतने विद्यार्थियों के फेल होने से या निजी ट्यूशनों से उन्हें कोई परेशानी नहीं हुई—वे ईमानदारी की बात नहीं कर रहे हैं।

पियरीनो में कोई जन्मजात भिन्नता नहीं है। वह घर के वातावरण के कारण, जहां वह स्कूल के बाद का समय व्यतीत करता है—भिन्न हो गया है। शेष बच्चों के लिए उनकी संस्कृति को जीवित रखने के लिए, डोपोस्क्यूला को चाहिए कि एक तुलनात्मक परिवेश की रचना करें।

परिवेश : पूर्णकालिक शब्द से शायद आप घबरा गईं। आपको लगा कि चंद घंटों के लिए ही बच्चों को संभालना कितना कठिन होता है (जैसा आप लोग आजकल कर रही हैं)। पर सच तो यह है कि आपने कभी प्रयास ही नहीं किया।

अभी तक तो कक्षा चलाते समय आपका सारा ध्यान स्कूल की घंटी पर रहता था, तथा जून तक पाठ्यक्रम समाप्त करा देने की चिंता थी। आप बच्चों के दृष्टिकोण को व्यापक नहीं कर पाए, उनकी जिज्ञासा को शांत नहीं कर पाए और उनके द्वारा किसी तर्क में अंत तक नहीं जम सके। उसका परिणाम यह है कि आपने सब काम बिगाड़े हैं। आप सदा कुंठाग्रस्त रहते हैं और बच्चों का भी वही हाल है। काम के घंटों ने आपको नहीं थकाया है—आपकी थकान का कारण कुंठा है।

आस्था होनी चाहिए : प्राथमिक स्कूल के समस्त वर्षों में इतवार, क्रिसमस और ईस्टर तथा समस्त गरमी की छुट्टियों में डोपोस्क्यूला की व्यवस्था कीजिए। आप कैसे कह सकते हैं कि बच्चे तथा उनके मां-बाप डोपोस्क्यूला नहीं चाहते ? इसे तो आपने इनके सम्मुख कभी प्रस्तुत ही नहीं किया।

मां-बाप के पास केवल सर्क्यूलर की प्रतिलिपियां भेज कर कोई प्रधानाचार्य

यह तो नहीं कह सकता कि उसने डोपोस्क्यूला प्रारंभ करने का वास्तविक प्रयास किया? जिस प्रकार बाजार में किसी नए पदार्थ की बिक्री के लिए अभियान चलाया जाता है, उसी प्रकार डोपोस्क्यूला के लिए प्रयत्न करना चाहिए। तब डोपोस्क्यूला चल सकता है। उसमें आस्था होनी चाहिए।

पूर्णकालिक कार्य और परिवार

ब्रह्मचर्य : पूर्णकालिक स्कूल इस धारणा पर आधारित है कि अध्यापक के पारिवारिक उत्तरदायित्व, उसके काम में बाधा नहीं डालेंगे। पूर्णकालिक स्कूल का एक अच्छा उदाहरण ऐसा स्कूल है, जिसे पति-पत्नी मिलकर, अपने घर में चलाते हैं। जो सबके लिए खुला रहता है और जिसकी कोई निश्चित-निर्धारित समय सारणी नहीं होती।

यही गांधी जी ने किया था। उन्होंने अपने बच्चों को, दूसरे बच्चों के साथ सम्मिलित किया है और इसका परिणाम यह हुआ कि उनके बच्चे उनसे भिन्न बड़े हुए। क्या आप ऐसा कर सकते हैं ?

दूसरा समाधान ब्रह्मचर्य है।

आजकल ब्रह्मचर्य का प्रचार नहीं है।

चर्च इसकी महत्ता समझता था। उसने प्रभु यीशु की मृत्यु के करीब हजार वर्ष बाद इसे अपने पुरोहित वर्ग के लिए अंगीकार किया था।

गांधी जी ने स्कूल के लिए इसकी महत्ता को समझा था। उस समय वे 35 वर्ष के थे (और 22 वर्ष का वैवाहिक जीवन व्यतीत कर चुके थे)।

एक बार माओ ने अपने साथियों के सम्मुख ऐसे कार्यकर्ता को प्रशंसा के रूप में प्रस्तुत किया था, जिसका बधियाकरण हो चुका था। (इटली में रहने वाले 'चीनी' इसका जिक्र करने में लज्जा अनुभव करते हैं।)

ब्रह्मचर्य को अपनाने में अभी आपको हजार वर्ष और लगेंगे। लेकिन इस बीच आप एक काम कर सकते हैं। आप ब्रह्मचर्य की सराहना करना आरंभ कर सकते हैं और उपलब्ध अविवाहित अध्यापकों का अच्छा उपयोग कर सकते हैं।

स्कूल शिक्षा पद्धति में 4,11,000 अध्यापक हैं। इनमें से 88,000 अविवाहित हैं। इन 88,000 में से 53,000 कभी विवाह नहीं करेंगे। क्यों न हम दूसरों को और अपने आपको यह समझाएं कि यह दुर्भाग्य नहीं वरन वरदान है—ये शिक्षक पूर्णकालिक शिक्षा के लिए उपलब्ध हैं।

आजकल अक्सर यह कहा जाता है—(पता नहीं इसमें कितना तथ्य है)

कि 'अविवाहित अध्यापकों में मानवीय गुण कम होते हैं,' जब ब्रह्मचर्य एक स्वार्थ रहित विकल्प के रूप में अपनाया जाने लगेगा, तब हो सकता है कि अध्यापक स्कूल से भावनामय संबंध से जुड़ सकें, अपने छात्रों से प्रेम करें और छात्र भी उनसे प्रेम करें, और सबसे बड़ी उपलब्धि स्कूल को सफलतापूर्वक चलाने का सुख होगा।

पूर्णकालिक शिक्षा और यूनियन अधिकार

बड़ा संघर्ष : हमने अध्यापकों की यूनियन की एक पत्रिका पढ़ी। उसमें लिखा था, 'नहीं, शिक्षण के समय में हरगिज वृद्धि नहीं हो। कितने संघर्ष के बाद अनिवार्य शिक्षण समय को सीमित किया गया है। उस सबको खो देना मूर्खता होगी।'

हमें बड़ा आश्चर्य हुआ। कायदे से हम इसका विरोध नहीं कर सकते। प्रत्येक श्रमिक अपने कार्य का समय कम करने के लिए संघर्ष करता है। और करना भी चाहिए।

विचित्र विशेषाधिकार : परंतु आपके कार्य की समय सारणी तो सचमुच अशोभनीय है। एक मजदूर पूरे वर्ष में 2,150 घंटे काम करता है। प्रशासकीय सेवा में आपके सहयोगी 1,630 घंटे काम करते हैं। आप अधिकतम 738 घंटे (प्राथमिक शिक्षक) और न्यूनतम 468 घंटे (गणित और विदेशी भाषा के शिक्षक) काम करते हैं।

आपका यह स्पष्टीकरण कि आपको घर में पढ़ना पड़ता है तथा कापियां जांचनी पड़ती हैं, वाजिब नहीं है। न्यायाधीश भी अपने फैसले घर में ही लिखते हैं। और आप परीक्षण करना टाल भी सकती हैं। यदि आप उनकी परीक्षा लेती भी हैं तो उनकी कापियां वहीं कक्षा में बैठकर बच्चों के सामने ही जांच सकती हैं।

जहां तक आपके अध्ययन और घर में तैयारी करने का प्रश्न है, हम सभी को घर में अध्ययन करना पड़ता है। श्रमिकों को आपसे भी अधिक पढ़ना होता है। जब वे रात्रि स्कूलों में अध्ययन के लिए जाते हैं तो क्या उन्हें उसके लिए वेतन दिया जाता है ?

हम निष्कर्ष में यही कह सकते हैं कि आपके काम करने के घंटे, आपका एक विचित्र विशेषाधिकार है जो सामाजिक व्यवस्था ने आपको अपने हित के लिए दे रखा है। यह यूनियन की विजय का परिणाम नहीं है।

मानसिक थकान : उसी पत्रिका में यह भी लिखा है कि आपके शिक्षण के घंटे इतने अधिक होते हैं कि वह किसी भी मनुष्य की मानसिक, शारीरिक योग्यताओं को बिलकुल समाप्त कर दे।

एक मजदूर मशीन के आगे आठ घंटे प्रतिदिन काम करता है। और उसे पूरे समय अपने हाथ कट जाने का डर बना रहता है। आप उसके समक्ष ऐसा कहने की हिम्मत कर सकते हैं ?

ऐसे हजारों अध्यापक हैं जो ट्यूशन करने को तत्पर रहते हैं। उन्हें तब थकान नहीं लगती ? पहले आप उन्हें अलग करिए अन्यथा आप संघर्ष में किसकी ओर हैं? आपको ऐसे मजदूर समझना जो अपनी यूनियन के अधिकारों की मांग करते हैं, जरा कठिन है।

हड़ताल का अधिकार : उदाहरण के लिए हड़ताल करने के अधिकार को ही लीजिए। यह प्रत्येक मजदूर का पावन अधिकार है। परंतु जिस श्रमिक के काम करने का समय आपकी तरह हो, उसके लिए हड़ताल करना बहुत निंदनीय है।

आप गांधीजी के बारे में कुछ और अध्ययन करें। आपको पता चलेगा कि उन्होंने हड़ताल के समान ही अन्य तरीके ढूंढे थे, जिनका रूप नितांत भिन्न था।

आपकी समस्या का एक अच्छा समाधान तो यह हो सकता है कि आप न्यायाधीशों की यूनियन में सम्मिलित हो जाएं। आप उसी समय हड़ताल करें, जब आप न्यायाधीश की तरह काम करते हैं—अर्थात परीक्षा के पर्चे जांचना, उन पर विचार-विमर्श करना, परीक्षण करना तथा रिपोर्ट तैयार करना।

इसके विपरीत, यदि आप शिक्षण के समय कार्य बंद कर देंगे तो लोग यह सोचेंगे कि आपको हम लोगों की बिलकुल परवाह नहीं है।

पूर्णकालिक अध्यापन कौन करेगा : वर्तमान समय सारणी वाले स्कूल मानो गरीबी के विरुद्ध अभियान हैं। यदि सरकार स्कूलों में शिक्षण का समय नहीं बढ़ा सकती, तो उसे स्कूलों के क्षेत्र से अलग हो जाना चाहिए।

यह एक बहुत गंभीर निष्कर्ष है। अब तक यही समझा जाता है कि सरकारी स्कूल, निजी स्कूलों की अपेक्षा अधिक अच्छे होते हैं। हमें इस पर पुनः विचार करके स्कूलों का उत्तरदायित्व किसी और के हाथों में सौंपना पड़ेगा, जो पढ़ाने के लिए आदर्श भावना से प्रेरित हो, और हमें पढ़ाए।

शब्दों पर ध्यान दें : आइए, हम बहुत कल्पना में विचरण न करें परंतु व्यावहारिक बातें करें। सुबह के समय तथा जाड़ों में, सरकार स्कूलों को चलाए और उन्हें वर्ग निरपेक्ष बनाने का निरंतर प्रयत्न करे। (शब्दों पर ध्यान दें)—*अमीर लोग वर्गवाद को ही वर्ग निरपेक्ष कहते हैं।* दोपहर के समय तथा गरमियों में कोई अन्य सत्ता वर्ग के भेदभाव के बिना स्कूलों को चलाए।

नगर प्रशासन : पहला समाधान तो यह है कि नगर प्रशासन का सामना किया जाए। वे हमें बताएं कि क्या उनकी स्कूल संबंधी नीति हमारे लाभ के लिए है ? यह कहना कि स्कूलों में सड़कें बनवा दीं या बत्तियां लगवा दीं या खेल के मैदान बना दिये पर्याप्त नहीं है—यह तो राजतंत्रवादी भी कर सकते हैं।

यदि प्रांतीय प्रशासन बोर्ड अनुदान में इसलिए कटौती कर देता है, क्योंकि 'यह नगर प्रशासन के अधिकार क्षेत्र में नहीं है,' तो नगर के लोग कह सकते हैं कि यह कानून तो फासिस्टों ने 1931 में बनाए थे, और इस आधार पर उन पर आपत्ति की जा सकती है।

सारा दोष जिला प्रमुख पर डालकर, कुछ न करना बहुत सरल है।

कम्युनिस्ट : संभव है कि नगर प्रशासन कुछ न करे। जब वर्ग की समस्याएं सामने आती हैं तो कम्युनिस्ट भी कायर बन जाते हैं। क्या वे सफेदपोश श्रमिकों और दुकानदारों से बैर करना चाहेंगे ?

पार्टी के एक बड़े नेता कहा, 'जब हम सत्ता में आ जाएंगे तो स्कूलों की सारी जिम्मेदारी राज्य की होगी।' हम लोगों को स्वतंत्र हुए 20 वर्ष हो चुके हैं। कम्युनिस्ट अभी तक सत्ता में नहीं आ पाए हैं। हम लोग घास उगने का इंतजार कर रहे हैं पर इस बीच गाएं मर रही हैं।

पुजारी वर्ग : डोपोस्क्यूला को शायद पादरी चला सकते हैं लेकिन सब पादरियों में भगवान यीशु की तरह असीमित प्रेम नहीं है। उनका विश्वास है कि धनी लोगों को पढ़ाने का सर्वोत्तम तरीका उनको स्वीकार करना है।

यूनियन सदस्य : मजदूर वर्ग का एक मात्र संगठन यूनियन है। अतः उन्हें डोपोस्क्यूला चलानी चाहिए।

परंतु यूनियन के सदस्य अभी हमारी बात सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि लोकतंत्र में, प्रत्येक सार्वजनिक संस्था का अपना अलग कार्य क्षेत्र होता है, और उसे दूसरे के क्षेत्र में अनधिकार हस्तक्षेप नहीं करना

चाहिए। उनमें भी कायरता है।

फिर भी उन्हें आजकल की युवा पीढ़ी से शिकायत है कि वे सब चीजों के प्रति उदासीन रहते हैं। वह कहते हैं कि हड़तालों का आयोजन करना, नए सदस्य बनाना, सक्रिय कार्यकर्ता और पूर्णकालिक अधिकारी ढूंढ़ना, दिनोंदिन कठिन होता जा रहा है। इस बीच बच्चे ऐसे स्कूलों में बड़े हो रहे हैं जिन्हें व्यवस्था चला रही है।

यूनियन के साधारण सदस्यों को जब अनेकों प्रयत्न करने पर भी निराशा ही हाथ लगेगी, तब शायद वे अपनी विचाराधारा बदलें। परंतु इस बीच में वह कोई छोटा स्थानीय प्रयोग तो कर सकते हैं।

स्कूल में सचमुच बहुत कम खर्च चाहिए। थोड़ी सी खड़िया, एक काली तख्ती, कुछ पुरानी पुस्तकें, चार बड़े लड़के पढ़ाने के लिए और एक निःशुल्क प्राध्यापक, जो कभी-कभी आकर कुछ नई बातों पर चर्चा करे।

पूर्णकालिक स्कूल और पढ़ाई के विषय

डॉन बोरघी : जब हम यह पत्र लिख रहे थे तो डॉन बोरघी* हमारे यहां आए। उन्होंने हमारी आलोचना की, 'तुम्हारा पूरा विश्वास है कि प्रत्येक को स्कूल जाना चाहिए और वह स्कूल पूर्णकालिक हो। परंतु ऐसे सब लड़के राजनीति के प्रति उदासीन और व्यक्तिपरक हो जाएंगे जैसे आजकल के विद्यार्थी हैं। इससे फासिस्टवाद को बढ़ने का मौका मिलेगा।

जब तक अध्यापक वही रहेंगे और पढ़ाने के विषय भी वही रहेंगे, तब तक जितने कम लड़के स्कूल जाएं, उनके लिए उतना ही अच्छा है। इनसे बेहतर स्कूल तो एक कारखाना है।

यदि अध्यापकों को तथा पढ़ाने वाले विषयों को बदलना है तो तुम लोगों को इस पत्र के लिखने से कुछ न होगा। यह समस्याएं तो राजनीति के स्तर पर सुलझाई जा सकती हैं।'

कुछ भी नहीं से तो कुछ होना अच्छा है : यह सच है। यदि पार्लियामेंट केवल मध्य वर्ग का नहीं, वरन जनता की वास्तविक जरूरतों का प्रतिनिधित्व करती तो वह दंड विधान बना कर तुम लोगों की तथा पाठ्यक्रम की--दोनों समस्याओं

---

* डॉन बोरघी : चर्च का एक पादरी जिसने फासिस्टो के खिलाफ संघर्ष किया था, और मजदूरों में भी काम किया था।

का हल कर देती । परंतु सर्वप्रथम, हमें पार्लियामेंट में घुसना होगा। श्वेत लोग कभी काले लोगों के हित में कानून नहीं बनाएंगे।

पार्लियामेंट में घुसने के लिए हमें भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। अतः जब एक इससे अच्छा कोई और उपाय नहीं मिलता, बच्चों को कुछ समय तक आपके प्रकार के स्कूलों में जाना पड़ेगा।

व्यावसायिक अक्षमता : एक बात यह भी है कि सभी अध्यापक उतने बुरे नहीं हैं जितना डॉन बोरघी सोचता है।

हो सकता है आपके अंदर उन स्कूलों में पढ़ाते-पढ़ाते विकार उत्पन्न हो गया हो। आपने कोई देश की भावना से बड़े घरों के बच्चों का पक्षपात नहीं किया था। वे आपके सामने बहुत समय तक थे और उनकी संख्या कम नहीं थी।

आपको उनसे मोह हो गया। फिर उनके परिवारों से, उनके संसार से, उनके अखबारों से, जो उनके घर में पढ़े जाते हैं, आपको मोह हो गया।

जो संपन्नता से आकर्षित होगा, वह राजनीति से दूर रहेगा। उसे परिवर्तन अच्छा नहीं लगेगा।

गरीबों का दबाव : परंतु अब परिवर्तन हो रहा है। यद्यपि आप इतने बच्चों को फेल करते हैं, फिर भी स्कूल जाने वाले बच्चों की संख्या बढ़ती जा रही है।

अब गरीब जनता मौलिक वस्तुओं के लिए दबाव डालने लगी है, और अब आप अधिक समय तक ऐसा पाठ्यक्रम लागू नहीं कर सकते, जो विशेष रूप से पियरीनो जैसे बच्चों को ध्यान में रखकर बनाया गया हो।

यदि आप पूर्णकालिक अध्यापक हैं, तब तो यह दबाव आप पर और भी पड़ेगा। गरीबों के बच्चे आपका तथा पाठ्यक्रम का, दोनों का सुधार कर देंगे।

गरीबों के बच्चों से परिचय और राजनीति-प्रेम एक ही बात है।

जब आप अन्यायपूर्ण कानूनों द्वारा सताए गए मनुष्यों से प्रेम करेंगे तो आप अवश्य बेहतर कानून बनाने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य

धार्मिक संप्रदायों के स्कूल : पहले चर्च के स्कूल हुआ करते थे जो वास्तव में धार्मिक शिक्षा ही देते थे। उनका एक उच्च उद्देश्य था जिसका वे अनुसरण

करते थे। परंतु वे नास्तिकों के लिए कुछ नहीं करते थे।

आपकी मौलिक शिक्षा की योजना पर सबकी आशाभरी दृष्टि थी। परंतु आपने सबको निराश किया। आपने तो ऐसे स्कूल बनाए जो निजी लाभ के लिए चलाए जाते हैं।

धार्मिक उद्देश्य से चलाए जाने वाले स्कूल अब समाप्त हो गए हैं। अब पुजारी वर्ग ने भी आपकी पद्धति को अंगीकार करना चाहा है, वे भी अब आपकी तरह नंबर तथा डिप्लोमा देने लगे हैं। वे भी अब अपने बच्चों के सामने धन रूपी परमेश्वर ही उपस्थित करने लगे हैं।

कम्युनिस्ट स्कूल : कम्युनिस्ट शायद इनसे बेहतर स्कूल चला सकते थे। पर मैं स्वयं ऐसे स्कूल में अध्यापक बनना पसंद नहीं करूंगा जहां मैं स्वछंदता से बात न कर पाऊं, जहां बच्चों की आंखों में संशय दिखाई दे कि अध्यापक जो कह रहा हैं, वह वास्तव में सच है या केवल लाभदायक है ? क्या समानता के लिए यह मूल्य चुकाना उचित है?

एक निष्कपट उद्देश्य की तलाश : हम एक उद्देश्य ढूंढ़ रहे हैं। वह निष्कपट होना चाहिए और उच्च आदर्श का होना चाहिए। उसकी मांग होनी चाहिए कि प्रत्येक लड़का एक मानव है—उससे कम नहीं। ऐसे उद्देश्य को आस्तिक और नास्तिक, दोनों ही स्वीकार करेंगे।

मैं इस उद्देश्य से परिचित हूं। मैं जब ग्यारह वर्ष का था, तब से मेरे पादरी अध्यापक मुझे इससे प्रभावित कर रहे हैं। मैं इसके लिए भगवान को धन्यवाद देता हूं। मेरा इतना समय बच गया। मुझे हर पल इस बात का आभास था कि मैं क्यों पढ़ रहा हूं।

अंतिम उद्देश्य : अपने को दूसरों के लिए अर्पित कर देना ही उचित उद्देश्य है। वर्तमान सदी में आप दूसरों के प्रति अपने प्रेम का प्रदर्शन कैसे कर सकते हैं ? केवल राजनीति, यूनियन और स्कूलों द्वारा ही यह संभव है। जनता को सर्वोच्च सत्ता प्राप्त है। अब भीख मांगने के दिन बीत गए। हमें अपने विकल्प सोचने होंगे—वर्ग भेदभाव के विरुद्ध, भुखमरी, निरक्षरता, जातिवाद और औपनिवेशिक युद्ध के विरुद्ध।

तात्कालिक आदर्श : यही अंतिम उद्देश्य है जिसे हमें समय-समय पर याद कर लेना चाहिए। प्रति पल याद करने के लिए तात्कालिक उद्देश्य है—दूसरों को

समझना और स्वयं को दूसरों को समझाना।

केवल इटली की भाषा सीखना पर्याप्त नहीं है। संसार में इसका बहुत व्यापक प्रचार नहीं है। मनुष्यों को, देश की सीमा के परे भी प्रेम करना चाहिए। इसके लिए हमें कई अन्य भाषाएं—'जीवित भाषाएं' सीखनी होंगी।

भाषा में प्रत्येक विषय के शब्द होते हैं। अतः हमें थोड़ा ज्ञान हर विषय का होना चाहिए, जिससे हमारी शब्दावली बढ़े। हमें सभी विषयों का थोड़ा-थोड़ा ज्ञान हो, परंतु बोलने में हमें दक्षता प्राप्त हो।

पुरातन या वैज्ञानिक : जब पार्लियामेंट में नए माध्यमिक स्कूलों के बारे में बहस हो रही थी, तो हम मौन रहे, क्योंकि हम वहां थे ही नहीं। जब इटली के किसानों के लिए स्कूल की योजना बनाई जा रही थी तो वे उस चर्चा में सम्मिलित नहीं किए गए थे।

दो गुटों में अनंत बहस चलती रही। ये गुट परस्पर विरोधी प्रतीत होते थे, परंतु वास्तव में एक ही थे।

सभी स्नातक थे जिनकी शिक्षा लैटिन से प्रारंभ हुई थी और वे जिस विचारधारा से प्रभावित हुए थे, उससे रत्ती भर भी हट कर नहीं देख सकते थे। कोई भद्र पुरुष अपनी ही परछाई से क्या बहस कर सकता है ? अपनी ही विकृत संस्कृति पर क्या वह उसी संस्कृति के शब्दों से प्रहार कर सकता है ?

पार्लियामेंट में दो गुट बन गए। दक्षिणपंथी सदस्य तो स्कूलों में लैटिन के प्रयोग पर बल देते रहे, वामपंथी विज्ञान पर। किसी को हमारा ध्यान नहीं आया। किसी को समस्या का भीतरी अनुभव नहीं था। कोई नहीं जानता था कि आपके स्कूलों के कारण हमें किस संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

दक्षिणपंथी तो संग्रहालय की वस्तु थे और कम्युनिस्ट प्रयोगशाला के चूहे थे। दोनों ही हमसे दूर थे। हमें तो वर्तमान भाषा ठीक से बोलनी भी नहीं आती थी। हमें पुरातन भाषा से क्या करना था। हमें आवश्यकता भाषा की थी, विशेषज्ञता की नहीं।

संप्रभु जन : भाषा ही व्यक्तियों को समान बनाती है। जो व्यक्ति अपने विचारों को व्यक्त कर सके, और दूसरों की बात समझ सके, वही सबके बराबर है, चाहे वे अमीर हों या गरीब इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे बात करने के लिए शब्दों का प्रयोग आना चाहिए।

माननीय संसद सदस्य का विश्वास था कि हम सभी डाक्टर बनने का

स्वप्न देख रहे हैं। 'सक्षम और सुयोग्य विद्यार्थियों को उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।'*

हम चाहते हैं कि हमारे बच्चों की आकांक्षा इससे भी उच्च हो। वे सर्वश्रेष्ठ नागरिक बनने का स्वप्न देखें—डाक्टर या इंजीनियर की बात भूल जाएं।

समाज में ऊपर चढ़ने वाले : हमको बस इतना आ जाए कि हम ठीक से बात कर सकें। जो समाज में और ऊंचा चढ़ना चाहता है वह आगे और पढ़ सकता है। वह चाहे तो विश्वविद्यालय में पढ़े, चाहे जितने डिप्लोमा ले, चाहे जितना धन कमाए, और चाहे जितने विशेषज्ञों के स्थान प्राप्त करे।

बस, वह सत्ता का अधिकांश भाग स्वयं हड़पने का प्रयास न करे जैसा वह आजकल करता है।

अपने को मिटा दो : बेचारे पियरीनो—मुझे तो तुम्हारे लिए दुःख होता है। तुमने अपने विशेषाधिकारों को प्राप्त करने के लिए बहुत भारी मूल्य चुकाया है। तुम्हारी पहचान सदा तुम्हारी विशेषज्ञता से, तुम्हारी किताबों से और तुम्हारी ही तरह के लोगों के साथ संपर्क से होती है। तुम यह सब छोड़ क्यों नहीं देते ?

अपना विश्वविद्यालय, अपने बंधन, अपने राजनीतिक दल, सबको त्याग दो। फौरन पढ़ना आरंभ कर दो। केवल भाषा ही पढ़ने से आरंभ करो—कोई अन्य विषय नहीं।

अपने को भूल जाओ और गरीबों का मार्गदर्शन करो। अपने को मिटा दो। तुम्हारे वर्ग का यही जीवन लक्ष्य हो।

अपनी आत्मा को बचाओ : अपने पुराने मित्रों को बचाने का प्रयास करो। यदि तुम उनके पास लौट कर एक बार भी गए, तो तुम सदा के लिए पहले जैसे ही बने रहोगे।

तुम विज्ञान की चिंता मत करो। उस क्षेत्र में आत्म उन्नति करने वाले सदा बहुत मिलेंगे। वह कई ऐसे आविष्कार भी करेंगे जो हमारे लिए उपयोगी होंगे। वह रेगिस्तानों में खेती करवा देंगे, समुद्र से भोजन सामग्री ढूंढ निकालेंगे और बीमारियों पर विजय प्राप्त कर लेंगे।

पर तुमसे क्या ? ऐसी वस्तुओं के लिए जो हर हालात में अपने ही वेग से आगे बढ़ती रहेंगी, तुम अपनी आत्मा को या अपने प्रेम को दोषी न बनाओ।

* संविधान की धारा 34

भाग दो

मजिस्ट्रेल में*आप भी फेल करते हैं पर...

* शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए चार वर्ष की उच्च शिक्षा

इंगलैंड

वास्तविक परीक्षा : जब मैंने माध्यमिक स्कूल की परीक्षा पास कर ली तो मैं विलायत चला गया। मैं उस समय पंदरह वर्ष का था। पहले कुछ समय तक मैं कैंटवरी में किसान के साथ काम करता रहा और उसके बाद लंदन में एक शराब के व्यापारी के साथ ।

हमारे स्कूल में विदेश जाने के अनुभव का वही स्थान है जो आपके यहां परीक्षाओं का है। इस अनुभव में परीक्षा और शिक्षा, दोनों ही सम्मिलित हो जाते हैं। हम जीवन में प्रयोगों और अनुभवों से अपनी संस्कृति को आंकते हैं।

हमारी अंतिम परीक्षा, आप लोगों की परीक्षा से कहीं अधिक कठिन होती है। परंतु कम से कम हम मृत चीजों पर समय व्यय नहीं करते।

स्वेज : मेरी परीक्षा अच्छी तरह से हो गई। मैं जीवित घर वापस आ गया और कुछ कमा कर भी लाया। सबसे अच्छी बात तो यह है कि मैं ऐसे नए अनुभवों को लेकर लौटा जिन्हें मैंने अच्छी तरह समझा था और जिन्हें मैं दूसरों को सुना सकता था।

मेरे परिवार में मेरे चाचा रिनेटो ही एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जो विदेश जा चुके थे। वे इथोपिया के युद्ध में गए थे। जब बचपन में मैंने भूगोल पढ़ना शुरू किया तो मैंने उनसे स्वेज नहर के बारे में कुछ बताने को कहा, परंतु उन्हें यह भी मालूम नहीं था कि उनका जहाज उस नहर से होकर गया था।

शांतिवादी : मैं उनकी तरह, किसानों को मारने के लिए कभी विदेश नहीं जाऊंगा। मैं तो एक किसान के घर में उसके साथ जाकर रहा था। उसके यहां एक मेरी ही आयु का लड़का था। एक छोटी लड़की भी थी। उनका एक खलिहान था। वे आलू की खेती करते थे, और हमारी ही तरह कड़ी मेहनत करते थे। मैं उनकी हत्या क्यों करूं?

उनकी अपेक्षा आप मेरे लिए अधिक अजनबी हैं। परंतु आप चिंता न करें, मुझे तो शांतिप्रिय रहना सिखाया गया है।

लंदन की लोक भाषा : लंदन में लोगों की हालत वहां के गांवों से भी खराब है। हम लोग शहर में जमीन के नीचे तहखानों में, ट्रकों से सामान उतरवाते थे। मेरे साथ काम करने वाले अंग्रेज ही थे, परंतु वे अंग्रेजी में एक पत्र भी नहीं लिख सकते थे। वे अक्सर डिक से अपने पत्र लिखवाया करते थे। डिक कभी-कभी मुझसे सलाह लेता था। और मैंने ग्रामोफोन रिकार्डों से अंग्रेजी सीखी थी। डिक भी, अन्य मजदूरों की तरह केवल लंदन की लोक भाषा ही बोला करता है।

हमारे पंदरह फुट ऊपर वे लोग थे जो साहित्यिक अंग्रेजी बोलते थे।

लंदन की लोक भाषा अंग्रेजी से बहुत भिन्न नहीं है। परंतु उसे बोलने से आप पहचान लिए जाते हैं कि आप किस वर्ग के हैं। इंगलैंड में वे अपने विद्यार्थियों को फेल नहीं करते। वे इन्हें निम्न कोटि के स्कूलों में भेज देते हैं जहां गरीब लोग खराब तरह बोलने की कला में दक्षता प्राप्त करते हैं और अमीर लोग अपनी मंजी हुई भाषा को और सुधारते रहते हैं। वहां पर वे किसी भी व्यक्ति की बोली से पहचान लेते हैं कि वह अमीर है या गरीब और उसका पिता किस तरह का काम करता है। वहां क्रांति होने पर उन्हें मारने के लिए व्यक्तियों को पहचानने में दिक्कत नहीं होगी।

दीवार से सिर मारना : जब मैं इटली वापस लौट कर आया तब मैं अपना पुराना संकोची स्वभाव भूल चुका था।

देश की सीमाओं पर अपनी सफाई देना, अपने मालिक और राजतंत्रवादियों से बहस करना, जातिवादियों और सनकी लोगों से बचाव करना, पैसा बचाना, निर्णय लेना, अपरिचित भोजन करना, पत्रों की प्रतीक्षा करना, और घर की याद को दबाना—कितनी प्रकार की समस्याएं थीं जिनसे जूझने का मैंने प्रयास किया था और मुझे लगता था कि मैंने इस पर विजय प्राप्त कर ली है।

लेकिन मैजिस्ट्रेल से मेरा पाला नहीं पड़ा था। यह अनुभव अब हुआ है और ऐसा प्रतीत होता है मानो मैं दीवार से सिर मार रहा हूं।

आप या मैं : इतनी बाधाओं के बावजूद मेरे कई सहपाठी आगे बढ़ने में सफल हुए हैं। कुछ तो यूनियन के पूर्णकालिक पदाधिकारी बन गए हैं और अच्छे चल रहे हैं। कुछ फ्लोरेंस में विविध फैक्टरियों में काम कर रहे हैं और उन पर कोई रोब नहीं जमा सकता। वे यूनियनों में, राजनीति में और स्थानीय प्रशासनों में भी काम करते हैं। जो दो लड़के तकनीकी स्कूलों में गए थे वे भी अच्छा काम कर रहे हैं। उनकी पियरीनो की तरह पदोन्नति भी हुई है।

जहां वास्तविक जीवन से टकराव होता है, वहां हम लोग अच्छी तरह उसका सामना कर पाते हैं। परंतु मैजिस्ट्रेल में तो सब प्रयास व्यर्थ हैं।

आइए, जरा देखें कि वहां क्या हुआ। या तो आप और या हम, दोनों में एक तो दिशाहीन है।

दैनिक समय सारणी : **फ्लोरेंस पहुंचने के लिए मुझे पांच बजे सवेरे उठना पड़ता था। मोटर साइकिल से मैं विकियो जाता था और वहां से रेल द्वारा फ्लोरेंस तक। रेल में बैठकर पढ़ना बहुत कठिन होता है—नींद आती है, भीड़ होती है और शोरगुल होता है।**

मैं स्कूल के फाटक पर आठ बजे पहुंच जाता था तथा दूसरे लड़कों का इंतजार करता था। वे सवेरे सात बजे उठते थे। इस तरह प्रतिदिन उनकी अपेक्षा मुझे चार घंटे कम मिलते थे।

प्रारंभिक समय सारणी : **मैं पहली अक्तूबर को अपने मैजिस्ट्रेल में पहुंच गया था, परंतु आप नहीं पहुंचे थे। हमसे कहा गया कि तुम लोग छह तारीख को आना। 'लियोनाड़ो' स्कूल के विद्यार्थियों से तेरह तारीख को उपस्थिति होने को कहा गया था।**

कार्यारंभ करने में इस विलंब का कारण कुछ तो संत लोग हैं और कुछ मात्रा में आलस है। संत फ्रांसिस के नाम पर भी स्कूल की एक दिन की छुट्टी कर दी जाती है जो गरीबों के साथ धोखा है। गरमी के चार महीने तो वे पहले ही घर पर बिना स्कूल के बिता चुके हैं।

आलस्य की जिम्मेदारी किस पर है, यह अभी मैं पता नहीं लगा पाया हूं—क्या स्कूल के अंदर ही इसके लिए कोई उत्तरदायी है या शिक्षा मंत्रालय में ? ये सभी वे लोग हैं जिन्हें एक वर्ष में तेरह महीने का वेतन मिलता है।*

यदि कोई मजदूर अपने काम पर पांच मिनट देर से पहुंचता है तो उसकी आधे घंटे की मजदूरी काट ली जाती है। यदि उसे अक्सर देर होने लगे तो उसकी नौकरी भी जा सकती है।

आपके स्कूलों की तरह रेलवे विभाग भी सरकारी है, रेलें तो सदा चलती हैं। सर्दी, गरमी, दिन या रात सब समय समस्त रेलवे कर्मचारी अपनी जगह काम करते हैं। अगर एक भी सिगनल देने वाला थोड़ी देर के लिए भी अपनी जगह उपस्थित न हो तो यह बात अखबारों में छप जाएगी। वह कोई बहाना

* अधिकांश सरकारी कर्मचारियों को एक महीने का वेतन बोनस के रूप में मिलता है।

नहीं बना सकता कि यह उसके काम का अंग नहीं है या उसके बच्चे की तबीयत खराब थी। उसे तो जेल भेजा जाएगा।

फिर आप में ही ऐसी क्या खास बात है ?

शायद व्यवस्था के लिए यह अधिक आवश्यक और महत्वपूर्ण है कि रेलें सुचारू रूप से कार्य करें, और स्कूलों की इतनी महत्ता नहीं है। उन्हें यह मालूम ही है कि उनके बच्चों की शिक्षा का प्रबंध घर में हो जाता है परंतु रेलों की बात दूसरी है।

व्यवस्था के लिए तो केवल एक ही बात महत्वपूर्ण है—आप जून में सबको डिप्लोमा देने के लिए तैयार रहें।

आत्मघाती चयन

विस्मरण : इस पत्र के प्रथम भाग में हमने यह दिखाने का प्रयास किया है कि जो बच्चे फेल कर दिये जाते हैं, उनका कितना नुकसान होता है। फ्लोरेंस जाकर मुझे पता चला कि डान बोरघी ठीक ही कर रहा था। सबसे अधिक नुकसान उन बच्चों का होता है जिन्हें उत्तीर्ण किया जाता है।

जो बच्चा कक्षा में चढ़ा दिया जाता है, वह सदा उन्हीं लड़कों के साथ रहता है जिनके साथ पहले था। वह अपने अध्यापक से भी अधिक जुड़ जाता है। उसे अपने स्कूल के सहपाठियों से दोस्ती करनी चाहिए, और उनके आगे के जीवन में रुचि लेनी चाहिए।

परंतु उनकी संख्या बहुत अधिक होती है। आठ साल के अंदर उसके 40 सहपाठी उससे अलग कर दिए गए हैं। माध्यमिक शिक्षा के अंत में पांच और लड़कों ने स्कूल छोड़ दिया, यद्यपि वे पास हो गए थे। अतः यह संख्या 45 हो गई। पियरीनो को उनके बारे में और उनकी समस्याओं के बारे में कुछ नहीं मालूम।

घमंडी : स्कूल के दूसरे वर्ष में पियरीनो कई बच्चों में से एक था। परंतु पांचवें वर्ष तक पहुंचते पहुंचते वह एक सीमित समूह में गिना जाने लगा। उसको इस दौरान में जो सौ बच्चे मिले, उनमें से 40 बच्चे उससे निम्न कोटि के घोषित किए जा चुके थे।

जब उसने माध्यमिक स्कूल छोड़ा, तब तक इन (निम्न कोटि) के बच्चों की संख्या 100 में से 90 हो गई थी। उच्च स्कूल समाप्त करते करते यह

96 हो गई और कालेज की डिग्री लेने के बाद 99 हो गई*

प्रति वर्ष उसे अपने सहपाठियों से अधिक नंबर मिलते हैं। जो अध्यापक उसे यह नंबर देते हैं, उन्होंने उसके मन में यह बात पक्की तरह घुसा दी है कि यह 99 लड़के निम्न कोटि की संस्कृति के हैं। अतः इसमें क्या आश्चर्य है कि उसकी आत्मा विकृत हो चुकी है।

निर्धन का पुरस्कार : उसकी आत्मा विकारग्रस्त हो चुकी है क्योंकि उसके अध्यापकों ने उससे झूठ बोला है। उन 99 बच्चों की संस्कृति निम्न कोटि की नहीं है—वह भिन्न है।

सच्ची संस्कृति के (जो अभी तक किसी व्यक्ति को प्राप्त नहीं हुई है) दो पहलू होंगे। वह जनसाधारण की होगी और उसमें भाषा पर अधिकार होगा।

हमने जिस स्कूल का वर्णन किया, वह चंद चुने हुए बच्चों के लिए बना है, और वह संस्कृति नष्ट कर देता है। वह गरीबों को भाषा सीखने से वंचित करता है, जिसके द्वारा वे अपने को व्यक्त कर सकें। वह अमीरों को वास्तविक स्थिति का ज्ञान नहीं होने देता।

गियात्री अभागा है क्योंकि वह अपने को व्यक्त नहीं कर सकता। परंतु गियात्री भाग्यवान भी है क्योंकि वह सारे संसार से जुड़ा हुआ है। सारे एशिया, अफ्रिका और लेटिन अमेरिका के बच्चे उसके भाई हैं और वह अधिकांश मानवता की जरूरतों को जानता है।

पियरीनो भाग्यवान है क्योंकि वह अच्छी भाषा बोल सकता है। परंतु यह उसका दुर्भाग्य है कि वह बहुत अधिक बोलता है। उसके पास कोई विशेष बात कहने के लिए नहीं है। उसी के समान दूसरों की लिखी हुई पुस्तकों की बातों को वह केवल दोहराता है। वह सुसंस्कृत लोगों के छोटे से घेरे में कैद है और इतिहास तथा भूगोल से एकदम कट गया है।

चुने हुए थोड़े से लोगों के लिए स्कूल चलाना भगवान के और मानवता के प्रति पाप है, लेकिन भगवान तो सदा गरीबों की रक्षा करते हैं। आपने गरीबों को गूंगा बनाना चाहा, तो भगवान ने आपको अंधा बना दिया।

अंधा : जो हमारी बातों का विश्वास न करता हो, वह शहर में जाकर विश्वविद्यालय के प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों का 'उत्सव' देखें।

1966 के आंकड़ों के अनुसार प्राथमिक स्कूल छोड़कर जाने वाले बच्चों की संख्या 66.5 प्रतिशत, माध्यमिक स्कूल छोड़कर जाने वालों की संख्या 9.6 प्रतिशत, उच्च स्कूल की 4.2 प्रतिशत और कालेज डिग्री की 1.3 प्रतिशत है।

इनको अपनी विशिष्ट स्थिति के लिए कोई शर्म नहीं है वरन उसे और सुस्पष्ट करने के लिए वे सिर पर एक विशेष टोपी भी पहन लेते हैं। सारे दिन वे सड़कों पर बंदरों की तरह करतब दिखाते रहते हैं। वे अश्लील मजाक करते हैं, कानूनों का उल्लंघन करते हैं, सड़कों के यातायात में तथा सब के कामों में बाधा डालते हैं। वे पुलिस वाले की टोपी उतार कर फेंक देते हैं और नाना प्रकार के उत्पात मचाते हैं।

पुलिस वाले कुछ नहीं बोलते। वे अपने मालिकों के स्वभाव को समझते हैं। परंतु जब मजदूर हड़ताल करते हैं—जो एक आवश्यक उद्देश्य के लिए होती है और जिसमें गंभीरता तथा व्यवस्था होती है—तब उसे अव्यवस्था कहा जाता है।

ये नवयुवक अपनी शरारतों में इतने व्यस्त रहते हैं कि उन्हें यह समझ में नहीं आता है कि पुलिस वालों की जी हजूरी उन्हीं के प्रति एक अभियोग है।

उनका ध्यान उस मजदूर पर भी नहीं जाता जो बिना मुसकराए हुए सड़क पर चला जा रहा है। हो सकता है कि वे उसे रोक कर तंग करें।

दूसरों पर आश्रित व्यक्ति : प्रत्येक मजदूर, करों के रूप में इन्हें भीख देता है। यहां तक कि अपने भोजन में नमक का प्रयोग करते समय भी वह इन्हें कुछ कर दान करता है।* ये सब विद्यार्थी उसी के खर्चे से पढ़ रहे हैं। परंतु या तो उन्हें इसका बोध नहीं है या वे इसे जानना नहीं चाहते।

माध्यमिक स्कूल के एक विद्यार्थी के ऊपर 2,98,000 लीरा प्रति वर्ष निर्धन वर्ग खर्च करता है। उसका पिता इसमें से 9,800 स्कूल की फीस आदि के रूप में देता है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी के ऊपर 3,68,000 लीरा प्रति वर्ष खर्च होता है जिसे निर्धन वहन करते हैं। उसका पिता इसमें से 44,000 लीरा देता है।

डाक्टरी पढ़ने वाले का खर्चा 45,86,000 लीरा पड़ता है। जिसका बोझ गरीब उठाते हैं। उसके पिता इसमें 2,44,000 लीरा मात्र देते हैं। यही डाक्टर की डिग्री पास करने के बाद उन्हीं गरीबों से पंदरह मिनट देखने की फीस 1,500 लीरा लेगा, जबकि यह डिग्री गरीबों ने ही उसे उपलब्ध कराई है। यही डाक्टर, डाक्टरी बीमा का, तथा इंगलैंड की तरह चिकित्सा के समाजीकरण का विरोध करेगा।

---

* नमक से सरकार को उन्नीस सौ करोड़ की आमदनी होती है।

संभावित फासिस्ट : फ्लोरेंस में मेरे अधिकांश सहपाठी कभी अखबार नहीं पढ़ते हैं। जो पढ़ते भी हैं वे स्थापित सत्ता के समाचारपत्र पढ़ते हैं। मैंने उनमें से एक से एक बार पूछा कि क्या उसे मालूम है कि इन अखबारों को आर्थिक सहायता कौन देता है ? उत्तर मिला—'कोई नहीं। वे स्वतंत्र हैं।'

इन विद्यार्थियों को राजनीति से कोई मतलब नहीं है। उनमें से एक तो *'यूनियन'* शब्द का अर्थ भी नहीं जानता था।

हड़तालों के बारे में उन्होंने यही सुना है कि यह उत्पादन को हानि पहुंचाती है। उन्होंने कभी इसकी सचाई जांचने की कोशिश नहीं की।

उनमें से तीन तो पूर्ण रूप से फासिस्ट हैं। 28 राजनीति से अलग रहते हैं। 28 राजनीति विमुख तथा तीन फासिस्ट का जोड़ 31 फासिस्ट होता है।

और गहरे अंधकार में : इनसे भिन्न प्रकार के भी विद्यार्थी और बुद्धिजीवी हैं। वे सब कुछ पढ़ते हैं और कट्टर वामपंथी हैं। फिर भी, ऐसा प्रतीत होता है कि वे और भी अंधकार में हैं।

अध्यापकों और माता-पिताओं की एक बैठक में मैंने एक प्रतिवादी वामपंथी अध्यापक को भाषण देते हुए सुना। जब डोपोस्क्यूला का जिक्र आया तो उन्होंने जोर देकर कहा, 'आपको शायद यह मालूम नहीं कि मैं एक हफ्ते में पूरे 18 घंटे पढ़ाता हूं।'

उसी कमरे में ऐसे जाने कितने मजदूर भरे हुए थे, जो सवेरे चार बजे उठकर 5.39 वाली गाड़ी पकड़ते हैं और ऐसे न जाने कितने किसान थे जो सारी गरमी प्रतिदिन 18 घंटे काम करते हैं।

अध्यापक की बात सुनकर, न कोई कुछ बोला और न मुसकराया। चुपचाप उसकी ओर 50 जोड़ी आंखे भावशून्य दृष्टि से देखती रहीं।

उद्देश्य

कटु परिणाम : शिक्षा के लिए चंद लड़कों को चुन लेना ऐसी पद्धति है जिसको कभी अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिलेगी। मैंने जल्दी ही यह अनुभव कर लिया कि मैजिस्ट्रेल में मेरे अधिकांश सहपाठी या तो अकस्मात ही यहां आ गए हैं या इसका निर्णय उनके मां बाप ने किया है।

जब मैं आपके स्कूल में आया था तो मेरे पास एक नया ब्रीफकेस था। यह मेरे छोटे विद्यार्थियों ने मुझे भेंट किया था। पंदरह वर्ष की अवस्था में मुझे अध्यापक का कार्य करने का प्रथम पुरस्कार मिल गया था।

मैंने यह बात न तो आपको बताई और न अपने सहपाठियों को। शायद यह मेरी गलती हो, परंतु आपका स्कूल ऐसा नहीं है जहां कोई निर्भय होकर अपनी बात कह सके। जब कोई अपने उद्देश्य को जानता है और उसकी इच्छा कोई सार्थक काम करने की होती है, तब उसे आप लोग बेवकूफ समझते हैं।

कंजूस : मेरे किसी सहपाठी ने कभी पढ़ाने की बात नहीं की। एक ने कहा—'मैं बैंक में काम करना चाहता हूं।' तकनीकी स्कूल में गणित बहुत ज्यादा पढ़ाते थे और साहित्यिक स्कूलों में लैटिन बहुत अधिक थी, इसलिए मैं यहां आ गया।

1961 की गणना के अनुसार इन विद्यार्थियों की स्थिति इस प्रकार है : 6,75,975 नागरिकों के पास मैजिस्ट्रेल का डिप्लोमा है। इनमें से 60,000 तो अवकाशप्राप्त अध्यापक हैं। 2,01,000 नागरिक उस वर्ष में वास्तव में अध्यापक का कार्य कर रहें हैं और 1,20,000 ने शिक्षक बनने के लिए आवेदन दिए हैं। अब करीब 3,00,000 (43 प्रतिशत) नागरिक शेष रह जाते हैं जो अध्यापक बनने की क्षमता तो रखते हैं, परंतु पढ़ाते नहीं हैं।

असंतुष्ट : मेरे कई सहपाठियों ने कहा कि वे विश्वविद्यालय में जाना चाहते हैं, परंतु उन्हें यह नहीं मालूम था कि वे किस विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करना चाहते हैं।

मैजिस्ट्रेल से 1963 में 22,266 स्नातक पास होकर निकले। अगले वर्ष इनमें से 13,370 ने विश्वविद्यालय में भरती होने के लिए आवेदनपत्र दिए।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि 100 विद्यार्थियों ने पढ़ाने की योग्यता प्राप्त की है तो उनमें से 60 ऐसे हैं जो पढ़ाना नहीं चाहते।

कौन अपने को शिक्षक कह सकता है : मेरी कक्षा में एक लड़की सबसे प्रतिभाशाली लगती है। उसको पढ़ने का शौक है। वह अच्छी-अच्छी किताबें पढ़ती है और फिर कमरा बंद करके बाख* का संगीत सुनती है।

आपकी तरह स्कूलों में यही सबसे बढ़िया कोटि के विद्यार्थी माने जाते हैं। परंतु मुझे तो यही सिखाया गया है कि इस प्रकार के विद्यार्थी सबसे अधिक खतरनाक और आकर्षक होते हैं। ज्ञान सदा दूसरों को देने के लिए होता है। 'एक व्यक्ति अपने को तभी शिक्षक कह सकता है जब उसे केवल अपने ही लिए संस्कृति में रुचि न हो।'

अठारहवीं शताब्दी का जर्मन संगीतज्ञ

विशेष उद्देश्य का स्कूल : मैं जानता हूं कि जिस प्रकार के लड़के आपकी कक्षा में हैं, उन्हें यह समझाना कि अध्यापक कैसा होना चाहिए आपके लिए काफी निराशाजनक होता होगा। फिर भी क्या लड़कों ने आपको बरबाद किया है, या आपने लड़कों को बरबाद किया है ?

चूंकि मैजिस्ट्रेल की पढ़ाई समाप्त करने के बाद विश्वविद्यालय में प्रवेश पाने की संभावना बढ़ जाती है, अतः मैजिस्ट्रेल में प्रशिक्षण अब अध्यापन को अधिक महत्व ने देकर अन्य विषयों में फैलता जा रहा है, और दिशाहीन होता जा रहा है।

यदि हमें अच्छे अध्यापकों का निर्माण करना है तो हमें ऐसे स्कूल चाहिए जो दूसरे क्षेत्रों में प्रवेश होने का माध्यम न बनें, वरन स्वयंसिद्ध हों। जो लड़का बैंक में नौकरी करना चाहता है, वह इस स्कूल में अपने को अजनबी महसूस करे। गांव से आया हुआ लड़का, जो अध्यापक बनना चाहता है, यहां अपनापन महसूस करे।

आवश्यक चयन : अब हमारे सामने जो समस्या आती है वह आठ वर्ष के अनिवार्य स्कूलों की समस्या से बिल्कुल भिन्न है। वहां तो सभी को अधिकार था कि उसके साथ समानता का व्यवहार किया जाए, परंतु मैजिस्ट्रेल में मुख्य प्रश्न योग्यता का है।

इन स्कूलों में नागरिकों को, विशेष क्षेत्रों में दूसरों की सेवा करने के लिए शिक्षित किया जाता है। यह आवश्यक है कि वे विश्वसनीय हों।

शिक्षण का डिप्लोमा कड़ी मेहनत के बाद मिलना चाहिए। हम नहीं चाहते कि बाद में हम को अयोग्य समझकर हटाया जाए। हमारे साथ वैसा ही व्यवहार होना चाहिए जैसा डाक्टरों और इंजीनियरों के साथ होता है।

उद्देश्य सामने रखो : आप टैक्सी चलाने वाले को इसीलिए तो फेल नहीं करेंगे क्योंकि उसे गणित नहीं आती। या आप डाक्टर को इस कारण फेल नहीं करेंगे क्योंकि वह कविता नहीं जानता।

एक बार आपने मुझसे ये शब्द कहे थे, 'तुम्हें लैटिन काफी नहीं आती। तुम तकनीकी स्कूल में क्यों नहीं चले जाते ?'

क्या आपको सचमुच में यह पक्का विश्वास है कि बिना लैटिन पढ़े कोई अच्छा शिक्षक नहीं बन सकता ? कभी आपने इस पर सोचा है ? आप तो जो पद्धति चली आई है, उसी में डूबे हुए हैं। आपने कभी उसका मुल्यांकन नहीं किया।

व्यक्ति : यदि आपने मुझ में वास्तविक रुचि ली होती, यदि आपने मुझसे पूछा होता कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं तो शायद आपकी दृष्टि में लैटिन की महत्ता थोड़ी कम हो जाती।

लेकिन फिर शायद आपको मुझसे किसी और बात पर आपत्ति होती। आपको शायद पंदरह वर्ष के ऐसे लड़के से डर लगता हो जिसे अपने लक्ष्य का पूरा बोध है। आपको उसमें उसके गुरु के प्रभाव का आभास होता है।

धिक्कार है उसे जो व्यक्ति से खिलवाड़ करे। आपके लिए व्यक्ति का स्वतंत्र विकास सबसे बड़ा आदर्श है। समाज की आवश्यकताओं के प्रति आपको कोई चिंता नहीं है।

मेरे ऊपर मेरे गुरु का बहुत प्रभाव पड़ा है, और मुझे इसका गर्व है। उन्हें भी इसका गर्व है। अगर यही स्कूल की शिक्षा का सार नहीं है तो और क्या है ?

मनुष्य और जानवर में मुख्य भेद स्कूल के ही कारण है। अध्यापक अपने शिष्य को अपना समस्त विश्वास, प्यार और आशाएं प्रदान करता है। लड़का जब बड़ा होगा तो वह उसमें कुछ अपने अनुभव से जोड़ेगा और इसी तरह मानव समाज आगे बढ़ता है।

जानवर स्कूल नहीं जाते। उनके व्यक्तित्व का विकास स्वतंत्र रूप से होता है। उन्हें कोई शिक्षित नहीं करता। इसीलिए, हजारों साल से गौरेया अपने घोंसले एक ही तरह से बनाती आ रही है।

धार्मिक स्कूल : मुझे लोगों ने बताया कि धार्मिक स्कूलों में भी कुछ लड़के इसकी चिंता करते हैं कि उनका कर्तव्य क्या है। यदि उन्हें प्राथमिक स्कूलों से ही यह बता दिया जाता कि हम सबका कर्तव्य एक ही है—जहां कहीं भी हों, दूसरों का भला करें—तो शायद वह इस चिंता में अपने सर्वोत्तम वर्ष न गंवाते।

समाज सेवा का स्कूल : दो भिन्न प्रकार के स्कूल बनाकर, शायद हम बच्चों को अपने व्यवसाय के बारे में निर्णय करने के लिए कुछ और समय दे सकते।

एक विशेष प्रकार के स्कूल समाज सेवा के स्कूल कहलाएं। इनमें 14 से 18 वर्ष तक के बच्चे जाएं। यह उनके लिए होंगे जिन्होंने अपना जीवन औरों के लिए देने का निश्चय कर लिया है।

इन्हीं स्कूलों में पादरी प्राथमिक स्कूलों के अध्यापक, यूनियन कार्यकर्ता और राजनीति में जाने वाले व्यक्ति जाएं। सबके लिए एक ही प्रकार की शिक्षा होगी।

अपने अपने क्षेत्र की विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए बाद में एक वर्ष जोड़ा जा सकता है।

दूसरे प्रकार के स्कूलों को 'आत्म सेवा के स्कूल' कहा जा सकता है। इनमें वर्तमान स्कूल, बिना परिवर्तन के बने रहेंगे।

उच्च आदर्श : 'समाज सेवा के स्कूल' अपने आदर्श ऊंचे रखने का प्रयास करें, और इन्हीं में संतोष प्राप्त करें। इनमें कोई नंबर नहीं दिए जाएंगे, कोई अंकों का रजिस्टर नहीं होगा। खेल-कूद नहीं होंगे, छुट्टियां नहीं होंगी, शादी या जीविका से संबंधित कोई कमजोरी नहीं होगी। समस्त विद्यार्थियों में संपूर्ण समर्पण की भावना जाग्रत की जाएगी।

हो सकता है कि इनमें से कुछ इतना समर्पण न कर पाएं। उनका कुछ लड़कियों से परिचय हो जाए, और वे अपने सीमित परिवार बना लें।

फिर भी उन्होंने अपने सर्वोत्तम वर्ष, एक व्यापक परिवार—मानव परिवार की सेवा करने की शिक्षा में बिताए और इसलिए वे औरों से कहीं बेहतर होंगे। वे अच्छे मां-बाप बनेंगे जिनके कुछ आदर्श होंगे, और वे अपने बच्चों की ऐसे ही परिवरिश करेंगे कि वह भी बड़ा होकर ऐसे ही स्कूल में जाएगा।

आपके 'आत्म सेवा के स्कूल' सबको शादी के लिए तैयार करना चाहते हैं जो विवाह कर लेते हैं वे बहुत सुखी नहीं होते। और यदि कोई अविवाहित रहता है, तो उसके स्वभाव में बहुत कटुता आ जाती है।

बेरोजगार अध्यापक : बहुधा हमें यह शिकायत सुनाई देती है कि आवश्यकता से अधिक अध्यापक हैं। यह सच नहीं है। कई लोग अध्यापन की ओर आकर्षित होते हैं पर उनकी वास्तविक रुचि उसमें नहीं होती। यदि आप उनके काम के घंटे बढ़ा देंगे, तो वे सब अध्यापन छोड़ देंगे।

एक विवाहित अध्यापिका अपने पति के बराबर ही कमा लेती है। वास्तव में वह घर के बाहर एक साधारण गृहिणी से अधिक समय व्यतीत नहीं करती। वह एक आदर्श मां और पत्नी होती है। यदि बच्चे को जुकाम हो जाए तो वह स्कूल नहीं जाती। ऐसी पत्नी कौन नहीं चाहेगा ?

इसके अतिरिक्त माध्यमिक स्कूलों में हजारों स्थान रिक्त पड़े हैं। आप उन स्थानों पर ऐसे व्यक्तियों को नियुक्त करते हैं जिसके पास उच्च डिग्री हो या जो उच्च डिग्री के लिए पढ़ रहा हो। रासायनिक, पशु चिकित्सक, शल्य चिकित्सक और छद्मवेशी विद्यार्थी।

आपने प्राथमिक स्कूलों के अध्यापकों को इन स्थानों पर नहीं रखा यद्यपि उन्हें कक्षा चलाने का वर्षों का अनुभव है।

जाति विरादरी : वर्तमान विधायक, जिनके हाथ में सत्ता है, कभी मैजिस्ट्रेल के स्नातकों को माध्यमिक स्कूलों में नियुक्त नहीं करेंगे।

इसके विपरीत, उनका तो प्रस्ताव यह भी है कि प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाने के लिए भी विश्वविद्यालय की डिग्री अनिवार्य कर दी जाए। उनका कहना है कि शिक्षण शास्त्र और मनोविज्ञान विश्वविद्यालय के स्तर पर ही पढ़ा जा सकता है।

जब विश्वविद्यालय के स्नातक स्कूल की आलोचना करते हैं और उसे अस्वस्थ बताते हैं, तो वे यह भूल जाते हैं कि वे स्वयं वहीं के पढ़े हुए हैं। पच्चीस वर्ष की अवस्था तक उन पर इन्हीं का तो प्रभाव रहा है। वह इसकी कल्पना भी नहीं कर सकते कि उनसे भिन्न पृष्ठभूमि के लोग भी लायक हो सकते हैं। जब वे प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापकों से, अपने छोटे बच्चों के बारे में बात करते हैं तो वह ऐसे ही बोलते हैं मानो दोनों एक ही परिवार के हैं। कोई बात छिपाई नहीं जाती और दोनों मिलकर कार्य करते हैं।

परंतु जब वह माध्यमिक स्कूल के अध्यापक से बात करते हैं तो ऐसी भाषा प्रयोग में लाते हैं मानो अपने दुश्मन का सामना कर रहे हों।

वह इसे स्वीकार नहीं करना चाहते, परंतु सच क्या है यह वह जानते हैं। प्राथमिक स्कूल के अध्यापक इसलिए अच्छे हैं क्योंकि उन्होंने स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करने में इतना अधिक समय व्यतीत नहीं किया है। उच्च स्कूलों के शिक्षक अपनी उन तमाम डिग्रियों के कारण वैसे बन गए हैं जैसे वे हैं।

संस्कृति सब के लिए

पलायन : पहाड़ी इलाके में हमारा निर्वाह कठिन है। वहां के खेतों में हम सबके लिए काम नहीं है। इस बात से सभी अर्थशास्त्री सहमत हैं।

वह सहमत नहीं होते तो भी क्या ? अपने को मेरे पिता की स्थिति में रखकर देखें। क्या आप अपने बेटे का तिरस्कार देख सकेंगे ? अतः आपको तो चाहिए कि आप हमारा अपने बीच में स्वागत करें और हमें दूसरी कोटि के नागरिक की तरह केवल अप्रशिक्षित मजदूर बनने के योग्य न समझें।

प्रत्येक समुदाय की अपनी संस्कृति होती है, और किसी समुदाय की संस्कृति दूसरे से कम नहीं होती है। हम अपनी संस्कृति आपके लिए उपहार के रूप में लाए हैं। आपकी शुष्क किताबें, जिनको लिखने वालों ने सिवा किताबें पढ़ने के कुछ और नहीं किया, हमारी संस्कृति से थोड़ी ताजगी पाएंगे।

ग्रामीण संस्कृति : स्कूल की पाठ्य पुस्तकों में पेड़ पौधों, जानवरों और मौसम के बारे में लिखा रहता है। आप उसे देखकर सोचेंगे कि किसी किसान ने इन्हें लिखा होगा।

लेकिन नहीं। इसको लिखने वाले आपके स्कूल के पढ़े हुए लोग हैं। आपको तसवीरें देखने से ही इसका पता चल जाएगा। किसान बाएं हाथ से काम करते हुए दिखाई दे रहें हैं, फावड़े गोलाकार हैं, हंसिया से गुड़ाई हो रही है, लोहार ऐसे औजारों से काम कर रहे हैं जो रोमन काल में काम आते थे, और चेरी के पेड़ में बेर की पत्तियां हैं।

मेरी प्रथम वर्ष की अध्यापिका ने एक दिन मुझसे कहा, 'इस पेड़ पर चढ़कर मेरे लिए चेरी तोड़ दो।' मेरी मां ने जब यह सुना तो उन्होंने कहा, 'इनको अध्यापिका बनने का सर्टिफिकेट किसने दिया ?' आपने उसे तो शिक्षक बनने का सर्टिफिकेट दे दिया, परंतु मुझे नहीं, जबकि मैं अपने सब पेड़ों को ठीक से जानता हूं।

मैं 'सौरमेंडी'* शब्द भी जानता हूं। मैंने उनकी छंटाई की है, फिर उनको बीन कर घर पर लाकर चुल्हे में जलाया है, और उस पर रोटी पकाई है। मेरी उत्तर पुस्तिका में आपने सौरमेंडी शब्द के नीचे रेखा खींचकर उसे गलत बताया। आपका कहना था कि वह शब्द 'सारमेंटी' है क्योंकि वह लैटिन से आया है। फिर आपने चुपके से शब्दकोश में जाकर उसका अर्थ देखा।

आप नितांत अकेले हैं : आप मनुष्यों के बारे में हमसे भी कम जानते हैं। लिफ्ट के कारण आप अपनी इमारत में ही रहने वाले किसी व्यक्ति को नहीं जानते। आप कार में बैठते हैं, और इसलिए आपका परिचय बस में बैठने वाली जनता से नहीं है। टेलीफोन के कारण आप अन्य लोगों के चेहरे नहीं देखते और न उनके घरों में जाते हैं।

मैं आपके बारे में नहीं जानता। परंतु आपके विद्यार्थी, जिन्होंने सिसरो** का अध्ययन कर रखा है—कितने जीवित परिवारों को वे अंतरंग रूप से जानते हैं ? कितनों के घरों की रसोइयों में वे गए हैं ? कितने बीमारों के साथ वे रात भर बैठे हैं ? कितने मृतकों को उन्होंने कंधा दिया है ? मुसीबत पड़ने पर वे कितनों का सहारा ले सकते हैं ?

यदि फ्लोरेंस में बाढ़ नहीं आती तो उन्हें यह भी नहीं पता चलता कि

---

* सौरमेंडी : अंगूर की बेल की टहनियां।

** सिसरो : एक लैटिन लेखक।

उनकी इमारत में नीचे के हिस्से में जो परिवार रहता है उसके कितने सदस्य हैं।

मैं इन विद्यार्थियों के साथ एक वर्ष तक, एक ही कक्षा में पढ़ा हूं। परंतु मुझे इनके परिवारों के बारे में कुछ नहीं मालूम। लेकिन वे दिन भर बकवास करते रहते हैं। कभी-कभी तो इतनी जोर से बोलने लगते हैं कि किसी के लिए उनकी बात समझना संभव नहीं है। कोई बात नहीं—उनमें से प्रत्येक केवल अपनी ही बात सुनना चाहता है।

मानवीय संस्कृति : आपकी खिड़की के सामने से हजारों मोटरें रोज निकलती होंगी, आपको यह नहीं मालूम कि यह किन लोगों की हैं और कहां जा रही हैं।

परंतु मुझे अपनी घाटी की आवाजें मीलों दूर तक सुनाई देती हैं। यह जो दूर से मोटर की आवाज सुनाई दे रही है, यह नेविथो स्टेशन जा रहा है। उसे थोड़ी देर हो गई है। आप चाहें तो मैं आपको सैकड़ों लोगों के बारे में, अनेक परिवारों के बारे में, उनके मित्रों के, उनके रिश्तेदारों और वैयक्तिक संबंधों के बारे में बता सकता हूं।

आप जब भी किसी श्रमिक से बात करते हैं तो बिलकुल गलत ढंग से करते हैं। आपके शब्दों का चुनाव, आपका लहजा, आपके मजाक, सब गलत होते हैं। मैं अपने पहाड़ी क्षेत्र के लोगों को इतनी अच्छी तरह पहचानता हूं कि चाहे वे चुप रहें, तब भी मैं समझ जाता हूं कि वह क्या सोच रहे हैं। या यदि वह बोल कुछ रहे हैं, और मन में कुछ और है, तब भी मैं समझ जाऊंगा कि उनके दिमाग में क्या विचार है। उचित था कि आपके कवि आपको ऐसी संस्कृति प्रदान करते यही संसार के नब्बे प्रतिशत लोगों की संस्कृति है। लेकिन अभी तक किसी ने इसे शब्दों में, या चित्रों में, या सिनेमा में नहीं उतारा है। आपमें कुछ तो विनम्रता होनी चाहिए। आपकी संस्कृति में भी हमारी संस्कृति की तरह दोष है, शायद ज्यादा ही है। प्राथमिक स्कूल के अध्यापक के लिए वे निस्संदेह हानिकारक हैं।

आप हमसे कैसी संस्कृति की अपेक्षा करते हैं

लैटिन भाषा की शिक्षा : आपके लिए जो विषय सबसे महत्वपूर्ण है, उसे हमें कभी नहीं पढ़ना पड़ेगा। आप हमसे इटैलियन में लिखे हुए लेखों का भी लैटिन में अनुवाद करवाते हैं। परंतु इटैलियन और लैटिन भाषा को विभाजित करने

वाली क्या कोई स्पष्ट रेखा है ?

किसी ने आपके लिए लैटिन की व्याकरण की पुस्तक भी लिख दी है। यह हमें ठगन का बहुत बड़ा साधन है। क्योंकि इसके हर नियम के लिए हमें यह जानना होगा कि इसकी उत्पत्ति कब और कहां हुई थी।

रूढ़िवादी छात्र चाहते हैं कि सब के लिए व्याकरण पढ़ना और उसके सूत्र कंठस्थ करना अनिवार्य होना चाहिए। वे इसे स्वीकार करते हैं क्योंकि उनका एकमात्र उद्देश्य अपनी उन्नति करना है। जब वे अध्यापक बन जाएंगे तो वे भी अपने छात्रों पर इन सूत्रों के रटने की अनिवार्यता लागू करेंगे।

आपने मेरे एक निबंध में 'पोर्तावित' शब्द के नीचे रेखा खींचकर उसे गलत बताया। आपके अनुसार यदि कोई चीज जटिल बनाई जा सकती है तो उसे सरल बनाना अपराध है। आपको ज्ञात हो कि सिसरो ने भी अक्सर 'पोर्ता'* शब्द का उपयोग किया है। सिसरो तो प्राचीन रोम में था, उसने भी यही गलती की थी।

गणित का शिक्षण : मैजिस्ट्रेल में एक दूसरा विषय भी खराब तरह से पढ़ाया जाता है—यह है गणित। प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने के लिए साधारण गणित का ज्ञान होना चाहिए। माध्यमिक स्कूल का गणित अनावश्यक है। सच पूछिए तो मैजिस्ट्रेल में गणित के बिना भी काम चल सकता है। उसकी बजाए, गणित पढ़ाने का तरीका सिखाया जाना चाहिए जो गणित नहीं है, वरन शिक्षण प्रक्रिया है।

सामान्य संस्कृति के एक पहलू के रूप में कुछ उच्चतर गणित सिखाया जा सकता है। इसके लिए किसी विशेषज्ञ से दो या तीन व्याख्यान दिलवाने काफी होंगे जिनमें वह थोड़े से सरल शब्दों में यह समझा सके कि उच्चतर गणित क्या होता है।

यदि भविष्य में मैजिस्ट्रेल से पास होने वाले विद्यार्थी माध्यमिक स्कूलों में भी पढ़ाने लगे तब भी परिस्थिति में कोई आमूल परिवर्तन नहीं होगा।

सच पूछिए तो माध्यमक स्तर की कक्षाओं को गणित पढ़ने के लिए गणित में डिग्री आवश्यक नहीं है। यह अनिवार्यता तो उस विशेष वर्ग के लोगों की उपज है, जिनके बच्चों के पास विश्वविद्यालय की डिग्रियां हैं। इस डिग्री के नियम के कारण वे 20,478 बढ़िया नौकरियां हड़प लेते हैं। इनमें काम का भार न्यूनतम होता है (एक हफ्ते में 16 घंटे) ऐसी नौकरी में आप हर साल

* पोर्ता : लैटिन में दो शब्दों का अर्थ 'ले जाना' है—पोर्ता सरल है और दूसरा कठिन है।

वही निरर्थक बातें दोहरा सकते हैं जो माध्यमिक कक्षा के तीसरे वर्ष के किसी भी विद्यार्थी को पहले से ही मालूम हैं। इसमें आपको अपने विद्यार्थियों के उत्तर जांचने में केवल 15 मिनट लगते हैं क्योंकि उत्तर या तो ठीक होते हैं या गलत।

दर्शनशास्त्र : यदि किसी ने दर्शनशास्त्र एक पुस्तिका को पढ़ा है तो वह दार्शनिक नीरस होगा। संसार में बहुसंख्यक दार्शनिक हैं और वे आवश्यकता से अधिक बातें कहते हैं।

मेरे दर्शनशास्त्र के अध्यापक ने किसी दर्शन के पक्ष या विपक्ष में अपनी निजी राय नहीं दी। मैं कह नहीं सकता कि उन्हें सभी दर्शन अच्छे लगते थे या वे उनके प्रति उदासीन थे।

यदि मुझे दो अध्यापकों में से चुनाव करना पड़े—एक तो अपने विषय के पीछे दीवाना हो और दूसरा बिलकुल उदासीन—तो मैं तो दीवाने को ही चुनूंगा। उसका अपना कोई मत होगा या वह किसी विशेष दर्शन को अधिक पसंद करता होगा। निश्चय ही वह अपनी पसंद के दर्शन की बातें अधिक करेगा और दूसरे दार्शनिकों की आलोचना करेगा। परंतु उसके कारण हम उस दार्शनिक के मूल ग्रंथों को पढ़ने के लिए विवश किए जाएंगे और इस प्रक्रिया से हमें दर्शनशास्त्र का ज्ञान होगा और समझ में आएगा कि दर्शन हमारे समस्त जीवन पर हावी हो सकता है।

शिक्षण शास्त्र : आजकल शिक्षण शास्त्र जिस ढंग से पढ़ाया जाता है, उसे मैं बिलकुल व्यर्थ समझता हूं। परंतु मैं यह पूरे विश्वास से नहीं कह सकता। शायद, इसकी और गहराई से जांच करने पर हम अपना निर्णय दे सकें कि इसकी कोई सार्थकता है या नहीं।

हमें पता चलेगा कि शिक्षण का एक ही तथ्य है—उसका एकमात्र सत्य यही है कि प्रत्येक शिक्षार्थी भिन्न होता है, समय का प्रत्येक क्षण भिन्न होता है। अतः प्रत्येक लड़के के लिए, प्रत्येक देश के लिए, प्रत्येक परिवेश के लिए और प्रत्येक परिवार के लिए, प्रत्येक क्षण भिन्न होता है।

इतनी बात समझने के लिए किसी भी पाठ्य पुस्तक का आधा पन्ना काफी होगा। बाकी जितना भी शिक्षण शास्त्र का साहित्य है वह रद्दी में फेंकने लायक है।

बारबियाना के स्कूल में कोई दिन ऐसा नहीं बीतता था जब कोई न कोई शिक्षण संबंधी समस्या सामने न आई हो। परंतु हम उसे शिक्षण शास्त्र की समस्या के नाम से नहीं पुकारते थे—वह उस विशेष लड़के की समस्या थी। ऐसी अनेकों

समस्याएं आती थीं—रोज-रोज और बार-बार।

गियान्नी के बारे में जितना हम जानते हैं, उससे अधिक किसी बड़े प्रोफेसर की किताब नहीं बता सकती।

धर्मग्रंथ : आपके स्कूलों में तीन वर्ष प्राचीन महाकाव्यों (इलियड, ओडसी, एनीड) के बुरे अनुवाद पढ़ने में व्यतीत किए जाते हैं। तीन वर्ष दांते* पढ़ने में बिताए जाते हैं। परंतु बाइबिल की पढ़ाई के लिए एक क्षण भी नहीं दिया जाता।

आप यह न कहिए कि बाइबिल पढ़ाना तो पादरियों का विशेष काम है। उसकी धार्मिक महत्ता पर हम ध्यान न भी दें, फिर भी वह ऐसी पुस्तक है जो प्रत्येक स्कूल में प्रति वर्ष पढ़ाई जानी चाहिए।

साहित्य पढ़ते समय सबसे अधिक समय इस पुस्तक के अध्ययन में लगाना चाहिए। इसका प्रभाव सबसे गहरा और सबसे व्यापक है, जो समस्त देशों की सीमाओं के परे तक चला गया है।

भूगोल में सबसे लंबा अध्याय पैलेस्टाइन के भूगोल पर होना चाहिए। इतिहास में प्रभु यीशु के जन्म से पहले, उनके जीवन काल, और जीवन के बाद की घटनाओं का विशेष महत्व होना चाहिए।

पाठ्यक्रम में अध्ययन का एक विशेष क्षेत्र और जोड़ देना चाहिए पुराने और नए टेस्टामेंट की पढ़ाई, पुरानी पांडुलिपियों की मूल विषय-वस्तुओं में भिन्नता की दृष्टि से आलोचना और साथ में इनसे संलग्न पुरातत्व ज्ञान और भाषा विज्ञान के प्रश्न।

आपको इन सबका ध्यान क्यों नहीं आया ? क्या जिन लोगों ने आपके स्कूलों की योजना बनाई थी, उन्हें प्रभु यीशु से कुछ भय था ? क्या इसलिए कि निर्धन यीशू समृद्ध वर्ग का मित्र कैसे होता ?

धर्म : यदि धर्मग्रंथों को उनके उपयुक्त महत्ता दी जाएगी तो धर्म की शिक्षा एक गंभीर प्रश्न बन जाएगी।

उसके अर्थ होंगे कि बच्चों को धर्मग्रंथों की व्याख्या करके समझाना। यह काम पादरी भी कर सकता है, या कोई अज्ञेयवादी गंभीर अध्यापक भी, जिसने धर्मग्रंथों का पादरी के बराबर अध्ययन किया हो।

जब आप ऐसे अध्यापकों की खोज करेंगे तो आपको अपनी संस्कृति की कमजोरियां स्पष्ट नजर आने लगेंगी। आपको फ्लोरेंस में अनेकों पादरी मिल जाएंगे

---

* दांते : इटली का कवि।

जो बड़ी उच्च कोटि की बाइबिल की शिक्षा दे सकते हैं। वे ग्रीक अच्छी तरह पढ़ सकते हैं और आवश्यकता पड़ने पर हीब्रू भी थोड़ी बहुत समझ लेते हैं।

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति का नाम बता सकते हैं जो पादरी न हो परंतु उनके साथ इन विषयों पर बहस कर सके ? अर्थात वह आपके स्कूलों में पढ़ा हुआ हो और धार्मिक स्कूल का विद्यार्थी न हो ?

ऐसे एक बुद्धिजीवी नवयुवक का व्याख्यान मैंने सुना। उसने संसार की सभी पुस्तकें पढ़ रखी थी। (केवल एक को छोड़कर) श्री जीड कहते हैं, 'यदि गेहूं का एक दाना धरती पर न गिरे और नष्ट भी नहीं हो तो वह फल नहीं देगा।'

मैं नहीं जानता कि श्री जीड कौन हैं। परंतु मैंने वर्षों तक बाइबिल पढ़ी है और मैं उसे आजीवन पढ़ता रहूंगा।

काउंट : जो अपनी बाइबिल को भूल गए हैं, वे कुछ भी कर सकते हैं। आप जो कुछ पढ़ाते हैं उन सभी पर हमें आपत्ति हो सकती है। मन में विचार उठने लगता है कि इन सबका निर्णय किसने किया था।

सचाई यह है कि आपके स्कूलों की परेशानियां उनके जन्म से ही शुरू हो गई थीं।

इनका जन्म 1859 में हुआ था। एक राजा अपने परिवार की संपत्ति बढ़ना चाहता था। अतः उसने युद्ध की तैयारी शुरू की। सबसे पहले उसने एक जनरल के हाथ में शासन सत्ता सौंप दी। उसके बाद उसने पार्लियामेंट की छुट्टी कर दी। उसके बाद उसने एक काउंट को बुलाकर कहा कि वह राज्य शिक्षा पद्धति पर एक कानून तैयार करे।*

वही कानून, जो बल द्वारा सारे इटली में लागू किया गया था, आज भी वहां के स्कूलों का आधार है।

इतिहास की शिक्षा : इस कानून से सबसे अधिक नुकसान इतिहास को हुआ है। इतिहास पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। मैं सबसे प्रचलित वाली पुस्तकों में से तथ्य लूंगा।

व्यापक दृष्टि से देखें तो वे इतिहास हैं ही नहीं। इतिहास में बड़े संकीर्ण दृष्टिकोण की एकतरफा कहानियां हैं जो विजयी राजा द्वारा किसानों के लिए

* एक राजा : विक्टर इमेनुएल द्वितीय।
जनरल : एलफेंसो लामार्मोरा।
छुट्टी : युद्ध के समय विक्टर इमेनुएल ने पार्लियामेंट भंग कर दी और स्वयं सत्ता ले ली।

गढ़ी गई हैं। संसार का बिंदु इटली है। हारने वाले सदा दुष्ट होते हैं, और जीतने वाले सदा अच्छे। उनमें केवल राजाओं, सेनापतियों और युद्धों की गाथाएं हैं। श्रमिकों की परेशानियों और संघर्षों का कहीं नाम नहीं है।

उस व्यक्ति का तो सत्यानाश निश्चित है जिससे सेनापति या शस्त्र निर्माता चिढ़ते हों। जो इतिहास की सर्वोत्तम आधुनिक पुस्तक है, उसने गांधीजी के बारे में केवल नौ पंक्तियां लिखी हैं। इन पंक्तियों में भी उनकी विचाराधारा या उनके काम करने के तरीकों पर एक भी शब्द नहीं है।

नागरिकशास्त्र : नागरिक शास्त्र भी एक ऐसा विषय है जिसके बारे में, मैं कुछ जानता हूं परंतु वह आपके स्कूल में नहीं पढ़ाया जाता।

कुछ अध्यापक इसकी सफाई में कहते हैं कि दूसरे विषयों को पढ़ाते समय इसका भी अप्रत्यक्ष रूप में अध्ययन हो जाता है। यदि यह सच होता तो बहुत अच्छा होता। यदि वास्तव में कोई चीज सिखाने का एक इतना अच्छा तरीका है, तो फिर हम सभी विषयों के लिए इसका उपयोग क्यों नहीं करते ? क्यों न ऐसी एक ठोस संरचना बनाई जाए जिसमें सभी विषयों का सम्मिश्रण हो और फिर भी जब चाहे तब उन विषयों को अलग कर दिया जाए।

आप इस बात को स्वीकार कीजिए कि आपको वास्तव में नागरिक शास्त्र का कोई ज्ञान नहीं है। आपको शायद मेयर के बारे में थोड़ा सा अस्पष्ट ज्ञान हो। आपने किसी मजदूर के घर में कभी खाना नहीं खाया है। आपको सार्वजनिक वाहनों की समस्याओं का कोई ज्ञान नहीं है। आपको केवल यही मालूम है कि सड़क पर बहुत से वाहनों की भीड़ से रास्ता रुक जाता है। और आपके निजी जीवन में परेशानी आ जाती है।

आपने कभी इन समस्याओं का अध्ययन नहीं किया क्योंकि आपको डर लगता था। जैसे आपको भूगोल में गहराई से जाने में डर लगता है। आपकी पाठ्य पुस्तकों में सारे संसार के बारे में लिखा है, लेकिन कभी मुखभरी, एकाधिकार, राजनीतिक प्रणालियां या जातिवाद का जिक्र नहीं है।

टिप्पणियां : आपके पाठ्यक्रम में एक विषय तो है ही नहीं—लेखन कला।

आपके अनुसार, आप विद्यार्थियों के निबंधों पर जो अपनी टिप्पणियां लिखते हैं, वही इसके लिए पर्याप्त हैं। मेरे पास यहां पर उनका कुछ संकलन है। वे केवल वस्तुस्थिति का संकेत करती हैं—लेखन को सुधारने का प्रयास नहीं करतीं। जैसे—

'बचकानी', 'बालसुलभ', 'अपरिपक्व', 'रद्दी', 'घिसा पीटा'—लड़का इन

टिप्पणियों से क्या सीख सकता है ? शायद वह अपने बाबा को स्कूल में भेजे तो ठीक होगा। क्योंकि वे अधिक परिपक्व हैं।

अन्य टिप्पणियां : 'अपर्याप्त सामग्री है;' 'अवधारणा तुच्छ है', 'विचार अस्पष्ट हैं', 'जो लिखा है उसका वास्तविक अनुभव नहीं है।' ऐसी टिप्पणियों से लगता है आपने विषय ही गलत होगा। ऐसा विषय देना ही गलत था।

या 'अपनी शैली सुधारो।' 'अशुद्ध भाषा'। 'घिसी पिटी शैली'। 'अस्पष्ट'। 'अच्छी रचना नहीं'। 'खराब उपयोग'। 'अधिक सरल लिखने का प्रयास करो'। 'वाक्यों की रचना गलत है'। 'अपने को अभिव्यक्त करने का तुम्हारा तरीका सदा उपर्युक्त नहीं होता।' 'तुम्हारी भाषा अधिक नियंत्रित होनी चाहिए।' ये सब बातें तो आपको सिखानी थीं। परंतु आप इस पर विश्वास ही नहीं करते कि लेखन क्रिया भी सिखाई जा सकती है। आप नहीं मानते कि लेखन कला के कुछ सुस्थापित स्पष्ट नियम होते हैं। आप तो आज भी उन्नीसवीं सदी के व्यक्तिवाद में लिप्त हैं।

फिर कुछ ऐसी टिप्पणियां भी हैं जिनसे पता चलता है कि लिखने वाले के पास असाधारण प्रतिभा है जो भगवान की देन है। 'स्वाभाविक मूल्यवान विचारों की उपयुक्त अभिव्यक्ति', 'अभूतपूर्व व्यक्तित्व के अनुरूप।' जब आपने इतना लिखा है तो यह भी क्यों न जोड़ दीजिए, 'आपको जन्म देने वाली मां धन्य है!'

प्रतिभाशाली व्यक्ति : आपने मेरे एक निबंध में बहुत ही कम नंबर दिए और यह टिप्पणी लिखकर मुझे लौटा दिया, 'लेखक पैदा होते हैं, बनाए नहीं जाते।' और आप इटैलियन भाषा पढ़ाने का वेतन लेते जा रहे हैं। जन्म से ही प्रतिभाशाली होने का सिद्धांत बुर्जुआ कल्पना की देन है। इसकी उत्पत्ति जातिवाद और आलस्य के सम्मिश्रण से हुई है।

राजनीति में भी इसकी उपयोगिता है। अनेक स्थापित राजनीतिक दलों के बीच में से रास्ता निकालकर आगे बढ़ने की अपेक्षा यह कहीं सरल है कि एक डी. गाल को पकड़कर उसे अभूतपूर्व प्रतिभाशाली व्यक्ति घोषित करके कहा जाए कि वही फ्रांस है।

इसी तरह आप इटली के स्कूलों की कक्षाओं को भी चलाते हैं। पियरीनो में प्रतिभा है। मुझ में नहीं है। इसे हम स्वीकार कर लें और चैन से बैठें।

इससे कोई तात्पर्य नहीं कि पियरीनो के लेखन में कोई स्वतंत्र विचार है या नहीं। वह अधिकतर उन्हीं पुस्तकों के विचारों को लिखेगा जिनसे वह घिरा

हुआ है। उसके लिखे हुए 500 पन्नों को आसानी से 50 पन्नों में संक्षेप में लिखा जा सकता है और फिर भी विषय की कोई बात छूट नहीं जाएगी।

मैं भी इस स्थिति से समझौता कर लूं और आगे पढ़ने की इच्छा छोड़ दूं, और आप पहले की तरह कुर्सी पर बैठे हुए, बच्चों को फेल करते जाइए।

कला की शिक्षा : लेखन कला को भी किसी अन्य हुनर की तरह सिखाया जा सकता है।

बारबियाना में हमने इस प्रश्न पर बहुत विचार विमर्श किया। कुछ लड़कों का यह मत था कि जिस ढंग से हम लिखते हैं, उसी का वर्णन कर दें। अन्य ने कहा, 'कला एक गंभीर विषय है, यद्यपि उसकी तकनीक सरल है। पाठक हम लोगों पर हंसेंगे।'

नहीं, गरीब हम लोगों पर नहीं हंसेंगे। अमीर जितना भी चाहे हंसें। हम भी उन पर हंसेंगे कि वे गरीबों के समान दक्षता से एक भी किताब या अखबार नहीं लिख पाए।

अंत में इससे सब सहमत हुए कि जो हमें प्यार करते हैं, उनके लिए हम लेखन के सभी नियमों को लिखें।

अति साधारण तकनीक : हम अपना लेखन इस प्रकार करते हैं। सर्वप्रथम हम सब अपनी जेब में सदा एक नोटबुक रखते हैं। जैसे ही कोई विचार आता है, हम उसे फौरन लिख लेते हैं। प्रत्येक विचार एक अलग पृष्ठ पर लिखते हैं, और पन्ने के केवल एक ओर ही लिखते हैं।

फिर एक दिन उन सब कागजों को एक बड़ी मेज पर फैला देते हैं। प्रत्येक को फिर से एक-एक करके देखते हैं, जिससे यदि एक ही विचार दो बार लिखा है तो उसे अलग कर दें। उसके बाद एक ही विचार से संबंधित जितने कागज हैं, उनकी एक गड्डी बना लेते हैं। यह गड्डी अध्याय बन जाएगी। प्रत्येक अध्याय को फिर छोटे-छोटे उप-खंडों में विभाजित कर देते हैं। ये पैरा बन जाएंगे।

अब हम प्रत्येक पैरा को एक शीर्षक देने का प्रयास करते हैं। यदि हम किसी पैरा के लिए कोई शीर्षक नहीं दे पाते, तो इसके मतलब हैं कि या तो उस पैरा में कोई विषयवस्तु नहीं है या फिर बहुत सारी बातें एक ही में ठूंस दी गई हैं। अतः कुछ पैरा को तो समाप्त कर दिया जाता है, और कुछ को तोड़कर विभाजित कर देते हैं।

पैरा का शीर्षक देते समय हम उनके तर्कसंगत क्रम पर भी विचार विमर्श करते हैं। इस प्रकार एक रूपरेखा तैयार हो जाती है। रूपरेखा तैयार होने पर

हम सभी गड्डियों को उसी के अनुसार जमा देते हैं।

अब पहली गड्डी को लेते हैं और उसके कागज मेज पर फैलाते हैं। उनको क्रमानुसार सजाते हैं। इस तरह हमारे निबंध का प्रथम प्रारूप तैयार होता है।

इसकी हम एक प्रतिलिपि बनाकर अपने सामने रख लेते हैं। अब कैंची, गोंद और रंगीन पेंसिल लेकर कागजों को फिर से देखते हैं। इसमें नए पृष्ठ जोड़े जाते हैं और पुरानों में छंटनी होती है, तथा क्रम बदलता है। इसकी फिर से प्रतिलिपि तैयार करते हैं।

अब एक बार फिर समस्त पुस्तक को पढ़ते हैं—कोई शब्द है जो काटा जा सकता है ? कोई अतिरिक्त विशेषण का प्रयोग हुआ है ? कोई बात दोहराई गई है ? क्या गलत बात आ गई है ? कोई कठिन शब्द है ? कोई बहुत लंबा वाक्य है ? किसी एक वाक्य में दो विचार तो नहीं आ गए ?

हम कई बाहर के लोगों को बुलाते हैं। हम उन्हीं लोगों को बुलाना पसंद करते हैं जिन्होंने बहुत अधिक औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं की है। उनसे हम जोर से सारी पुस्तक पढ़वाते हैं। हम सुनते हुए यह देखते हैं कि जो बात हम कहना चाह रहे थे, वह उनके समझ में आ रही है या नहीं।

यदि वह विषय को स्पष्ट करने के लिए कोई सुझाव देते हैं तो तो हम उसे स्वीकार कर लेते हैं। परंतु यदि वह सर्तकता के उद्देश्य से कोई सुझाव देते हैं तो हम उन्हें अस्वीकार कर देते हैं।

इतनी मेहनत करने के बाद और इन सब नियमों का पालन करने के बाद हमारी पुस्तक तैयार होती है। इन नियमों का कोई भी उपयोग कर सकता है। पर अकसर कोई ऐसा मूढ़ बुद्धिजीवी भी मिल जाता है जो कहता है, 'आपके इस 'पत्र' की शैली अत्यंत वैयक्तिक है।'

आलस्य : आप यह स्वीकार क्यों नहीं करते कि आपको लेखन कला का ज्ञान नहीं है ? वह ऐसा हुनर है जिसमें आलस्य से काम बिलकुल नहीं चल सकता है।

आप यह न कहिए कि आपके पास इसके लिए समय नहीं है। पूरे वर्ष में एक ही लंबा निबंध लिखना पर्याप्त होगा, परंतु वह सब विद्यार्थियों द्वारा मिलकर लिखा जाना चाहिए।

आलस्य का जिक्र करते समय मैं आपको एक काम का सुझाव दे सकता हूं जिससे आपके विद्यार्थियों का मनोरंजन भी हो सकेगा। साएत्ता* की पुस्तक

* साएत्ता : इतिहास की पुस्तक का लेखक।

का असली इटैलियन में अनुवाद क्यों नहीं करते ? एक वर्ष इसमें व्यतीत कीजिए।

अनुचित परीक्षाएं : आप एक साल में 210 दिन काम करते हैं। उसमें करीब 30 दिन तो परीक्षाएं लेने में चले जाते हैं और करीब 30 दिन अन्य टेस्ट लेने में। अतः शिक्षण के केवल 150 दिन बचते हैं। इनमें से भी आधा समय मौखिक परीक्षाओं में निकल जाता है अतः पूरे वर्ष में 75 दिन तो पढ़ाई होती है, और 135 दिन परीक्षण कार्य होता है।

यदि चाहें तो आप इसी वर्तमान अनुबंध के अंदर इससे तिगुना समय पढ़ाने में व्यतीत कर सकते हैं।

कक्षा में परीक्षण : कक्षा में परीक्षा के समय आप बैठे हुए लड़कों की पंक्तियों के बीच में इधर-उधर चक्कर लगाते रहते थे। आप देखते रहते थे कि मैं परेशानी में हूं, और गलतियां कर रहा हूं, परंतु आपने कभी कुछ नहीं कहा।

घर में भी मेरी यही स्थिति है। चारों ओर मीलों दूर तक कोई ऐसा नहीं है जिसके पास मैं सहायता के लिए जा सकूं। आसपास कोई किताब नहीं है।—कोई टेलीफोन नहीं है।

यहां मैं 'स्कूल' में हूं। मैं इतनी दूर कुछ सीखने के लिए आया हूं। यहां मेरी मां नहीं है जो चुप रहने का वचन देने पर भी बार-बार बीच में टोकती रहती है। यहां मेरी बहन का लड़का नहीं है जो अपने स्कूल में दिए गए घर के काम में मेरी सहायता मांगे। यहां शोरगुल नहीं है, अच्छी रोशनी है और मेरा अपना अलग एक डेस्क है।

और मेरे पास, थोड़ी ही दूर पर आप खड़े हैं। आपको यह सब बातें मालूम हैं। आपको इसलिए वेतन दिया जाता है कि आप मेरी सहायता करें।

परंतु उसकी बजाए आप सारा समय मेरी पहरेदारी में व्यतीत करते हैं—मानो मैं कोई चोर हूं।

आलस्य और भय : आपने स्वयं ही मुझसे कहा था कि मौखिक परीक्षाएं वास्तव में शिक्षा का अंग नहीं है। 'जब मुझे पहला घंटा मिले, तो तुम देर से आ सकते हो, क्योंकि मैं शुरू के आधे घंटे में जबानी परीक्षा लेती हूं।'

इन मौखिक परीक्षाओं के दौरान सारी कक्षा या तो आलस्य में और या डर में डूबी रहती है। जिस लड़के की परीक्षा हो रही है, वह भी अपना समय बरबाद करता है। जो विषय उसे ठीक से समझ में नहीं आता, उससे तो वह

बचता है और जो बातें उसे अच्छी तरह आती हैं उन्हीं पर जोर देता रहता है।

आपको खुश करने लिए हमें बस यह आना चाहिए कि हम अपना माल कैसे बेचें, और चुप न रहें। खाली समय में भी निरर्थक शब्द बोलते रहें। सापेन्यो* की आलोचनात्मक टिप्पणियों को अपनी कहकर दोहराएं और ऐसा प्रभाव डालें मानो हमने मूल ग्रंथों को पढ़ रखा है।

वैयक्तिक विचार : साथ-साथ यदि इसमें कुछ अपने वैयक्तिक विचार भी जोड़ दें तो और भी अच्छा प्रभाव पड़ता है। आप इन वैयक्तिक विचारों का बहुत आदर करते हैं। 'मेरी राय में पेट्रार्क**' यह कहने वाले लड़के ने शायद उसकी केवल दो कविताएं पढ़ी होंगी ओर हो सकता है कि एक भी न पढ़ी हो।

मैंन सुना है कि अमेरिका के स्कूलों में अध्यापक जब कभी भी कोई बात कहता है तो आधे विद्यार्थी हाथ उठाकर कहते हैं, 'मैं इससे सहमत हूं।' शेष आधे कहते हैं, 'मैं इससे सहमत नहीं हूं।' उसके बाद वे पक्ष बदल लेते हैं और पूरे समय चुइंगगम उत्साहपूर्वक चूसते रहते हैं। जो विद्यार्थी ऐसे मामलों में अपने व्यक्तिगत विचार अभिव्यक्त करता है, जो उसकी समझ के परे हैं, वह मूर्ख है। इसके लिए उसकी तारीफ नहीं करनी चाहिए। हम गुरुजी की बातें सुनने के लिए स्कूल जाते हैं।

यदाकदा ऐसा हो सकता है कि हमारा अपना कोई विचार कक्षा के लिए या अध्यापक के लिए उपयोगी हो। परंतु यह कोई राय मात्र नहीं होगी। या किसी पुस्तक से पढ़ी हुई बात नहीं होगी। यह कोई ऐसी निश्चित बात होगी जो हमने स्वयं अपनी आंखों से घर में, या सड़क पर, या जंगल में देखी हो।

एक चतुर प्रश्न : आपने मुझसे कभी ऐसी बातों पर प्रश्न ही नहीं पूछे। मैं स्वयं अपने आपसे इनके बारे में बात नहीं करूंगा। परंतु आपके प्रिय विद्यार्थी बड़ा मासूम चेहरा बनाकर, तमाम दुनिया की बातों पर प्रश्न पूछते हैं जबकि उन्हें वे सब बातें पहले से मालूम हैं। और आप उन्हें प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं, 'कितना चतुर प्रश्न है!'

यह एक ऐसी हास्यास्पद स्थिति है जिससे किसी को कोई लाभ नहीं

* सापेन्यो : साहित्य के इतिहास का लेखक।
कई पुस्तकें पढ़ी हैं तथा उनकी तुलना और आलोचना की है।

** पेट्रार्क : इटली का चौदहवीं शताब्दी का एक कवि।

होता। उन चापलूस विद्यार्थियों को तो नुकसान ही होता है। मेरे ऊपर तो यह अत्याचार है क्योंकि मैं इस खेल में प्रवीण नहीं हूं।

दूसरी मृत भाषा : आपने मुझे कठिन प्राचीन भाषा में फोस्कोला* की लिखी एक कविता अनुवाद के लिए दी। 'इसे प्रचलित गद्य में लिखो।' मैं बार-बार उन अपरिचित पंक्तियों को पढ़ता रहा और मुझे समझ में नहीं आया कि कहां से आरंभ करूं। आप मुसकराए और फुसफुसाकर बोले, 'शुरू करो बेटे। यह बहुत सरल है। मैंने कल तुम्हें यह बताई थी। लगता है तुमने पढ़ा नहीं है।'

यह सच था। मैंने नहीं पढ़ा था। फोस्कोला ने जानबूझ कर कठिन शब्दों को चुनकर लिखा था क्योंकि वह गरीबों से नफरत करता था। वह हम लोगों के हित के लिए कोई प्रयास नहीं करना चाहता था।

आप चाहते थे कि मैं उसकी यह विचित्र भाषा सीखूं। पर क्या मैं कभी उसका उपयोग करूंगा ?

ऐसी आधुनिक भाषाएं जो मुझे औरों से जोड़ती हैं, उनको सीखने के लिए मैं जी-जान से कोशिश करने को तैयार हूं, और दूसरों की मदद करने को तैयार हूं। अंग्रेज विद्यार्थी डिक—यदि मुझसे किसी इटेलियन शब्द का उच्चारण जानना चाहे तो मैं उसे न सिर्फ सहायता दूंगा, मैं लंदन में बोली जाने वाली भाषा में दो-एक चुटकले सुनाकर उसे खुश भी कर दूंगा।

डर दिखाकर बाध्य करना : समय बीतता जा रहा था और मुझसे कुछ बोला नहीं जा रहा था। मुझे गुस्सा भी आ रहा था और खिसियाहट भी लग रही थी।

अन्य बेचारे बच्चे मुझे समझ नहीं पा रहे थे। आपने उन्हें बचपन से ही अपने मोंटी** की भाषा सिखाई है। वे तो अब ऊबने के आदी हो चुके हैं। उन्हें स्कूल से और कोई अपेक्षा भी नहीं है।

वे मुझे प्यार भरी सहानुभूति दिखाएंगे। संत विंसेंट धर्मार्थ संस्था की तरह उन्हें कभी घृणा दिखाई नहीं देती।

कोई मुझसे नफरत नहीं करता। आप भी नहीं करते। 'मैं तुम्हें खा नहीं जाऊंगा,' आप मुझे प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं। आप मेरे लिए अपना कर्तव्य निबाहना चाहते हैं।

* उन्नीसवीं शताब्दी का इटली का एक कवि।

** मोंटी : उन्नीसवीं शताब्दी का कवि, जिसने इलियड को इटैलियन में अनुवाद किया है।

परंतु साथ ही साथ आप मेरे प्रत्येक आदर्शों का विनाश करते जा रहे हैं। क्योंकि आपके हाथ में डिप्लोमा देने की सत्ता है और उसी का डर दिखाकर आप अपने आदर्शों को छोड़ने को बाध्य करते हैं।

कला : यदि मौखिक परीक्षाओं के दौरान मुझे थोड़ा सा समय शांत हो जाने के लिए मिलता (जैसे अब मैं यहां अपने मित्रों के साथ इन बातों को लिखते समय शांत हूं) तो मुझे पक्का विश्वास है कि मैं आपको अपनी बात ठीक से समझा पाता। आखिर आप कोई जानवर तो हैं नहीं।

परंतु उस समय मेरे दिमाग में आपका अपमान करने के लिए बुरे-बुरे शब्द आ रहे थे। बहस करते समय हम इन अपमानजनक शब्दों को दबाकर उनकी जगह तर्क उपस्थिति करते हैं।

यही कला है जिसे अब हम समझ चुके हैं। इसके अर्थ हैं कि किसी व्यक्ति या किसी वस्तु के प्रति नफरत होना—उस पर देर तक मनन करना, और अपने मित्रों के सहयोग से धैर्यपूर्वक उस विचार करना।

धीरे-धीरे हमें सचाई का पता चलेगा। इसी प्रकार कलाकृति का जन्म होता है। अपने दुश्मन की ओर मैत्री का हाथ बढ़ाना जिससे वह बदल सके और आपकी सचाई को समझ सके।

छूत लगना : आपके स्कूल में एक महीने रहने के बाद मुझे भी आपकी छूत लग गई मैं भी वैसा ही हो गया।

मौखिक परीक्षा के दौरान मेरा दिल धुक-धुक करने लगता था। मैंने देखा कि जिन बातों से मैं अपने लिए बचना चाहता हूं वह मैं चाहता हूं कि दूसरों के साथ हों।

मेरा ध्यान अपने पाठ को सुनने में नहीं लगने लगा। मैं पूरे समय अगले घंटे में होने वाली मौखिक परीक्षा के लिए ही सोचता रहता।

सबसे अच्छे और दिलचस्प विषय नीरस बन गए। मानो उन विषयों का व्यापक बाह्य संसार से कोई संबंध ही न हो। मानो उन विषयों को केवल कक्षा तक ही सीमित रखा जा सकता है।

किताबी कीड़ा : घर में मैंने यह भी नहीं ध्यान दिया कब मेरी मां बीमार पड़ी। न मुझे अपने पड़ोसियों में रुचि रही। मैंने अखबार पढ़ना बंद कर दिया। मुझे रात में नींद नहीं आती थी।

मेरी मां दुःखी रहने लगी। मेरे पिता बड़बड़ाने लगे। 'तुम तो जंगल में

ही बेहतर रहोगे।'

मैं किताबी कीड़ा बन गया। इसके पहले मुझे सदा इतना समय मिलता था कि मैं किसी भी विषय का इस दृष्टिकोण से अध्ययन करूं मानो मैं उसे अपने छात्रों को पढ़ाने वाला हूं। यदि मुझे कोई बात महत्वपूर्ण लगती थी तो मैं अपनी पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को पढ़ता था, जिससे उस विषय की गहराई में जाऊं, और उसे ठीक से समझूं।

आपके प्रभाव के बाद मुझे अपनी पाठ्य पुस्तकें भी बोझ लगने लगीं। मैं खास बातों के नीचे रेखा खींच देता था। बाद में मेरे सहपाठियों ने मुझे और पतली-पतली पुस्तिकाएं रटने के लिए सुझाईं जिनसे आप संतुष्ट रहते।

संदेह : अब मेरी यह स्थिति हो गई कि मैं यह स्वीकार करने लगा कि आपकी बात ही ठीक है और आपकी संस्कृति ही सच्ची है। चूंकि हम अपने पहाड़ी क्षेत्र में औरों से अलग रहते थे, शायद इसीलिए अभी तक हम उन सरल आदर्शों का स्वप्न देखा करते थे, जिन्हें आप सदियों पहले भूल चुके हैं।

शायद हमारा यह स्वप्न कि एक ऐसी भाषा हो जिसमें सरल शब्द हों, और जो सबकी समझ में आ सके, एक ऐसी परिकल्पना थी जो अपने समय के बहुत आगे थी।

मैं आप ही जैसा बनने से बाल-बाल बच गया, जैसे बहुत से गरीबों के बच्चे जब विश्वविद्यालय में जाते हैं तो अपनी जाति ही बदल लेते हैं।

परदेशी : परंतु मुझे उतना बिगड़ने का समय मिला नहीं जितना आप चाहते होंगे। जून की परीक्षा में मुझे इटैलियन में पांच तथा लैटिन में चार नंबर आपने दिए।

मैंने फिर जंगल की राह पकड़ी और बारबियाना लौट आया। बचपन की तरह, एक बार फिर मैं सवेरे से शाम तक, प्रति दिन अपने स्कूल जाने लगा।

परंतु मैंने अभी स्कूल की समय-सारणी के अनुसार पूरा कार्य करना नहीं शुरू किया क्योंकि अभी मुझे दो परीक्षाओं में पुनः बैठना था। मेरे प्रधान ने छोटे बच्चों को पढ़ाने का और अखबार पढ़ कर सुनाने का काम अभी मुझे नहीं सौंपा। मुझे एक अलग कमरे में बैठकर पढ़ने की अनुमति दे दी गई, जिससे मैं शांतिपूर्वक बैठकर उन किताबों को पढ़ सकूं जो मेरे पास घर में नहीं थीं।

मैं अपनी पुस्तकों को छोड़कर केवल थोड़ी सी देर के लिए पत्रों को पढ़ने के लिए उठता था।

कुछ चिट्ठियां

भिक्षा : एलजीरिया से फ्रेंकूचियो लिखते है : 'यहां ये कुछ स्थान ऐसे हैं जहां मिट्टी लाल है और घास का एक तिनका भी नहीं है। अचानक ही रेल रुकी। मैंने खिड़की से सिर निकालकर देखना चाहा कि आखिर क्या बात है ? तीन लड़कियां रंग बिरंगे स्कर्ट पहने हुए आईं। वे रेल के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमीं। वे भीख नहीं मांगती हैं पर सभी उनकी ओर कुछ न कुछ फेंक देते हैं। वे उन्हें उठाकर अपनी कुर्ती के अंदर छिपा लेती हैं। जब वे रेल के आखिरी डिब्बे तक पहुंच जाती हैं, तब रेल फिर से चलना शुरू कर देती है। उन्होंने मुझे बताया कि बेन बेला तो भिक्षा मांगने की इस आदत को छुड़ाना चाहता है, पर बुमेडिएन चाहता है कि यह बनी रहे। मुझे इसका समाधान समझ में नहीं आया। कौन ठीक है ? फादर, आपकी क्या राय है ?'

गरीबों की भाषा : फ्रेंकूचियो का दूसरा पत्र : 'सड़क पर एक लकड़ी का गोल टुकड़ा पड़ा हुआ मिला। उसे मैं हवा में उछालकर वापस पकड़ता। थोड़ी देर में करीब 20 बच्चों ने मुझे घेर लिया। वे अपने हाथ उठा उठाकर मुझसे कहने लगे कि मैं उस लकड़ी को उनकी ओर फेंकू, ताकि वे उसे लपकें। मैंने उनकी ओर फेंका और पांच मिनट तक हम इस तरह खेलते रहे। हम लोगों ने आपस में एक शब्द भी बात नहीं की। अचानक ही उन लड़कों में से सबसे बड़े ने सबको रुकने का इशारा किया। उसने देख लिया था कि मेरे हाथ में अरबी भाषा का अखबार था। उसने अरबी में मुझसे पूछा कि मैं कौन हूं, कहां से आया हूं और यहां क्या कर रहा हूं। हम लोग एक छोटी मसजिद के सामने सीढ़ियों पर बात करने लगे। उसी समय वहां अंदर से मुअज्जिम बाहर आया और मुझसे जल्दी-जल्दी बात करने लगा। मुझे उसके सवाल समझ में नहीं आए और इसलिए मुझे यह बताना पड़ा कि मैं अरबी नहीं हूं, परंतु अरबी भाषा थोड़ी बहुत पढ़ सकता हूं। वह मुझे मसजिद के अंदर ले गया और कुरान पढ़ने को कहा। वह बहुत उत्तेजित हो गया था।

धर्म : फ्रांस से सैन्ट्रो का पत्र : 'उसने एक गली में मोटर खड़ी कर दी और मुझसे पैसे देने को कहा। मैंने कहा, 'सुनिए, मैं कैथोलिक हूं।' उसने फिर कुछ नहीं कहा वह मुझे वहीं छोड़कर चला गया, और मुझे चार किलोमीटर पैदल चलने के बाद मुख्य सड़क मिली।'

सूरजमुखी के उबले हुए फूल : वेल्स से फ्रैंक्रो लिखते हैं : पादरी के पास विदेशियों के पाप स्वीकार करने के लिए एक विशेष पुस्तिका है। आप उससे कहिए—'मैंने नंबर 25 के दो पाप किए और नंबर 12 के तीन पापों से संघर्ष किया'—उसने मुझे नंबर 25 पर एक प्रवचन दिया।'

मैं एक वृद्धा के लिए तरकारी बोता हूं। आज मैंने सारे दिन सूरजमुखी के फूल छीले। वह स्वयं निरामिष भोजन करती है, परंतु वह केवल मेरे लिए मांस खरीदती। मैंने कहा, 'नहीं, मुझे यह भी अनुभव करने दो।' अतः उसने दो सूरजमुखी के फूल लिए और उन्हें मेरे लिए उबाला।

राजनीति में रुचि न लेने वाली लड़की : मारसेल्स'* से कार्लोस, 'यहां पर एक पादरी के साथ कुछ इटली के विद्यार्थियों का दल आया है। उन्होंने एलजीरिया के रहने वालों के लिए बैरक बनाए हैं जिसका वे कोई किराया नहीं लेते। वे फ्रेंच भाषा सीखने का प्रयास नहीं करते। वे राजनीति की कोई चर्चा नहीं सुनना चाहते। ये वेटिकन कौंसिल के बारे में बहुत बातें करते हैं पर काम करते समय उनके हाथ जल्दी-जल्दी नहीं चलते। उनमें से एक काफी बेवकूफ किस्म की लड़की है। आज जब मैं, तुम्हें चिट्ठी लिखने के लिए अपने कमरे में गया तो वह भी मेरे पीछे-पीछे चली आई और मेरे बिस्तर पर जाकर लेट गई और कहने लगी कि उसे फ्लोरेंस निवासी बहुत पसंद हैं।'

झूठ की प्रशंसा : लंदन से एउप्राडो : 'यह सब गलती उन मां-बाप की है जो बच्चों को बहुत ज्यादा सिर चढ़ाकर रखते हैं। वे उन्हें पैसा संभालकर खर्च करना नहीं सिखाते। वे उन्हें मनमानी करने देते हैं और उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं मानो वे बड़े हो चुके हैं। इससे मां-बाप को बच्चों का विश्वास मिल जाता है और बच्चे उनके सामने सच कहने से नहीं डरते। परंतु यदि झूठ के कारण बच्चा इतने सारे पापों से दूर रहता है तो क्या झूठ बोलना इतना बड़ा पाप है ? पता नहीं मैं अपनी बात स्पष्ट कर पाया हूं या नहीं। इंगलैंड में बच्चे बड़े सच्चे होते हैं। लेकिन उनको सच बोलने में परेशानी भी क्यों हो जब वे जानते हैं कि मां-बाप उन्हें यों भी नहीं डांटते ? मां-बाप को क्या मिलता है ? यदि मैं झूठ बोलता हूं तो इसके मतलब है कि मुझे मालूम है कि क्या बात गलत है और मैं उसे दोबारा करने से हिचकचाऊंगा।'

---

* मारसेल्स : फ्रांस का एक शहर।

हमारी प्रशंसा : इंगलैंड से यूनियन का एक वृद्ध मजदूर, पाओलो के लिए लिखता है—'...हमारी फैक्टरी के लिए वह भगवान का वरदान स्वरूप है और आपके स्कूल के लिए वह गौरव अर्जित करता है। वह इतना सक्रिय और प्रसन्न वदन है कि मुझे ऐसा लगता है मानो भगवान ने उसे यहां भेजा है। आप और हम इतने दूर हैं फिर भी हमारे विचार इतने मिलते हैं। यहां बहुत से मजदूर ऐसे हैं जो कंजरवेटिव पार्टी को वोट देते हैं और व्यवस्था का अखबार पढ़ते हैं। मैं उनसे कहता हूं 'इतने दिनों के बाद मुझे एक लड़का मिला है जो इतनी दूर इटली से आया है, और जो मेरी तरह सोचता है। यह तुम लोगों के कारण ही संभव हुआ है कि एक छोटा लड़का, और वह भी रोमन कैथोलिक, आज हमें सीख दे रहा है।'

एनीबेल कारो* सब पत्रों को पढ़ने के बाद मैं फिर अपनी पाठ्य-पुस्तक 'एनीड' पढ़ने लगता हूं। मैंने वह घटना पढ़ी जो आपको बहुत पसंद है। दो हट्टे-कट्टे पुरुष कुछ लोगों को उस समय मार रहे हैं जब वे सो रहे थे। मारे जाने वाले व्यक्तियों की सूची, चुराए गए माल का विवरण, उन व्यक्तियों के नाम जिन्हें एक पेटी उपहार में दी गई है, पेटी का वजन यह सब एक मृत भाषा में लिखा गया है।

'एनीड' पहले पाठ्यक्रम में सम्मिलित नहीं थी। आपने उसे चुना। मैं इसके लिए आपको कभी माफ नहीं करूंगा।

परंतु मेरे मित्र जानते हैं कि मेरा उद्देश्य अध्यापक बनना है और इसलिए मैं इसे पढ़ रहा हूं। अतः वे मुझे क्षमा करेंगे। फिर भी मैं, आप ही के समान, वास्तविकता से कट गया हूं।

छूत से बचाव

ततही संस्कृति : सितंबर में आपने, दोनों परीक्षणों में मुझे चार-चार नंबर दिए। आप स्वयं अपना धंधा भी ठीक से नहीं कर सकते। आपकी तराजू को क्या हो गया ? जितना मैं जून में जानता था, अब उससे कम कैसे जान सकता हूं।

आपने मुझे फेल कर दिया। परंतु आपने मेरे नेत्र भी खोल दिए। मुझे अब आप और आपकी संस्कृति स्पष्ट दिखाई देने लगी। आपकी संस्कृति सतही है। उसमें गहराई नहीं है। आपके समाज में सब एक दूसरे की आपस में तारीफ

* एनीबेल कारो : सोलहवीं शताब्दी का लेखक जिसने एनीड का अनुवाद इटैलियन में किया।

करते है क्योंकि आपकी संख्या इतनी कम है, इसी कारण आप बने हुए हैं।

बदला : मेरे पिता और मेरे भाई, मेरे लिए जंगल में काम करते हैं। मैं फिर से इसी पाठ्यक्रम को नहीं पढ़ सकता। मैं यह भी नहीं करूंगा कि लकड़ियां काटकर पीठ पर ढोऊं। इससे तो आपको बहुत संतोष मिलेगा, क्योंकि आपका उद्देश्य पूरा हो जाएगा।

अतः मैं बारबियाना में वापस आ गया हूं। जून में, मैं फिर से परीक्षा देने गया।

आपने मुझे फिर से फेल कर दिया मानो आप मुझे कूड़े की तरह फेंक रहे हैं, परंतु मैं भी हिम्मत नहीं हारूंगा। मैं अध्यापक बनकर रहूंगा। और मैं आपसे बेहतर अध्यापक बनूंगा।

दूसरा बदला : मेरा दूसरा बदला यह पत्र है। इसे हम सबने मिलकर लिखा है। गियान्नी ने भी इसमें सहयोग दिया है। उसके पिता अस्पताल में हैं। काश, गियान्नी में आज जैसी बुद्धि पिछले वर्ष ही आ गई होती। परंतु अब स्कूल के लिए उसके पास समय नहीं है। घर में उसके वेतन की आवश्यकता है। जब उसने इस पत्र के बारे में सुना, तो उसने कहा कि वह इतवार को आकर सहायता किया करेगा।

वह आया। उसने वह 'पत्र' पढ़ा। उसने कई शब्दों को बताया जो समझने में कठिन थे। उसने आपकी और भी कई अनैतिक बाते हमें याद दिलाईं। उसने हमें इजाजत दी कि हम उसको उदाहरणस्वरूप लेकर उसके ऊपर व्यंग्य करें। सच पूछिए तो वही इसका सच्चा लेखक है।

परंतु आप चैन की सांस नहीं ले सकते। वह आपकी आत्मा को हमेशा कोंचता रहेगा क्योंकि उसमें अपने को ठीक से व्यक्त करने की क्षमता आज भी ही है।

उत्तर की प्रतीक्षा : अब हम इस 'पत्र' में उत्तर की यहां प्रतीक्षा कर रहे हैं किसी मैजिस्ट्रेल में कोई व्यक्ति तो ऐसा होगा जो हमें जबाव दें—

"प्रिय लड़को,
सभी अध्यापक तुम्हारी अध्यापिका की तरह नहीं होते। तुम तो जातिवादी मत बनो।

यद्यपि मैं तुम्हारी सब बातों से सहमत नहीं हूं पर मैं इतना जानता हूं कि हमारे स्कूल बहुत अच्छे नहीं है। एक आदर्श दोष रहित स्कूल का ही नए व्यक्तियों और नए विचारों को अंदर आने से रोकना उचित होगा। और ऐसा आदर्श स्कूल कहीं नहीं है—न तुम्हारा और न हमारा।

फिर भी, तुम लोगों में से जो अध्यापक बनना चाहते हैं, यदि वे हमारे पास यहां आकर परीक्षा दें, तो यहां पर मेरे कई सहयोगी अध्यापक ऐसे हैं जो तुम्हारी बहुत सी बातों को अनदेखी कर देंगे।

शिक्षण शास्त्र में हम तुमसे केवल गियात्री पर ही प्रश्न करेंगे। साहित्य में हम तुमसे पूछेंगे कि तुमने इतना सुंदर यह 'पत्र' कैसे लिखा। लैटिन में हम उन पुराने शब्दों को पूछेंगे जिन्हें तुम्हारे बाबाजी अभी भी प्रयोग में लाते हैं। भूगोल में अंग्रेज किसानों के रीति-रिवाजों के बारे में पूछेंगे। इतिहास में हम उन बातों के बारे में पूछेंगे, जिनके कारण पहाड़ी लोग मैदान में आकर बसने लगे। विज्ञान में तुम हमें सही पेड़ों के नाम बताना जिनमें चेरी के फूल लगते हैं।"

इस प्रकार के पत्र का हम इंतजार कर रहें हैं। हमें मालूम है यह अवश्य आएगा।

हमारा पता यह है :

रगाजी-दी-बारबियाना
वियाडिलकोले-51
कोलंजानो-फिरेंज, इटली।

लार्ड बॉयल की प्रतिक्रिया

प्रिय बारबियाना स्कूल के छात्रो :

पहले मैं तुम्हें अपना परिचय दे दूं। मैं इंगलैंड के हाउस आफ कामंस का भूतपूर्व सदस्य और भूतपूर्व शिक्षा मंत्री भी हूं। प्रायः दस वर्ष तक इंगलैंड की ससंद में शिक्षा के विषय पर अपने राजनीतिक दल की और से मैं ही बोला करता था। अब मैंने राजनीति छोड़ दी है और मैं लीड्स विश्वविद्यालय का कुलपति बनने वाला हूं। यह उत्तरी इंगलैंड का एक बड़ा विश्वविद्यालय माना जाता है।

मैं तुम्हारे पत्र से बहुत प्रभावित हुआ और अपना एक निजी उत्तर तुम्हें भेजना चाहता हूं। तुमने अपने पत्र में बहुत भावावेश और क्रोध के साथ इस धारणा का समर्थन किया है कि तुम्हारे और हमारे देश में ऐसे अनेक लड़के

और लड़कियां हैं जिनकी योग्यताओं की पूरी संभावनाएं समझे बिना हम उन्हें अनुत्तीर्ण और अयोग्य करार कर देते हैं। वर्तमान संसार का यह सबसे महत्वपूर्ण सत्य है और मैंने जन- साधारण का ध्यान इस ओर आकर्षित करने का यथासंभव प्रयास किया है। पिछले बारह वर्षों में हमारे देश में जितने भी शिक्षा पर अध्ययन हुए हैं, उन सभी की रिपोर्ट में यही तथ्य उभर कर आता है—क्राउदर, राबिन्स, न्यूसम और प्लाउदन के प्रतिवेदनों में। परंतु मेरे विचार से तुम्हारे 'अध्यापक के नाम पत्र' ने इसे बड़े प्रभावकारी ढंग से समझाया है।

तुम्हें उत्तर भेजने का दूसरा यह कारण है कि मुझे पियरीनो और गियात्री से संबंधित विचारों में विशेष दिलचस्पी है। पियरीनो उस व्यावसायिक वर्ग का बच्चा है जिसका दाखिला शुरू से ही ऊंची कक्षा में हो जाता है और गियात्री गरीब किसान का लड़का है जिसे पूर्णकालिक शिक्षा की सबसे ज्यादा जरूरत है। मेरे विचार से तुम्हारा इस ओर ध्यान आकर्षित करना उचित ही है कि पियरीनो को गियात्री की संस्कृति का रत्ती भर भी परिचय नहीं है। उसकी शिक्षा में एक बहुत बड़ी कमी रह गई है।

कुछ विशेष वर्ग के चंद बच्चों के साथ शिक्षा में पक्षपात करने से हम उनकी शिक्षा की उपयोगिता को कम कर देते हैं क्योंकि उनका संपर्क उन दूसरे बच्चों के साथ नहीं हो पाता जिन्हें शायद सिसरो का नाम नहीं मालूम, परंतु वे अपने खेतों के कण-कण के बारे में जानते हैं। शिक्षा में इस प्रकार की छंटनी करने से गरीब लोग तो भाषा सीखने से वंचित रह जाते हैं जिसके द्वारा वे अपने को अभिव्यक्त कर सकें परंतु साथ ही साथ अमीर लोगों को भी वास्तविकता का ज्ञान नहीं हो पाता । लड़कों को चुनाव करके छांटने की पद्धति के विरुद्ध तुम लोगों ने जिस प्रभावशाली ढंग से अपनी बात समझाई है, उसकी मैं बहुत ही प्रशंसा करता हूं।

मेरे लिखने का तीसरा कारण तुम्हें बधाई देना है क्योंकि एक रचना के रूप में तुम्हारा 'पत्र' बहुत ही उच्च कोटि का है और बहुत प्रभावशाली है। तुमने तो अपना सारा ध्यान बेहतर स्कूली शिक्षा पर दिया है, उच्च कोटि की साहित्यिक शैली पर नहीं। परंतु तुम्हारी सुस्पष्ट और सूक्ष्म भाषा तुम्हारे सुलझे हुए विचारों के अनुरूप है। यद्यपि विवादों में तुमने बहुत तीखे प्रहार किए हैं, परंतु तुमने कोई भी ऐसा मुद्दा नहीं उठाया है जिसका तुम तर्क-वितर्क और विश्लेषण द्वारा समर्थन न कर सको।

इसमें कई विषय ऐसे हैं जिनमें मैं तुम्हारे साथ विचार-विमर्श करना चाहूंगा। मुझे खुशी है कि तुमने अपने पत्र में कुछ स्थान माध्यमिक शिक्षा पाठ्यक्रम को दिया है। जब हम कहते हैं, 'सबके लिए माध्यमिक शिक्षा उपलब्ध हो'—तो

उससे हमारा क्या तात्पर्य होता है ? इटली के स्कूलों में फेल होने वाले विद्यार्थियों का जो सांख्यिकी विश्लेषण तुम लोगों ने किया है और उसे स्पष्ट करने के लिए जो रेखाचित्र उसके साथ दिए हैं, वह इतनी बड़ी उपलब्धि है, जिसके लिए इटली की भौतिक संस्था ने विशेष रूप से तुम्हें पुरस्कार दिया है। इससे मेरी तथा अन्य कई व्यक्तियों की इस धारणा की भी पुष्टि होती है कि सभी बच्चों को आधुनिक संख्या संबंधी तकनीक सीखने का अवसर मिलना चाहिए। जो भी हमारे समाज की कार्य प्रणालियों को समझने का प्रयास करना चाहता है, उसे विश्लेषणात्मक विचाराधारा की तकनीक का प्रयोग करने से अवश्य लाभ होगा।

शायद तुम्हें यह जानकर सुखद आश्चर्य होगा कि इंगलैंड में ऐसे कई स्कूल हैं जिन्हें तुम्हारे विचारों से सहानुभूति है। जैसे हमारे यहां के अधिकांश अध्यापक—विशेषकर गांवों के अध्यापक, उस पेड़ का सही नाम जानना चाहेंगे जिसमें चेरी का फल लगता है। मुझसे कई अध्यापकों ने कहा है कि दूसरी भाषा सीखने के लिए लड़के और लड़कियों का विदेश जाना कितना उपयोगी होता है। बहुतों ने तुम्हारे इस मत का भी समर्थन किया है कि अच्छे निबंध लिखने के लिए जरूरी है कि विद्यार्थी अपने वास्तविक अनुभवों के बारे में लिखें। जहां तक इतिहास का प्रश्न है—मेरे देश के स्कूलों के पास किताबों के लिए पर्याप्त धन नहीं है। फिर भी मैं इतना कह सकता हूं कि आज कोई ऐसी इतिहास की पुस्तक नहीं लिखी जाएगी जिसमें गांधीजी के ऊपर केवल दो चार पंक्तियां हों, और यदि ऐसी पुस्तक हो भी तो बहुत कम अध्यापक उसे खरीदना चाहेंगे।

तुम्हारे पत्र में एक वाक्य ऐसा है जिससे मेरे मन में विशेष कौतूहल उत्पन्न होता है। तुमने लिखा कि 'एक अच्छा अध्यापक वह है जिसे केवल अपने ही लाभ के लिए सांस्कृतिक कार्यकलापों में रुचि नहीं हो।' मेरी अपनी धारणा है कि कुछ बातें व्यक्तिगत हित के लिए होती हैं, और कुछ समाज के हित के लिए। यदि कोई अध्यापक पूरी मेहनत से अपना काम करता है तो वह अपने अतिरिक्त समय में, औरों की तरह अपनी निजी सांस्कृतिक रुचियों का सुख क्यों नहीं भोग सकता ? कुछ व्यक्तियों को थोड़ा समय एकांत में व्यतीत करना अच्छा लगता हो और यदि तुम्हारी कक्षा की लड़की कमरा बंद करके बाख का संगीत सुनना चाहती थी, तो मेरे विचार से तुम्हें उसके प्रति इतना कठोर नहीं होना चाहिए। परंतु तुम्हारे इस कथन में एक महत्वपूर्ण सचाई है। 'ज्ञान का उद्देश्य ही यह है कि हम उसे दूसरों को बांटे।' अध्यापकों के प्रशिक्षण का वास्तविक उद्देश्य यही है कि ज्ञान कैसे बच्चों को दिया जाए, न कि उसका

शास्त्रीय अध्ययन।

तुम्हारे पत्र में कहीं-कहीं तुम्हारी पहुंच इतनी गहरी है कि मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। परंतु साथ ही साथ मुझे कुछ परेशानी भी हुई। 'जब कभी आप किसी मजदूर से बात करते हैं तो आपका लहजा, आपके शब्द, आपके मजाक सभी गलत होते हैं।' मैंने भी अपना जीवन पियरीनो की तरह प्रारंभ किया है। इसलिए मैं इस कथन की सचाई को स्वीकार करता हूं। फर्क केवल इतना है कि मुझमें इतनी समझ है कि मैं इस प्रकार के मजाक नहीं करता। वर्तमान समाज में, विभिन्न आर्थिक वर्गों के बीच संप्रेषण में कठिनाई है जैसे वेतनभोगी वर्ग और दैनिक मजदूरी वाला वर्ग स्टोकले कार्माइकेल पर तुमने जो टिप्पणी की है, वह बहुत प्रभावशाली है। स्टोकले कार्माइकेल ने अपने अंतिम मुकदमे में कहा था, 'मैं किसी श्वेत आदमी का विश्वास नहीं करता।' इस पर तुमने कहा, यदि वह श्वेत व्यक्ति (जिसने अपना सारा जीवन काले लोगों के हेतु समर्पित कर दिया है) कार्माइकेल के इस कथन पर नाराज होता है तो कार्माइकेल का कहना उचित ही है। 'यदि वह वास्तव में काले लोगों को प्यार करता है तो उसे इस कथन पर ध्यान न देकर प्यार बनाए रखना चाहिए।' यहां मैं तुमसे पूरी तरह सहमत हूं। सच पूछो तो तुम्हारी इस टिप्पणी के कारण ही मुझे तुम्हें पत्र लिखने की इच्छा हुई। जहां तक गोरे-कालों के मध्य संबंधो का प्रश्न है, यह बहुत जरूरी है कि इन संबंधों का आधार सहिष्णुता या दयालुता हो, श्वेतों की उदारता न हो। महत्वपूर्ण यह है कि हमारा समाज सबके प्रति न्यायपूर्ण है, सहिष्णु नहीं। तब हम इस आदर्श की ओर यथासंभव प्रयास करेंगे, चाहे दूसरे लोग गोरे या काले, इसके लिए कुछ भी कहें।

तुमने क्रोध से भरा हुआ 'पत्र' लिखा है परंतु इसमें परिपक्वता है, छिछोरापन नहीं। यह ऐसी शिक्षा पद्धति को प्रचारित करता है जिसके द्वारा सभ्य मानव समाज में समाज में परस्पर संचार की बाधाएं वस्तुतः कम होंगी। यद्यपि पूरे पत्र में तुम्हारा लहजा क्रोध से भरा हुआ है, परंतु अंत में तुमने आशा व्यक्त की है कि कोई सत्ताधारी व्यक्ति शायद तुम्हारी बातें समझेगा और उत्तर देगा कि 'कोई आदर्श दोष रहित स्कूल नहीं है, न तुम्हारा न हमारा।' यह समझने वाला व्यक्ति यदि सचमुच है तो वह निश्चय ही पियरीनो बनकर जीवन आरंभ करेगा न कि गियात्री बनकर। ऐसा पियरीनो जो अपनी शिक्षा के दोष खुद महसूस करता है। तुम्हारे उत्तम पत्र का यही उत्तम उपसंहार है कि तुम उसकी इस झिड़की को सुनने के लिए तैयार रहो—"तुम स्वयं जातिवादी न बन जाना।"

भवदीय

एडवर्ड बॉयल

भाग तीन

दस्तावेजों का संकलन

भाग तीन में हमने आंकड़े प्रदर्शित करने वाली कुछ सारणियां एकत्र की हैं; यद्यपि पुस्तक के पाठ को इनकी मदद के बिना भी समझा जा सकता है।

ये सारणियां वैसे किसी भी दोस्त के लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं, जो इस विषय में अपनी समझ को ज्यादा गंभीर बनाना चाहता है। यह वैसे दोस्तों के लिए भी उपयोगी है जो हमारी बातों पर भरोसा नहीं करते हैं।

सारणियों के लिए टिप्पणियां

सारणी 'अ'

आयाताकार खानों में रोमन अंको में दी गई संख्याएं नामांकित (दाखिला लेने वाले) छात्रों की हैं। जो संख्याएं *इटैलिक* में हैं और जिनके साथ अंग्रेजी का (R) अक्षर लगा है, उसका आशय यह है कि ये छात्र पुरानी कक्षा मे पुनः पढ़ रहे हैं।

जिन आयतों में रोमन संख्याओं के साथ (P) लिखा है, उसका अर्थ यह है कि इन छात्रों को प्रोन्नत (प्रमोट) किया गया है और जिन *इटैलिक* अंकों के साथ (F) लिखा गया है, उसका अर्थ अनुत्तीर्ण या फेल है और जिनके सामने (d) लिखा है, उसका आशय है—ड्रॉप आउट, यानी यह बिना पढ़ाई पूरा किए बीच में छोड़ कर जाने वालों की संख्या है। जहां (e) लिखा है, उसका अर्थ ऐलिमेंटरी या प्रारंभिक कक्षा से है और जहां (i) लिखा है, उसका आशय इंटरमीडिएट या माध्यमिक है।

सारणी 'स' के बिपरीत इस सारणी में उसी कक्षा में दुबारा दाखिला लेने वालों के जो आंकड़े दिए गए हैं, वे सरकारी हैं।

जन्म और मृत्यु के आंकड़े 'ईयर बुक आफ इटैलियन स्टैटिस्टिक्स' से लिए गए हैं। 1963-64 के स्कूलों के आंकड़े 'अनुवारी स्टैटिस्टिसी डेल्ल स्टूजियोने इतालियाना' 1956-65 से प्राप्त किए गए हैं।

1964-65 के कुछ आंकड़े 'इटैलियन स्टैटिस्टिकल कपैडियम' 1966 से लिए गए हैं।

आज, यानी मार्च 1967 में इस पुस्तक की पांडुलिपि हम दे रहे हैं तब तक 'ईयर बुक ऑफ इटैलियन स्टैटिस्टिक्स 1966' प्रकाशित नहीं हुई है लेकिन कुछ दोस्तों की कृपा से इस पर एक नजर डालने का अवसर हमें मिल गया है। 'ईयर बुक ऑफ इटैलियन स्टैटिस्टिक्स' हर साल प्रकाशित होती है लेकिन 1963-64 का खंड प्रकाशित नहीं किया जा सका। इस खंड में कुछ महत्वपूर्ण आंकड़े नहीं दिए गए हैं, जैसे 1960-61 और 1961-62 के इंटरमीडिएट के प्रथम और द्वितीय वर्ष के आंकड़े इसमें नहीं प्रकाशित किए गए हैं।

इन आंकड़ों को पहले प्रकाशित नहीं किया गया है। 'सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ स्टैटिस्टिक्स' के मुख्य प्रबंधक की कृपा से इनको यहां पहली बार प्रकाशित किया गया है।

स्कूलों से संबंधित आंकड़ों को काफी विलंब से प्रकाशित किया जाता है। उदाहरण के लिए 1965 की ईयर बुक का मार्च 1966 में विमोचन किया गया। इसमें 1963-64 के नामांकन के और कक्षा में पुनः प्रवेश लेने वाले (रिपीटर्स) छात्रों के आंकड़े दिए गए हैं। यही बात इसके पूर्ववर्ती सालों के आकड़ों के विषय में भी सच है।

इस पूरे प्रसंग में चौंकाने वाली बात यह है कि स्कूल शिक्षा पाने के दौरान काफी बड़ी संख्या ऐसे विद्यार्थियों की है जो बीच में ही पढ़ाई छोड़ देते हैं (यानी कुल दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या और उन छात्रों की संख्या जिनको स्कूल छोड़ने के समय उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण दिखाया जाता है, में बहुत अधिक अंतर है)।

इसके लिए हम लोगों को जो स्पष्टीकरण मिला है, वह इस प्रकार है : कक्षा के वर्गों की संख्या के घटने के डर से या स्कूल को मिलनेवाले अध्यापकों की संख्या में कटौती के भय से कुछ अध्यापक दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या को बढ़ाचढ़ा कर दिखाते हैं।

हो सकता है कि जनता के इन सेवकों का इरादा अच्छा हो लेकिन इसे उनकी गलती माना जाएगा अगर स्कूलों में दाखिला लेने वाले छात्रों की संख्या ज्यादा विश्वसनीय न हो।

गायब (लॉस्ट) बच्चों की हम लोगों द्वारा की गणना में जो क्षति हुई है, वह इतनी महत्वपूर्ण नहीं है। अंततः संख्या में कोई उल्लेखनीय अंतर नहीं आता है। हां, उनके स्कूल से गायब होने की तारीख आकलन जरूर किया जाना चाहिए।

शिक्षा मंत्री ने 1965 में अब तक का सबसे बड़ा बजट पेश किया था जो उस समय के सारे सरकारी खर्चे के 20 प्रतिशत से भी कहीं ज्यादा था। हमारी टिप्पणियों से यह बात जाहिर हो जाएगी कि मंत्री महोदय को स्कूलों की दशा की कितनी अच्छी जानकारी है। अगर कोई संसद सदस्य सवाल करता तो मंत्री महोदय को यह बताना मुश्किल हो जाता कि देश में स्कूल व्यवस्था के अंतर्गत कितने छात्र पढ़ रहे हैं।

अकसर हर साल हमारे समाचार पत्र अक्टूबर के महीने में स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों की संख्या प्रकाशित करते हैं तथा जुलाई में उत्तीर्ण या अनुत्तीर्ण छात्रों की संख्या भी प्रकाशित करते हैं। इसी विषय पर वे काफी अलंकारिक तरीके से लंबे लंबे लेख भी लिख कर प्रकाशित करते हैं।

यह पता लगाना काफी दिलचस्प होगा कि ये आंकड़े वे किन्हीं निजी स्रोतों से प्राप्त करते हैं अथवा शिक्षा मंत्रालय का कोई कर्मचारी ही उनके लिए यह काम करता है।

सारणी 'ब'

इस सारणी में इस बात को स्पष्ट किया गया है कि कक्षा के गठन (बनावट) तथा उससे गायब होने वाले छात्रों की गणना हमने किस प्रकार की है। इंटरमीडिएट स्कूलों के नए तथा पुराने छात्रों के चयन की तुलना के लिए बेहतर होता कि 1952 में जन्में बच्चों तक हम इसको ले जाते। हाल के वर्षों के बारे में पर्याप्त आंकड़ों के अभाव में विवशतावश हम केवल तीन कालम ही छाप रहे हैं (इसमें 1948, 1949 तथा 1950 में पैदा होने वाले बच्चों के आंकड़े दिए गए हैं)।

हर आयताकार खाना एक कक्षा का प्रतिनिधित्व करता है। बच्चे कहां से आए हैं, इसको तीर का चिह्न बनाकर दिखाया गया है। तीर से बच्चों की जो संख्या दूसरी ओर ले जाई गई है, इनका योग कक्षा की बनावट का सैद्धांतिक आधार व्यक्त करता है। नामांकित (दाखिल किए गए) बच्चों की संख्या घटा देने से हमको उन बच्चों की संख्या मालूम होती है जो स्कूल से गायब हो गए थे।

खोए या गायब होने वाले ये बच्चे उन बच्चों का प्रतिनिधित्व करते हैं (इन बच्चों को आयतों में दिखाया गया है), जिनको पृ. 25 पर 'खोए हुए आभूषण' उपशीर्षक के अंतर्गत दिया गया है। कक्षा की अध्यापिका इन बच्चों को जानती ही नहीं हैं और उनको जो नुकसान हुआ है, उसके लिए वह जिम्मेदार नहीं है। लेकिन वह उन बच्चों के लिए जिम्मेदार है जिनको आयतों के भीतर ठीक उसी कक्षा की दाहिनी ओर दर्शाया गया है।

सारणी 'स'

मूल पाठ में पृ. 24 से 40 तक की हमारी संख्या 1:29,900 के पैमाने पर प्रस्तुत की गई हैं। इनको सारणी 'स' में रखा गया है (इन लोगों की पैदाइश 1951 की है)।

इटैलिक अंको में दी गई संख्या अनुमान पर आधारित हैं। नामांकित तथा प्रोन्नत (प्रमोट किए गए) छात्रों की संख्या 'सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ स्टैटिस्टिक्स' से ली गई हैं; इसलिए जो बीच में पढ़ाई छोड़कर चले गए (ड्राप-आउट्स) और जो अनुत्तीर्ण हो गए, उनकी गणना उक्त आंकड़ों के आधार पर बहुत आसानी से की जा सकती है।

इंस्टीच्यूट ने उसी कक्षा में दुबारा पढ़ने वालों (यानी रिपीटर्स) के जो आंकड़े दिए हैं, वे किसी काम के नहीं हैं। 15 मार्च के बाद जो बच्चे स्कूल छोड़ कर चले गए, शिक्षा मंत्रालय उनकी भी गिनती उसी कक्षा में पुनः प्रवेश लेने वालों के रूप में करता है लेकिन कुल छात्रों को देखते हुए उनका प्रतिशत क्या है, इस पर मंत्रालय एकदम

मौन रहता है। इसलिए हमने अपने आंकड़ों की संगणना इस संकल्पना के आधार पर की है (जाहिर है जो अनुमानित ही होगी) कि जितने बच्चों को प्रोन्नत (प्रमोट) किया गया है, उन्होंने अपनी पढ़ाई आगे भी जारी रखी होगी। अगले शिक्षा सत्र में जितने बच्चों का दाखिला हुआ होगा, उनमें से प्रोन्नत (प्रमोटेड) बच्चों की संख्या घटाने से ये आंकड़े हमें प्राप्त हुए हैं।

अगर हमारी यह संकल्पना सही नहीं है तो स्कूल से गायब या खो गए बच्चों की संख्या हमारी अनुमानित संख्या से काफी ज्यादा हो जाएगी।

बहरहाल, प्रारंभिक कक्षा के पांचवे वर्ष के संदर्भ में यह बात वैध नहीं है। पांचवे साल में आकर जो बच्चे स्कूल से गायब हो जाते हैं, उनकी संख्या उन छात्रों से काफी अधिक होती है जो अनुत्तीर्ण हो जाते हैं। इससे पता चलता है कि पांचवें साल में प्रोन्नत होकर पहुंचने वाले बच्चों में से बहुत से बच्चे अपनी पढ़ाई जारी नहीं रख पाते।

इस सारणी में स्कूल से गायब (यानी स्कूल से चले जाने वाले) बच्चों के लिए शिक्षिका ही जिम्मेदार है। सारणी 'ब' में जिन गायब होने वाले बच्चों को दिखाया गया है, एक अच्छी अध्यापिका को चाहिए कि वह इनकी भी चिंता करे, अर्थात जिन बच्चों को पुनः उसी कक्षा में पढ़ना पड़ रहा है, जिसमें उसने पहले भी एक साल पढ़ा था और जिसको उस अध्यापिका के किसी अन्य सहकर्मी ने अनुत्तीर्ण कर दिया था।

सारणी 'ब' के गायब बच्चों को सारणी 'स' के साथ अगर हम मिला देते और अपनी अध्यापिका को इसकी याद दिलाते तो हमारा यह आचरण कोई बेतुकी बात नहीं माना जाता (वास्तव में वे बच्चे नहीं हैं—गायब हैं)। हमने ऐसा इसलिए नहीं किया है क्योंकि हमको पाठ तथा सारणी को समानांतर रख कर प्रस्तुत करना था। आंकड़ों वाली सारणी में एक बच्चे की गिनती केवल एक बार की गई है गोकि यह बच्चा दो अध्यापिकाओं के यहां से गायब हुआ है।

सारणी 'द'

पृ. 39 पर अंकित चित्र सारणी 'द' पर आधारित है लेकिन इस सारणी में आप प्रत्येक बच्चे को अलग करके भी देख सकते हैं। प्रत्येक बच्चे को एक संख्या से इंगित किया गया है। मसलन *इटैलिक* में 6 की संख्या पेरिनो से आने वाले बच्चों की है (देखें पृ. 026)।

1 से 32 तक की संख्या ऐसे बच्चों का प्रतिनिधित्व करती है, जो प्रारंभिक कक्षा की किसी अध्यापिका के जिम्मे किए गए हैं (इसमें इस बात का ध्यान नहीं रखा

गया है कि कौन सा बच्चा नया है और किस बच्चे को उसी कक्षा में दुबारा पढ़ने के लिए भेजा गया है)।

इटैलिक में दिए गए अंकों के द्वारा उन बच्चों को दर्शाया गया है, जिनको बाद में कक्षा में जोड़ा गया है (इनमें उसी कक्षा में पुनः पढ़ने वाले तथा पेरिनो, दोनो ही शामिल हैं)।

तीनों कालमों में बच्चों की संख्या सारणी 'स' के 1951 के आंकड़ों के संगत हैं, जिनको 1:29, 900 के अनुपात में पैमाने पर प्रस्तुत किया गया है।

सारणी 'ई'

इस सारणी में जो आंकड़े दिए गए हैं, उनको हमने 'सेंट्रल इंस्टीच्यूट ऑफ स्टैटिस्टिक्स' द्वारा प्रकाशित पुस्तक, 'डिस्ट्रीब्यूशन बाई एज आफ द पुपिल्स ऑफ एलिमेंट्री एंड इंटरमीडिएट स्कूल्स, 1963' की सारणी संख्या 5 ('अ' तथा 'ब') से लिया है।

यहां बच्चों की जो आयु दर्शायी गई है, वह 31 दिसंबर 1968 तक की है। लेकिन हम लोग इस बात का पता नहीं लगा सके कि 14,191 की संख्या किन बच्चों की है, जो 31 दिसंबर तक छह साल के नहीं थे।

केवल 1 जनवरी तक पैदा हुए बच्चों (जिनकी संख्या 2000 के करीब है) का ही कानूनी तौर पर दाखिला हो सकता था।

दूसरे वर्ष में जिन 45,718 बच्चों के पहुंचने की उम्मीद की जा सकती थी, उनमें से 14191 की रहस्यपूर्ण संख्या कम करके परिनो बच्चों की संख्या का पता लगाया जा सकता था।

सारणी 'फ'

यह सारणी हम लोगों के अपने अनुसंधान का नतीजा है। इसी प्रकार से पृ. 30 और पृ. 37 पर दिए गए चित्र भी हमारी खोज हैं, पृ. 32 पर की गई टिप्पणी भी हमारी है।

हम उन स्कूलों की सूची भी देना चाहते थे जहां से हमने इन बातों का पता लगाया था। इस प्रकार के बहुत से स्कूल हैं और ऐसे स्कूल अलग-अलग इलाकों में हैं।

लेकिन हमने उनको प्रकाशित न करने का निर्णय लिया, और इनको गुमनाम रखा। इसके पीछे वास्तविकता यह है कि कुछ प्रधानाचार्यों, कुछ पर्यवेक्षकों तथा कुछ अध्यापकों

ने नियमों-कानूनों की ओट लेकर तथ्यों को बताने से मना कर दिया। लगता था कि हम लोग उनसे किसी सैनिक रहस्य की जानकारी मांग रहे हैं।

कुछ ने अपने दस्तावेजों को इस शर्त पर देखने की अनुमति दी थी कि हम उनके स्कूल का नाम नहीं प्रकाशित करेंगे।

कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने हमें किसी भी प्रकार की तकलीफ नहीं दी। उन लोगों ने खुद भी लग कर हमारा काम किया और हमको अनेक बहुमूल्य सुझाव भी दिए।

इस बात का हम कभी पता नहीं लगा सके कि गोपनीयता के वे नियम कहां हैं जिनके चलते हमें आंकड़े देखने नहीं दिए गए। जिन आंकड़ों का यहां हमने विवेचन किया है, वे तो सार्वजनिक आंकड़े हैं। चूंकि हम लोग खुद भी आश्वस्त नहीं थे इसलिए हम अपने दोस्तों को किसी प्रकार नुकसान नहीं पहुंचाना चाहते थे।

सारणी 'अ'

पैदा 1948 में	1,00,000		पैदा 1949 में	940,000		पैदा 1950	908,000		पैदा 1951 में	861,000	
मर गए	80,000		मर गए	68,000		मर गए	50,000		मर गए	57,000	
बच गए	920,000		बच गए	872,000		बच गए	849,000		बच गए	804,000	
Ie 54—5	1,180,000	*258,000 R*	Ie 55—6	1,128,000	*256,000 R*	Ie 56—7	1,050,000	*201,000 R*	Ie 57—8	958,000	*168,000 R*
857,000 p	*225,000 f*	*98,000 d*	874,000 p	*166,000 f*	*80,000 d*	809,000 p	*128,000 f*	*113,000 d*	810,000 p	*76,000 f*	*72,000 d*
IIe 55—6	1,050,000	*161,000 R*	IIe 56—7	1,056,000	*151,000 R*	IIe 57—8	1,006,000	*141,000 R*	IIe 58—9	968,000	*122,000 R*
851,000 p	*155,000 f*	*47,000 d*	835,000 p	*135,000 f*	*86,000 d*	840,000 p	*102,000 f*	*64,000 d*	793,000 p	*107,000 f*	*68,000 d*
IIIe 56—7	1,021,000	*143,000 R*	IIIe 57-8	1,003,000	*118,000 R*	IIIe 58—9	984,000	*113,000 R*	IIIe 59—60	875,000	*62,000 R*
817,000 p	*109,000 f*	*95,000 d*	835,000 p	*104,000 f*	*64,000 d*	886,000 p	*48,000 f*	*50,000 d*	762,000 p	*67,000 f*	*46,000 d*
IVe 57—8	928,000	*73,000 R*	IVe 58—9	888,000	*42,000 RR*	IVe 59—60	923,000	*40,000 R*	IVe 60—61	852,000	*62,000 R*
846,000 p	*40,000 f*	*42,000 d*	816,000 p	*39,000 f*	*33,000 d*	814,000 p	*69,000 f*	*40,000 d*	725,000 p	*82,000 f*	*45,000 d*
Ve 58—9	870,000	*34,000 R*	Ve 59—60	857,000	*45,000 R*	Ve 60—61	861,000	*53,000 R*	Ve 61—2	847,000	*93,000 R*
790,000 p	*50,000 f*	*30,000 d*	768,000 p	*56,000 f*	*30,000 d*	725,000 p	*98,000 f*	*37,000 d*	695,000 p	*89,000 f*	*63,000 d*
II 59—60	577,000	*82,000 R*	I 160—61	598,000	*89,000 R*	Ii 61—2	664,000	*89,000 R*	Ii 62—3	668,000	*111,000 R*
398,000 p	*156,000 f*	*23,000 d*	408,000 p	*159,000 f*	*31,000 d*	433,000 p	*183,000 f*	*48,000 d*	452,000 p	*178,000 f*	*38,000 d*
III 60—61	463,000	*65,000 R*	III 61—2	488,000	*67,000 R*	IIi 62—3	516,000	*72,000 R*	IIi 63—4	531,000	*72,000 R*
394,000 p			365,000 p	*109,000 f*	*14,000 d*	396,000 p	*106,000 f*	*14,000 d*	408,000 p	*101,000 f*	*22,000 d*
IIIi 61—2	408,000	*33,000 R*	IIIi 62—3	410,000	*38,000 R*	IIIi 63—4	438,000	*35,000 R*	IIIi 64—5	459,000	*36,000 R*
359,000 p			389,000 p	*56,000 f*		415,000 p	*59,000 f*				

सारणी 'अ' क्रमशः....

पैदा 1952 में 860,000		
मर गए 56,000		
बच गए 804,000		
Ie 58—9	897,000	*113,000 R*
762,000 p	*75,000 f*	*60,000 d*
IIe 59—60	895,000	*124,000 R*
755,000 p	*104,000 f*	*36,000 d*
IIIe 60—61	841,000	*67,000 R*
722,000 p	*81,000 f*	*38,000 d*
IVe 61—2	839,000	*83,000 R*
703,000 p	*87,000 f*	*49,000 d*
Ve 62—3	800,000	*87,000 R*
680,000 p	*90,000 f*	*30,000 d*
Ii 63—4	716,000	*112,000 R*
514,000 p	*115,000 f*	*47,000 d*
IIi 64—5	590,000	*65,000 R*
IIIi 65—5	472,000	*28,000 R*

पैदा 1953 में 864,000		
मर गए 49,000		
बच गए 815,000		
Ie 59—60	874,000	*90,001 R*
746,000	*79,000*	*49,000 d*
IIe 60—61	895,000	*118,000 R*
740,000 p	*101,000 f*	*54,000 d*
IIIe 61—2	847,000	*84,000 R*
722,000 p	*85,000*	*40,000 d*
IVe 62—3	826,000	*85,000 R*
705,000 p	*91,000 f*	*30,000 d*
Ve 63—4	793,000	*83,000 R*
685,000 p	*88,000 pf*	*20,000 d*
Ii 64—5	683,000	*98,000 R*

पैदा 1954 में 860,000		
मर गए 46,000		
बच गए 814,000		
Ie 60—61	890,000	*99,000 R*
758,000 p	*91,000 f*	*41,000 d*
IIe 61—2	915,000	*121,000 R*
756,000 p	*110,000 f*	*49,000 d*
IIIe 62—3	862,000	*90,000 R*
743,000 p	*89,000 f*	*30,000 d*
IVe 63—4	844,000	*86,000 R*
722,000 p	*96,000 f*	*36,000 d*
Ve 64—5	809,000	*81,000 R*

पैदा 1955 में 869,000		
मर गए 43,000		
बच गए 826,000		
Ie 61—2	906,000	*115,000 R*
762,000 p	*101,000 f*	*43,000 d*
IIe 62—3	917,000	*123,000 R*
770,000 p	*102,000 f*	*45,000 d*
IIIe 63—4	879,000	*92,000 R*
756,000 p	*95,000 f*	*28,000 d*
IVe 64—5	359,000	*89,000 R*

सारणी 'ब'

1,000,000 पैदा हुए
80,000 मर गए
920,000 जीवित बच गए

Ie 54-5: 920,000 / 1,180,000 नामांकित / गायब

36,000 पेरीनोस

98,000 छोड़ गए
225,000 अनुत्तीर्ण
857,000 प्रोन्नत

940,000 पैदा हुए
68,000 मर गए
872,000 जीवित बच गए

IIe 55-6: 857,000 / 51,000 / *167,000* / 1,075,000 / 1,053,000 नामांकित / *22,000* गायब

Ie55-6: 872,000 / 98,000 / *225,000* / 1,195,000 / 1,128,000 नामांकित / *67,000* गायब

36,000 पेरीनोस

47,000 छोड़ गए
155,000 अनुत्तीर्ण
851,000 प्रोन्नत

88,000 छोड़ गए
166,000 अनुत्तीर्ण
874,000 प्रोन्नत

908,000 पैदा हुए
59,000 मर गए
849,000 जीवित बचगए

IIIe 56-7: 851,000 / *63,000* / *139,000* / 1,053,000 / 1,021,000 नामांकित / *32,000* गायब

II 56-7: 874,000 / 47,000 / *155,000* / 1,076,000 / 1,056,000 नामांकित / *20,000* गायब

Ie 56-7: 849,000 / *88,000* / *166,000* / 1,103,000 / 1,050,000 नामांकित / *53,000* गायब

26,000 पेरीनोस

95,000 छोड़ गए
109,000 अनुत्तीर्ण
817,000 प्रोन्नत

86,000 छोड़ गए
135,000 अनुत्तीर्ण
835,000 प्रोन्नत

113,000 छोड़ गए
128,000 अनुत्तीर्ण
809,000 प्रोन्नत

IVe 57-8: 817,000 / *73,000* / *80,000* / 970,000 / *928,000* नामांकित / *42,000* गायब

IIIe 57-8: 835,000 / 95,000 / *109,000* / 1,039,000 / 1,003,000 नामांकित / *36,000* गायब

IIe 57-8: 809,000 / *86,000* / *135,000* / 1,030,000 / 1,006,000 नामांकित / *24,000* गायब

42,000 छोड़ गए
40,000 अनुत्तीर्ण
846,000 प्रोन्नत

64,000 छोड़ गए
104,000 अनुत्तीर्ण
835,000 प्रोन्नत हुए

64,000 छोड़ गए
102,000 अनुत्तीर्ण
840,000 प्रोन्नत

Ve 58-9: 846,000 / *29,000* / *33,000* / 908,000 / 870,000 नामांकित / *38,000* गायब

IVe 58-9: 835,000 / 42,000 / *40,000* / 917,000 / 888,000 नामांकित / *29,000* गायब

IIIe58-9: 840,000 / *64,000* / *104,000* / 1,008,000 / 984,000 नामांकित / *24,000* गायब

सारणी 'ब' क्रमशः

* सारणी 'ब' की टिप्पणी पृ. 32 पर दी गई है।

सारणी 'स'

1950 में पैदा हुए बच्चे (अनुवर्ती कार्रवाई)

वर्ग	तारीख	कक्षा की बनावट: नामांकित	कक्षा की बनावट: दुहराने वाले	परिणाम: छोड़ जाने वाले	परिणाम: अनुत्तीर्ण	परिणाम: प्रोन्नत होने वाले	गायब: साल	गायब: स्कूल से
I प्राथमिक कक्षा	अक्टूबर 1956 जून 1957	1,050,000	201,000	147,000	128,000	809,000	275,000	121,000
II प्राथमिक कक्षा	अक्टूबर 1957 जून 1958	1,006,000	197,000	64,000	102,000	840,000	166,000	8,000
III प्राथमिक कक्षा	अक्टूबर 1958 जून 1959	984,000	144,000	60,000	48,000	386,000	98,000	16,000
IV प्राथमिक कक्षा	अक्टूबर 1959 जून 1960	923,000	37,000	40,000	69,000	814,000	109,000	19,000
V प्राथमिक कक्षा	अक्टूबर 1960 जून 1961	861,000	47,000	37,000	98,000	726,000	316,000	194,000
I इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1961 जून 1962	664,000	119,000	48,000	183,000	433,000	231,000	132,000
II इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1962 जून 1963	516,000	83,000	14,000	106,000	396,000	120,000	41,000
III इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1963 जून 1964	438,000	42,000	—	59,000	415,000		
योग	अक्टूबर 1956 जून 1964						1,315,000	531,000

सारणी 'स' क्रमशः...

वर्ष	तारीख	कक्षा की बनावट		परिणाम			गायब	
		नामांकित	दुहराने वाले	छोड़ जाने वाले	अनुत्तीर्ण	प्रोन्नत होने वाले	साल	स्कूल से
I प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1957	958,000	154,000					
	जून 1958			105,000	76,000	810,000		
II प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1958	968,000	158,000				181,000	88,000
	जून 1959			68,000	107,000	793,000		
III प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1959	875,000	82,000				175,000	42,000
	जून 1960			46,000	67,000	762,000		
IV प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1960	852,000	90,000				113,000	27,000
	जून 1961			45,000	82,000	725,000		
V प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1961	847,000	122,000				127,000	10,000
	जून 1962			63,000	89,000	695,000		
I इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1962	668,000	99,000				278,000	181,000
	जून 1963			38,000	178,000	452,000		
II इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1963	531,000	79,000				216,000	70,000
	जून 1964			22,000	101,000	408,000		
III इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1964	459,000	51,000				123,000	47,000
	जून 1965				*42,000*	*436,000*		
योग	अक्टूबर 1957							
	जून 1966						1,213,000	465,000

सारणी 'स' क्रमशः....

वर्ष	तारीख	कक्षा की बनावट		परिणाम			गायब	
		नामांकित	दुहराने वाले	छोड़ जाने वाले	अनुत्तीर्ण	प्रोन्नत होने वाले	साल	स्कूल से
I प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1958	897,000	93,000					
	जून 1959			91,000	75,000	762,000		
II प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1959	895,000	133,000				166,000	107,00
	जून 1960			36,000	104,000	755,000		
III प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1960	841,000	86,000				140,000	
	जून 1961			38,000	81,000	722,000		
IV प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1961	839,000	117,000				199,000	12,000
	जून 1962			49,000	87,000	703,000		
V प्रारंभिक कक्षा	अक्टूबर 1962	800,000	97,000				136,000	32,000
	जून 1963			30,000	90,000	680,000		
I इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1963	716,000	146,000				230,000	142,000
	जून 1964			47,000	155,000	514,000		
II इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1964	590,000	76,000				202,000	90,000
	जून 1965			*13,000*	*111,000*	*466,000*		
III इंटरमीडिएट	अक्टूबर 1965	472,000	*18,000*				*124,000*	*61,000*
	जून 1966				*41,000*	*433,000*		
योग	अक्टूबर 1958							
	जून 1966						1,117,000	444,000

सारणी 'द'

प्रारंभिक कक्षा पहला साल

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31 32

दूसरा साल — पुन : उसी कक्षा में — पहला साल — काम पर जाने वाले

1 2 3 4 5 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 *6* — 27 28 29 30 — 31 32

तीसरा साल — दूसरा साल

2 3 4 5 7 8 9 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 *6* — 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1* 31 32

चौथा साल — तीसरा साल

4 5 7 8 9 10 11 12 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 *6* — *2* 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1 3* 31 32

पांचवां साल — चौथा साल

9 10 11 12 13 14 15 16 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 *6* — *2 4 5 8 20* 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1 3 7* 31 32

इंटरमीडिएट का पहला साल — पांचवां साल

14 15 16 17 18 19 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 *6* — *2 4 5 8 9* 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1 3 7 10 11 12 13* 16 17 31 32

दूसरा साल — पहला साल

18 19 20 21 22 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 *6* — *2 4 5 8 9 14 13* 14 15 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1 3 7 10 11 12 13 15 16 17* 16 17 31 32

तीसरा साल — दूसरा साल

21 22 23 24 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 *6* — *2 4 5 8 9 14 19* 12 13 14 15 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 — *1 3 7 10 11 12 13 15 16 17 18 20* 16 17 31 32

सारणी 'ई'

आयु	प्रारंभिक कक्षा					इंटरमीडिएट			(उच्चतर स्कूल)					योग
	1	2	3	4	5	1	2	3	1	2	3	4	5	
							वास्तविक संख्या							
5	14,191	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	14,191
6	713,404	45,718	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	759,122
7	106,699	613,889	47,282	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	767,870
8	29,099	161,345	538,985	43,209	–	–	–	–	–	–	–	–	–	773,448
9	12,231	65,547	171,881	517,438	43,030	–	–	–	–	–	–	–	–	810,127
10	4,886	26,569	75,355	199,689	454,737	42,791	–	–	–	–	–	–	–	804,027
11	2,532	12,833	35,528	102,577	209,748	325,123	35,850	–	–	–	–	–	–	724,191
12	1,144	5,052	14,675	43,069	97,775	182,580	205,408	30,237	382	–	–	–	–	580,322
13	525	1,871	5,534	15,157	40,162	82,715	130,350	153,945	23,453	382	–	–	–	454,094
14	143	397	1,039	2,432	6,497	18,083	44,784	74,265	69,923	15,499	248	–	–	233,310
15	–	–	–	–	–	4,932	15,266	38,476	49,398	54,307	12,918	242	–	175,539
16	–	–	–	–	–	1,849	4,722	15,444	29,348	43,719	44,261	13,062	162	152,567
17	–	–	–	–	–	986	1,474	5,267	13,398	26,951	31,993	35,730	10,572	126,371
18	–	–	–	–	–	552	562	1,747	5,602	12,978	19,802	27,124	25,666	94,033
19	–	–	–	–	–	547	281	841	2,779	6,500	11,305	19,376	21,556	63,188
20	–	–	–	–	–	380	163	578	1,157	2,511	4,974	10,237	14,137	34,137
21+	–	–	–	–	–	469	148	476	1,560	2,490	3,987	9,262	15,337	33,729

सारणी 'ई' क्रमशः...

प्रत्येक साल में छात्रों का प्रतिशत

आयु	प्रारंभिक कक्षा 1	2	3	4	5	इंटरमीडिएट कक्षा 1	2	3	उच्चतर स्कूल 1	2	3	4	5	योग
5	1.7	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	0.2
6	79.5	5.1	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	11.5
7	12.5	63.7	5.3	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	11.6
8	3.6	17.0	60.5	4.7	—	—	—	—	—	—	—	—	—	11.7
9	1.5	7.6	19.3	56.0	5.0	—	—	—	—	—	—	—	—	12.3
10	0.6	3.2	8.5	21.6	53.4	6.5	—	—	—	—	—	—	—	12.2
11	0.3	1.6	4.0	11.1	24.6	49.2	8.2	—	—	—	—	—	—	11.0
12	0.2	0.6	1.7	4.7	11.5	27.6	46.8	9.4	0.2	—	—	—	—	8.8
13	0.1	0.3	0.6	1.6	4.7	12.5	29.7	47.9	11.9	0.2	—	—	—	6.9
14	—	—	0.1	0.3	0.8	2.7	10.2	23.1	35.5	9.4	0.2	—	—	3.5
15	—	—	—	—	—	0.7	3.5	12.0	25.1	32.9	10.0	0.2	—	2.7
16	—	—	—	—	—	0.3	1.1	4.8	14.9	26.4	34.2	11.4	0.2	2.3
17	—	—	—	—	—	0.1	0.3	1.6	6.8	16.3	24.7	31.1	12.1	1.9
18	—	—	—	—	—	0.1	0.1	0.5	2.8	7.9	15.3	23.6	29.4	1.4
19	—	—	—	—	—	0.1	0.1	0.3	1.4	3.9	8.7	16.8	24.6	1.0
20	—	—	—	—	—	0.1	—	0.2	0.6	1.5	3.8	8.9	16.2	0.5
21	—	—	—	—	—	0.1	—	0.2	0.8	1.5	3.1	8.0	17.5	0.5

सारणी 'फ' पुरानों का वध

सारणी 'फ' (जारी)

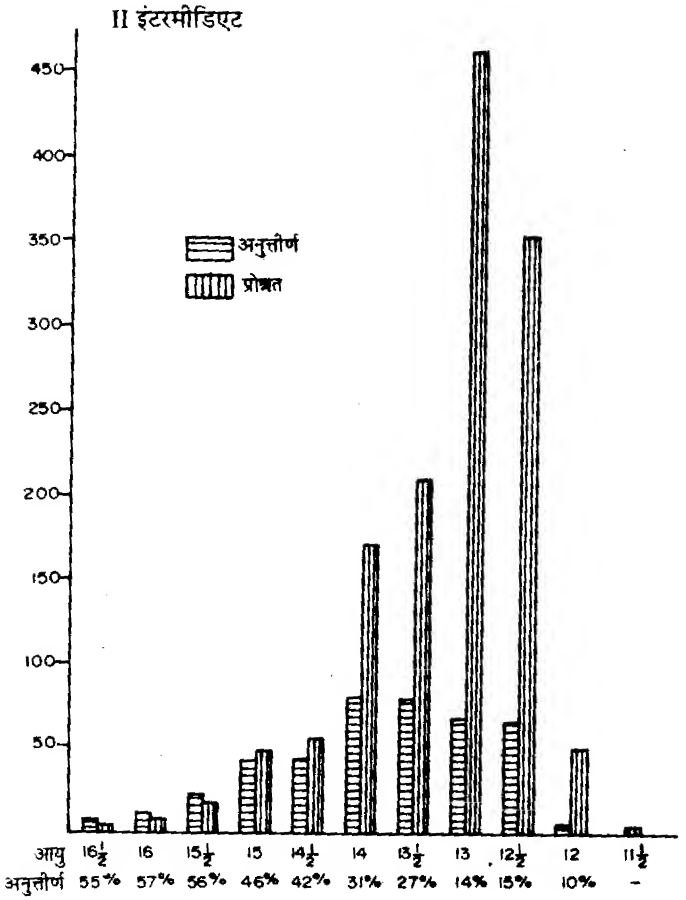
II इंटरमीडिएट
450
400
350
300
250
200
150
100
50
अनुत्तीर्ण
प्रोन्नत
आयु 16½ 16 15½ 15 14½ 14 13½ 13 12½ 12 11½
अनुत्तीर्ण 55% 57% 56% 46% 42% 31% 27% 14% 15% 10% –